शिवाजी विश्वविद्‌यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

सत्र–3 : पेपर–4

मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी काव्य

सत्र–4 : पेपर–6

आधुनिक हिंदी काव्य

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2025-26 से)

बी. ए. भाग–2 हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
द्वितीय संस्करण : 2025
बी. ए. भाग - 2 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 200

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर-416 004.

■

ISBN - 978 - 93 - 89345 - 85 - 8

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004 (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सल्लागार समिती ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू,
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २,
११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत

प्रभारी प्राचार्य, विलिंग्डन कॉलेज, सांगली (स्वायत्त)

सदस्य

- **प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ,
  सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव,
  जि. कोल्हापुर.
- **प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल,
  जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन
  कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर.
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जवळी,
  जि. सातारा.
- **प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा,
  जि. सोलापुर -४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी. के. जी. कन्या महाविद्यालय,
  जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर,
  जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली,
  ता. कोरेगाव, जि. सातारा.

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय की दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग 2 (ऐच्छिक) हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित स्वयं अध्ययन नियमित रूप से प्रवेश न ले पानेवाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता आधारभूत है तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचितों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। सन् 2007 से बी. ए. भाग 1 से लेकर एम.ए. 2 तक के छात्र स्वयं अध्ययन सामग्री से दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत लाभान्वित हुए हैं । उसी तरह अब बी. ए. 2 के छात्र इस पुनर्रचित पाठ्यक्रम की स्वयं अध्ययन सामग्री से लाभान्वित हो, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत स्रोत सामग्री सामूहिक प्रयास का ही फल है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत अभ्यास सामग्री उक्त छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

धन्यवाद!

– संपादक

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र–3	सत्र–4
★ **डॉ. गजानन चव्हाण** श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोडावत कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर	१	–
★ **डॉ. संग्राम शिंदे** आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, जि. सातारा	२	–
★ **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव** आर्टस अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, सातारा, जि. सातारा	३	–
★ **प्रो. डॉ. वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव** श्री. विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठवडगांव, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	४	–
★ **डॉ. बी. बी. राठोड** श्री. शहाजीराजे महाविद्यालय, खटाव, जि. सातारा	–	१
★ **अविनाश वसंतराव पाटील** न्यू कॉलेज, शिवाजी पेठ, कोल्हापुर	–	२
★ **डॉ. सुधाकर इंडी** श्रीमती अक्काताई रामगोंडा पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	–	३
★ **डॉ. संतोष माने** शिवराज कॉलेज ऑफ आर्टस अॅण्ड कॉमर्स अॅण्ड डी. एस. कदम सायन्स कॉलेज, गडहिंग्लज, ता. गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर	–	४

■ संपादक ■

प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
प्रभारी प्रचार्या तथा अध्यक्ष,
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली (स्वायत्त)
हिंदी अभ्यास मंडळ,
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर

डॉ. गजानन चव्हाण
श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोडावत कन्या
महाविद्यालय, जयसिंगपुर,
ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

अनुक्रम

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–3 पेपर–4 : मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी काव्य	
1.	**मध्यकालीन काव्य –** 1. कबीर के दोहे 2. नामदेव के पद (अभंगवाणी) 3. मीराबाई के पद	1
2.	4. 'बिहारी के दोहे' 5. 'रहीम के दोहे' 6. 'भूषण के पद'	27
3.	**आधुनिक कविता –** 7. द्रुत झरो – सुमित्रानंदन पंत 8. तीनों बंदर बापू के – नागार्जुन 9. औरत – चंद्रकांत देवताले	56
4.	10. वह अनजान आदमी – अभिमन्यु 11. 'सूरज पाना है' – परशुराम शुक्ल 12. 'उतनी दूर मन ब्याहना बाबा' – निर्मला पुतुल	79

सत्र–4 पेपर–6 : आधुनिक हिंदी काव्य

1.	नरेश मेहता का परिचय	106
2.	'संशय की एक रात' खंडकाव्य का कथानक	116
3.	'संशय की एक रात' : रस, भाषा शैली एवं उद्देश्य	132
४.	'संशय की एक रात' : खंडकाव्य की प्रासंगिकता, शीर्षक की सार्थकता चित्रित समस्याएँ।	144

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(1) इकाई में क्या दिया गया है।

(2) आपसे क्या अपेक्षित है।

(3) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई 1

मध्यकालीन काव्य

1. नामदेव के पद (अभंगवाणी)

अनुक्रमणिका

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

 1.3.1 संत नामदेव का जीवन परिचय

 1.3.2 संत नामदेव के पदों का परिचय

 1.3.3 संत नामदेव के पदों का भावार्थ

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:-

1. वारकरी संप्रदाय के संत नामदेव की विचारधारा से परिचित होंगे।
2. नामदेव के सगुण और निर्गुण संबंधी विचारों को जानेंगे।
3. नामदेव की भक्ति, नाम, रहस्यवाद, उपासना संबंधी विचारों से परिचित होंगे।
4. नामदेव ने हरि कीर्तन से सामाजिक एकता स्थापित करने के प्रयास से परिचित होंगे।
5. नामदेव के पद और अभंग से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :-

हिंदी भक्ति काव्य की निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तन का श्रेय कबीर को दिया जाता है, लेकिन कबीर से पहले उसका उन्मेष नामदेव की वाणी में हुआ था। कई परवर्ती संतों ने उन्हें आदर से स्मरण किया है। इसी कारण उनकी कुछ रचनाएं 'गुरू ग्रंथ साहिब' में संकलित हुई। निर्गुण -निराकार के साथ -साथ राम, कृष्ण और विठ्ठल (विष्णू) के अतिरिक्त नामदेव के कुछ अभंगों में शिव की भी प्रशंसा है। नामदेव की शिक्षा- दीक्षा नाम-मात्र की थी। वे बचपन से ही विठोबा के प्रति समर्पित हो चुके थे। जो कुछ भी ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया, वह ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, विसोबा खेचर आदि संतों के साहचर्य से प्राप्त किया होगा। नामदेव के लोक काव्य में लोक-जीवन में प्रचलित उपमान सहज ही प्रयुक्त हुए हैं। अपने समय के समाज के विविध विषयों के माध्यम सें उनके अभंगों में चित्रण हुआ है। उन्होंने उस समय के रूढीग्रस्त समाज को देखा था। वर्णाश्रम व्यवस्था के कारण जातियों में ऊच - नीच का भेद बढ गया था। यादवों के राजकाल में ब्राह्मण जाति उच्चतम मानी जाती थी और शेष जातियाँ उससे हीन समझी जाती थी। नामदेव स्वयं जाति के भेद-भाव का अनुभव भोग चुके थे। नामदेव के शिष्य चोखामेला चमार जाति के और हुसेन अन्वर खॉ मुसलमान जाति के थे। उन सभी के साथ नामदेव हरि कीर्तन करते थे। उस समय उसकी मधुर ध्वनि-तरंगों से समाज के ऊच - नीच कहे जानेवाले जनों के मस्तक डोलने लगते थे।

नामदेव ने कर्मकांड, अंधविश्वास, लोकभ्रम तप-तीर्थ, अश्वमेध-यज्ञ, दान आदि का विरोध किया। उन्होंने प्रत्येक मनुष्य और जड चेतन जीवों में परमात्मा का आवास मानकर सभी मनुष्यों को समान स्तर पर प्रतिष्ठित करके समानता का भाव दृढ किया है। संक्षेप में अपने पदों मे जाँति-पाति का निषेध, बाहयाडंबरों का निषेध करके हरि-कीर्तन के माध्यम से सामाजिक एकता का प्रयत्न और हृदय-शुध्दता का आग्रह किया है। अत: हम यह कह सकते हैं की नामदेव समाजवाद के प्रथम उद्घोषक संत थे।

1.3 विषय –विवरण

1.3.1 संत नामदेव का जीवन परिचय :

महाराष्ट्र के संत पंचायतन (ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास) में एक नामदेव केवल महाराष्ट्र के ही नहीं संपूर्ण भारत में प्रमुख संतों में एक है। नामदेव के भक्ति गंगा में महाराष्ट्र भक्तों का ही नहीं उत्तर भारत के भक्तों में भी उनका प्रभाव रहा है। नामदेव का जन्म महाराष्ट्र के परभणी नजदीक नरसी बामणी में सन् 1270 ई. में दर्जी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट और माता का नाम गोपाई था। यें दोनों ईश्वर के परम भक्त थे और पंढरपुर की वारी (तीर्थयात्रा) करते थे। उनकी एक बहेन थी जिसका नाम आऊबाई था। नामदेव का विवाह 9 वर्षा की अवस्था में राजाबाई के साथ हुआ। वे चार पुत्रों और एक पुत्री के पिता बने किंतु परिवार का मोह उन्हे बांध न सका। परिवार के भरण –पोषण के लिए धन की आवश्यकता थी पर व्यवसाय में उनका मन न लगता था। घर में दरिद्र्यता और क्लेश व्याप्त रहता था। नामदेव इन सबसे बेखबर रहकर ही भगवद्भक्ति में लीन रहते थे। नामदेव के पिता विठ्ठल भक्त थे। प्रतिवर्ष वे पंढरपुर की वारी करते थे। अतएवं बचपन से ही नामदेव के मन में विठ्ठल भक्ति संचरित हो गयी थी। किवदंती है की जब वे 8 वर्ष की आयु में माँ ने विठ्ठल के मंदिर में दूध का नैवेद्य चढाने उन्हे भेजा था। तब मूर्ति में आग्रह मानकर उनके कटोरे का दूध पी लिया। इस चमत्कारिक घटना का उल्लेख उनके एक आत्मकथात्मक पद में है–

दूध पी आइ भगतु भरि गइआ

नामे हरि का दरसुन भइआ।।

अंत नामदेव का मन गृहस्थी में नहीं लगा वे पंढरपुर में बसकर ही विठ्ठल की सेवा करने लगे। वही ज्ञानेश्वर तथा उनके भाई– बहनों से उनकी भेट हुई। नामदेव के गुरू विसोबा खेचर थे। कहा जाता है की उनसे दीक्षा लेने के प्रेरणा ज्ञानदेव और मुक्ताबाई से ही मिली थी। नामदेव अपने अभंगों (पदों) में अपने गुरू की महिमा का गान किया है। ज्ञानदेव के देहावसान के बाद पंढरपुर में रहना उनके लिए कठिन हो गया था। वे वहाँ से गोकुल मथुरा और वृंदावन आये। वृंदावन में उन्होंने विष्णुस्वामी को अपना शिष्य बनाया, जिन्होंने विष्णु स्वामी संप्रदाय का प्रवर्तन किया। फिर वे पंजाब पहुंचे और घुमान नामक स्थान पर निवास किया। वहा बहुत समय तक कीर्तन –भजन से जनता में भक्ति का संचार करते रहे। उन्होंने हिंदी में पदों की रचना की, जिसका गुरूग्रंथ साहिब में करीबन 61 पद संकलित है। घूमान में आज भी उनका बडा स्मारक और मंदिर है। उनके प्रमुख शिष्यों में विष्णु स्वामी, बहिरदास, लघां खत्री, जनाबाई, चोखामेला, केशव कलाधारी, शेख मुहम्मद, परिखा भागवत, त्रिलोचन आदि रहे। जीवन के अंतिम चरण में नामदेव की इच्छा हुई कि वे पंढरपुर के विठ्ठल के चरणों में देह त्यागे। वे पंढरपुर लौट आए सन् 1350 ई. में विठ्ठल मंदिर के महाद्वार पर समाधी ले ली।

संत नामदेव का काव्य परिचय :

संत तरह नामदेव की रचनाओं में भी अद्वैत के साथ साथ ज्ञान, भक्ति और योग का समन्वय है। उनकी रचनाएँ मराठी में और हिंदी में भी है। 'सकल सन्त गाथा' में नामदेव के नाम पर 2500 अभंग मिलते हैं। इनके अभंगवाणी निम्न वर्गो में बाट सकते है।

- बाल क्रीडा
- श्री कृष्ण लीला
- पंढरी महात्म्य
- नाम महात्म्य
- गुरू महिमा
- संत महिमा
- कलिकाल का प्रभाव
- ज्ञानदेव और उनके भाई बहनों के समाधी के बाद अभंग
- गुरू ग्रंथ साहब में नामदेव के 61 पद
- नामदेव का दार्शनिक पक्ष
    - ज्ञान
    - माया
    - भक्ति
    - उपासना
    - रहस्यात्मक प्रवृत्ति
- सामाजिक सुधार
- भावपक्ष
- भाषा
- नामदेव की देन

नामदेव कुल परम्परा से वैष्णव थे, परंतु गुरू परम्परा से शैव थे। गुरू विशुध्द ज्ञानमार्गी थे फिर भी उन्होंने विठ्ठल भक्ति का परित्याग नहीं किया। उन्होंने विठ्ठल को सर्वत्र देखा। एक हिंदी पद में वे कहते हैं–

इभै विठ्ठल, उभै विठ्ठल, विठ्ठल बिन संसार नहीं।

निर्गुण भावना के पोषक होते हुए भी उन्होंने पंढरपुर के विठोबा की आराधना का परित्याग नहीं किया। क्योंकि जब विठ्ठल सर्वत्र है तो वह प्रतिमा में भी है। इतनी व्यापक दृष्टि नामदेव की थी।

1.3.2 संत नामदेव के पदों का परिचय:-

नामदेव के पदों में निर्गुण - सगुण दोनों के भक्तिपरक पद मिलते हैं। नामदेव के हिंदी पदों में निर्गुण भाव का चित्रण है, परंतु नामदेव को सख्य भक्ति अत्यंत प्रिय है। पाठयक्रम के लिए निर्धारित नाम महिमा, रहस्यात्मक प्रवृत्ति, ज्ञान का प्राधान्य, प्रेम की व्याकुलता, भक्ति आदि उनके पदों में वर्णनातित है। अब हम नामदेव के पदों का भावार्थ तथा आशय से परिचित होंगे।

1.3.3 संत नामदेव के पदों का भावार्थ:-

1. नाम महिमा -

हरि नाम हीरा हरि नाम हीरा।
हरि नाम लेत मिटै सब पीरा।। टेक।।
हरि नाम जाति हरि नाम पांति।
हरि नाम सफल जीवन मैं क्रांति।।१।।

नामदेव ने सर्वसाधारण समाज के लिए सहज मार्ग से समझाया है, वह है नामस्मरण। सतत नामस्मरण से मन परमात्मा से एकरूप का अनुभव करने लगता है। ईश्वर का नाम लेने से जीवन की सार्थकता हो जाती है। सभी पीडा से मुक्ति मिलती है। हरि के स्मरण से जाति और कुल की हीनता का विनाश हो जाता है। सच पूछिऐं तो जीवन में बदलाव या परिवर्तन आ जाता है। इतना ही नहीं सकल (संपूर्ण) जीवन को सुख की राशि नाम ही है जिससे यम यातना कम हो जाती है। सारी सृष्टि के दुख और दर्द की दवा नामस्मरण है। इसका नामदेव अपने पद में जन्म-मृत्यु से मुक्त होने की दवा को नामदवा ही मानते हैं।

2. रहस्यात्मक प्रवृत्ति-

अदबुद कथ्या न जाई।
चींटी के नेत्र कैसे गजेंद्र समाई ।। टेक।।
कोई बोले नेरे कोई बोले दूरि।
जल की मछली कैसे चढे षजूरि।।१।।

प्रस्तुत पद मे रहस्यात्मक प्रवृत्ति मिलती हैं। नामदेव का रहस्यवाद सर्वात्मवाद कहा जा सकता है, जिसमें जड चेतन और समस्त ब्रम्हांड में एक ही परमतत्त्व की स्थिति को वे स्वीकारते हैं। नामदेव कहते हैं - एक अनोखी

आश्चर्यकारक और विशेष बात देखी है, चींटी के आँखों में बहुत बडा हाथी समाया गया है। चींटी और हाथी आत्मा और परमात्मा की तुलना की है। कोई कहता है परमात्मा समीप है, तो कोई कहता है की परमात्मा दूर है। उनके लिए जिस प्रकार मछली पेड पर नहीं चढ सकती। उसी तरह परमात्मा या ईश्वर का पाना कठिण लगता हे। इस ईश्वर प्राप्ति के लिए इंद्रियों की बाधाएं आती हैं। तो कोई कहता है ईश्वर को पाने के लिए मुक्ति की साधना करनी चाहिए। शुद्ध रूप से सहज समाधि करने ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। तो कोई बोलते हैं की प्राचीन वेदों का पठन करने से ईश्वर मिल सकता है, तो सद्‌गुरू के कहे मार्ग से पीडा या दुख से मुक्ति मिल सकती है। अंत में नामदेव कहते हैं परमात्मा बिना रूप और वेशभूषा का है, जो निर्गुण है, उसे पाना जरूरी है।

3. ज्ञान की अनुभूति–

झिलिमिल झिलिमिल झिलिमिल तारा।
सो झिलिमिल लोक पियारा।।टेक।।
रहै अकास पडै नही दिष्टी।
पकड्या जाइ न आवै मुष्टी।।१।।

नामदेव ने प्रस्तुत पद में जिस तरह आकाश के तारे चमकते हैं, आते जाते दिखते हैं, उसी तरह तीन लोक में स्वर्ग, मृत्यु और पाताल में श्रेष्ठ ईश्वर है, जो हमे चाँदणी जैसी अस्थिरता दिखाई देती है। यह परम पिता परमात्मा आकाश जैसा है, सभी जगह व्याप्त है, लेकिन हमें यह निर्विकार और अनंत होकर भी नहीं दिख रहा है। इसे हम प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। जिस तरह हम स्वयं ही दीया है, अपने अंदर की ज्योति को जलते दिखाना चाहिए। नामदेव कहते हैं, बिन बाती का दीया जल रहा है। अपने अंदर परमात्मा का रूप, आत्मा में निरंतर ज्ञान की ज्योति प्रकाशमान है। अंत में नामदेव कहते हैं, मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर का ज्ञान आवश्यक है। यह अनुप्रास अलंकार है, जिसमें परमात्मा के ज्ञान की अनुभूति होने की बात कही है।

1.4 स्वय अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. सगुण और निर्गुण अभेद स्थापित करने वाले कवि .... है।

   अ. रामदास ब. कबीर क. मीराबाई ड. नामदेव

2. नामदेव के 'गुरूग्रंथसाहब' में .... पद संग्रहित है।

   अ. 61 ब. 50 क. 10 ड. 80

3. नामदेव के गुरू का नाम.............. है।

अ. गोरोबा कुंभार ब. विसोबा खेचर क. कबीर ड. नानक

4. नामदेव का जन्म............. गांव में हुआ।

अ. मथुरा ब. औंढा नागनाथ क. नरसी-बामणी ड. वृंदावन

5. नामदेव का पंजाब के .... में आज भी बडा स्मारक और मंदिर है।

अ. कराड ब. बार्शी क. परभणी ड. घूमान

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

हरि-ईश्वर, हीरा-नर रत्न, पीरा-पीडा जाती-कुल सकल, क्रांति-बदलाव, सुषन-सुखद, काटै-कटौती, जम-यम, भुवन-सृष्टि, ततसारा-तप्तशाला, उतरै पारा-कष्ट कम होना, अद्‌भूद-अनोखा, अचंभा- आश्चर्य कथ्या-विशेष, गजिंद्र-बडा हाथी, नैरे समीप दूरि-दूरत्व षजूरी-पेड, इंद्री-इंद्रिये, मुक्ता-मुक्ती, चीन्हे-शुध्द रूप, मुगधा-मंत्रमुग्ध, बेद-वेद, सुमृत-पुजा करना, कथीया-कथनीय पद-पैर, निरवाना-मुक्ती पाना, परम तत-परमतत्त्व, रूप-सुरत रेष-बरण-वेशभूषा, झिलमिल-तारों का झिलमिल (रोशनी) करना, तिहू लोक-(स्वर्ग, मृत्यु और पाताल), पियारा-प्रिय, अकास-आकाश, मुष्टी-मुक्का (मुठ्ठी), दीपक-ज्ञान की ज्योति, पैष-देखो, बिन बाती-कभी न घटने वाली बाती (बत्ती), सरूप-समान, भणत-कहते है, अमर पद-मोक्ष (मुक्ति), परस्था-त्याग, पिंडभया-शरीर समान, तत-वही, दरस्था-दृश्य

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. नामदेव 2. 61 3. विसोबा खेचर 4. नरसी बामणी 5. घूमान

1.7 सारांश :

1. संत नामदेव वारकरी संप्रदाय के प्रमुख कवि माने जाते हैं।
2. सगुण साकार विठ्ठल में ही वे निर्गुण निराकार ब्रह्म के दर्शन करते रहे।
3. प्रपंच और परमार्थ का सुंदर समन्वय नामदेव ने किया है।
4. समाज की सभी जातियों में एकता का भाव पैदा करने का श्रेय नामदेव को दिया जाता है।
5. नामदेव को अभंग छंद को लोकप्रिय बनाने का श्रेय जाता है। साथ हिंदी गीत शैली का प्रवर्तन किया।
6. नामदेव ने कीर्तन का प्रचलन किया। वारकरी कीर्तन में एक अभंग को लेकर उसका विवेचन किया जाता है। इस कीर्तन पद्धति से लोक संगठन साबित होता है और भक्ति का प्रचार प्रभावी ढंग से किया है।

7. महाराष्ट्र के संत पंचायतन (ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, रामदास और तुकाराम) में एक नामदेव केवल महाराष्ट्र के नहीं संपूर्ण भारत के प्रमुख संतों में एक है।
8. हिंदी कीर्तन के माध्यम से सामाजिक एकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। इसलिए यह कह सकते है नामदेव समाजवाद के प्रथम उद्‌बोधक संत है।

1.8 स्वाध्याय:

अ. लघुत्तरी प्रश्न:

1. संत नामदेव का जीवन परिचय किजिए।
2. संत नामदेव के कृतित्व को लिखिए।
3. संत नामदेव पदों में से रहस्यात्मकता लिखिए।
4. संत नामदेव की ज्ञान संबंधी विचारों को लिखिए।
5. संत नामदेव नाम महिमा पर प्रकाश डालिए।

आ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. नामदेव ने पदों के माध्यम से नाम महिमा, रहस्यात्मकता और परमात्मा का ज्ञान संबंधी विचारों को कैसे स्पष्ट किया है?
2. प्रस्तुत पदो ंके आधार पर नामदेव के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. नामदेव के पदों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. नामदेव पाठ्‌यक्रमों में संकलित हिंदी पदों मराठी में अनुवाद कीजिए।
2. नामदेव, ज्ञानदेव, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, मुक्ताबाई और विसोबा खेचर आदि संतों के साथ भक्ति पदों की चर्चा लिखने का प्रयास कीजिए।
3. नामदेव ने महाराष्ट्र के बाहर राजस्थान, पंजाब और वृंदावन में हिंदी पदों का संकल्प कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मराठी संतों की हिंदी वाणी-आनन्द प्रकाश दीक्षित - पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. हिंदी साहित्य ज्ञानकोश -प्रधान संपादक, शंभुनाथ - भारतीय भाषा परिषद- कोलकाता

2. कबीर के दोहे

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 कबीर का जीवन परिचय

1.3.2 कबीर के दोहों का परिचय

1.3.3 कबीर के दोहों का भावार्थ

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:-

1. निर्गुण ज्ञानश्रयी कवि कबीर की विचारधारा से परिचित होंगे।
2. कबीर के सद्गुरू संबंधी विचारों को जान सकेंगे।

3. कबीर के ईश्वर, जीव, जगत्, माया संबंधी विचारों की जानकारी पा सकेंगे।

4. कबीर के समाजसुधारक रूप में परिचित होंगे।

5. हिंदी के प्रथम रहस्यवादी कवि कबीर से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :

भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक के रूप में कबीर जाने जाते हैं। कबीर दास के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित है। उनके जन्म, मृत्यु, निवास स्थान, वंश और नाम तक के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। विद्वानों के मतानुसार कबीर एक विधवा ब्राह्मणी की कोख से पैदा हुए थे। उन्होंने कबीर को लोकलाजवश काशी के लहरतारा नामक तालाब के पास छोड दिया था। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने इनका लालन-पालन किया। कबीर अपने को रामानंद का शिष्य मानते थे उन्होंने ने कहा है। काशी में हम प्रकट भये, रामानंद चेतायें। नाथ सिद्धों के धार्मिक दृष्टिकोन के प्रति अनुरक्त, मुस्लिम संतों के संपर्क में आनेवाले कबीर की धर्म भावना अत्यंत व्यापक थे। अत ङ्गउन्होनें दोनों धर्मों की दुर्लबताओं की निंदा की और मानवशास्त्र के लिए ग्राहय धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शो की स्थापना की।फ उन्होंने स्वयं को अनपढ. कहा है।

''मासि कागद छूओ नहीं कलम गही नंहि हाथ।''

कबीर अशिक्षित होकर भी महान ज्ञानी था। उनके पास ज्ञान के दो आधार थे। सत्संग और पर्यटन। वे महान साधक थे। अपने युग के सभी दार्शनिक सिद्धांतों का उन्हे गहरा ज्ञान था। वे क्रांतिकारी विचारक और मानवतावादी समाजसुधारक थे।

1.3 विषय -विवरण:

1.3.1 कबीर का जीवन परिचय:

संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपनी पहचान रखनेवाले कबीर बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी थे। कबीर एक साथ संत, भक्त, कवि, साधक, दार्शनिक, समाज सुधारक, आलोचक, व्यंगकार, मस्तमौला, फक्कड, अंत्यज, दलितों के नायक, सामुदायिक एकता के सूत्रधारा, धर्मसमावेशक और ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते रहें। उनके व्यक्तित्त्व का प्रभाव आज भी भारतीय जनमानस को प्रेरणापद रहा है।

उनका जीवन और साहित्य का अध्ययन आज भी हमें नई प्रेरणा और उर्जा देता है। हिंदी साहित्य के प्राचीन विद्वानो के जीवनवृत्त संबंधी प्रामाणिक प्रमाणों के अभाव के समान ही कबीर की विश्वसार्हता प्रामाणिक जीवनी

उपलब्ध नहीं है। कबीर का साहित्य और उनके समकालीन संतों और भक्तों के साहित्य से उपलब्ध अल्प जानकारी को स्वीकार कर हमें संतुष्ठ होना पडता है। एक किवन्दती के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उसने अपने नवजात शिशु को लोकलज्जा के कारण काशी के लहरतारा तालाब के किनारे फेंक दिया था। संयोगवश वहाँ से गुजरने वाले नीरू नीमा नामक एक मुसलमान जुलाहे दम्पति ने उसे उठाकर परवरिश की। कबीर गरीब और दलित थे। वे पढें लिखें नहीं थे परंतु बहुश्रुत ज्ञानी थे। उन्हें श्रृती और शास्त्र का परम्परागत ज्ञान था। सत्संग और भक्ति उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वे करघे पर कपडा बुनते समय निर्गुण ईश्वर की भक्ति के गीत गाते थे।

कबीर का जन्म सन् 1398 ई. में काशी में हुआ था। कबीर की पत्नी का नाम लोई था। उन्हे कमाल और कमाली नामक बेटा और बेटी थी। उन्होनें पारिवारिक जीवन को स्वीकार करते हुए भक्ति करने का संदेश दिया था। उन्होंने रामानंद से दीक्षा प्राप्त की थी। कबीर साधु-संतों की संगति में काशी और मगहर के आसपास रहे। कहा जाता है कि मगहर मे मृत्यु आने पर नरक मिलता है, लेकिन कबीर ने आत्मविश्वास के साथ इस अंधविश्वास को तोडने के लिए सन् 1518 ई. में मगहर में शरीर त्याग करना पसंद किया। कबीर अनपढ थे। समस्त संसार उनकी पाठशाला थी। कबीर ने आँखिन देखों पर भरोसा था।

कबीर का काव्य परिचय :

कबीरदास के जीवन के समान ही उनकी रचनाओं के संबंध में भी विद्वानों में मतभिन्नता थी। उनकी प्रामाणिक कृतियों की सूचि बनाना कठिण काम था। कबीर अनपढ होने के कारण उनके शिष्यों द्‌वारा तथा लोककंठ द्वारा उनकी वाणी का संरक्षण किया है। मिश्रबंधु उनका 75 रचनाओं का उल्लेख करते है। नागरी प्रचारिणी के सभा ने कबीर की रचनाओं 130 ग्रंथों की स्वीकार किया है। कबीर रचनाओं के संबंध में विवाद है लेकिन ''बीज'' उनकी प्रामाणिक रचना मानी जाती है। बीजक को साखी, रमैनी पदावली और में विभाजित किया गया है। कबीर की भाषा ''सधुक्कडी भाषा'' रही है। उस समय के लोगों में प्रचलित भाषा में उन्होंनें अपने काव्य के माध्यम से विचार प्रस्तुत किये है। कबीर के साहित्य की विशेषताएँ निम्ननुसार है।-

- निर्गुण - निराकार ईश्वर की उपासना
- सद्‌गुरू की महिमा
- मूर्तिपूजा का विरोध
- धार्मिक पाखंड का खंडन

- सत्संग का महत्त्व
- अवतारवाद का विरोध
- बाह्याडंबरों और कर्मकांड का खंडन
- हिंसा का विरोध
- सदाचार का पर बल
- कंचन और कामिनी का विरोध
- जातिवाद और वर्णाश्रम का विरोध
- सत्य के उपासक
- राम –रहिम की एकता पर बल
- सांप्रदायिकता
- कथनी और करनी में अंतर नहीं
- सत्य के उपासक
- काव्य साध्य न होकर साधन
- खिचडी या सधुक्कडी भाषा

1.3.2 कबीर के दाहों का परिचयः–

कबीर के साखी में से प्रस्तुत दोहे लिए गए है। गुरू ने दिए हुए नाम की महत्ता का जीवन मे आवश्यक मानते है। कबीर ने अपने पदों में सद्गुरू को अनन्य साधारण महत्त्व दिया है। कबीर ने मनुष्य के जन्म में ईश्वर से मिलने की व्याकुलता के बारे में बोध किया है। इस व्याकुल परमात्मा की प्राप्ति की बात कही है। जब परमात्मा की प्राप्ति होती है तो अपने आप माया का अंत होकर मुक्ति मिलने की बात कही है। कबीर ने मनुष्य को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वाला व्यक्ति शान्त होकर सन्मार्ग पर चलता है। कबीर ने प्रेम भाव को केंद्र रखकर प्रेम के भाषा की बात कही। साथ ही ईश्वर की प्राप्ति होने से सुख और शांति संभव हो सकती है। यह केवल मनुष्य जन्म में ही मिलने की बात कही है। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करता है। कबीर कहते है निंदक के द्वारा की जानेवाली निंदासे मनुष्य अपने दोषों के प्रति सचेत रहता है और सुधार जिसे के लिए प्रेरित करते है।

1.3.3 कबीर के दोहों का भावार्थ :

1. सद्गुरू महिमा:-

सतगुरू की महिमा अनंत किया उपगार।

लोचन अनंत उघाडिया, अनंत दिखावणहार।

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास ने अपने ऊपर गुरू द्वारा किए गए उपकार को बताया है। वे कहते है कि किस तरह मेरे गुरू ने मेरी आंखों को खोलकर सत्य को दर्शन करवाया है। सदगुरू की महिमा मुझपर अनंत (असीमित) है। उसने अनंत उपकार किये है। कबीर कहते है माया के कारण मेरी आँखें बंद पडी थी, सत्य मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। गुरू ने मेरे आँखें खोलकर अनंत संतों का दर्शन करा दिये। कहने का तात्पर्य यह है की सदगुरू ने हमारी अज्ञनता भरी आँखों को खोलकर ईश्वर का ज्ञान (सत्यता) से मेल करवाया है। इसका श्रेय सद्गुरू को जाता है। गुरू का गौरव असीम है।

2. नाम महिमा -

लूट सके तो लूटियो राम नाम है लूटि।

पीछे ही पछिताहुगे , यह तन जैहै छूटि।

कबीर ने प्रस्तुत दोहे में नामस्मरण को महत्त्व दिया है। राम (ईश्वर) नाम के लाभ से जीवन में सफलता होनें की बात कही है। कबीर कहते है राम नाम की लूट मची है। चारों तरफ राम नाम बिखरा हुआ है। यह नाम अधिक से अधिक संग्रहीत करना चाहिए। जिस तरह अपने खातें में पूँजी जमा हो जाएगी तो अंत में हमारा जीवन सुखदायक हो सकता है। एक दिन जब मनुष्य का देह नहीं रह जाएगा तब पछताने के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। इसलिए कबीर ने मनुष्य के जीवन में राम नाम प्राप्त करने की बात कही हैं। कबीर ने साधना पद्धतियों में से नामस्मरण को ही अधिक महत्त्व दिया है।

3. ईश्वर प्राप्ति की व्याकुलता-

आषडियाँ झाँई पडी, पंथ निहारि-निहारि

जीभडियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि।

कबीर ने इस दोहे में जीवात्मा के ईश्वर से मिलने की व्याकुलता का वर्णन किया है। प्रियतम का रास्ता देखते देखते आत्मा रूपी विरह से आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा है। उसकी दृष्टि मंद - मंद पड गई है। प्रिय राम की पुकार लगाते -लगाते जीवात्मा की जीभ में छाले पड गए है। व्याकुल जीवात्मा जो ईश्वर से मिलने के विरह को अग्नि में तडप रही है। उसे अपने तन की भी चिंता नहीं रहती है। इस दोहें में निहरी-निहरी और

पुकारी–पुकारी शब्दों पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का उपयोग हुआ है। इस दोहे में सधुक्कडी भाषा का सुंदर उपयोग हुआ है।

4. ब्रह्मज्ञान –

पाँनी ही ते हिम भया, हिम है गया बिलाइ।

जो कुछ था सोई भया, कछु कह्या न जाइ।।

कबीर कहते है ब्रह्म ही जगत् की एक मात्र सत्ता है। इसके अतिरिक्त संसार में और कुछ नहीं है। जो कुछ है ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही सब में व्याप्त होता है और फिर उसी, में सब लीन हो जाते है। प्रस्तुत पदों में हिम/बर्फ का निर्माण पानी से ही होता है और बर्फ पुन: पिघल कर पानी में तब्दील होता है। जिस रूप में था वह उसी रूप में पुन: लौट चुका है। उसीतरह आत्मा परमात्मा का अंश होता है। वही फिर पूर्ण ब्रह्म मे मिल जाता है। इसमें आत्मा और परमात्मा दोनों में अंतर केवल इतना सा है की दोनों के नाम अलग–अलग है। जैसे बर्फ और पानी, पानी की ही एक अवस्था बर्फ होती है। वैसे ही परमात्मा की आत्मा ही अवस्था है। अंत आत्मा को मूलस्वरूप में पुन: लौट जाना है। इसलिए परमात्मा का अंश होने के कारण परमात्मा का वास आत्मा में ही बताया गया है।

5. माया का वर्णन–

माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया सरी।

आसा त्रिस्णाँ ना मुई, यों कहि गया कबीर।।

कबीर ने इस साखी के माध्यम से जीवात्मा को संदेश देते है की वह माया के भ्रम को समझे और इसके फांस से दूर रहकर ईश्वर के नाम की सुमिरण करनी चाहिए। नामस्मरण जीवन मुक्ति का आधार है। कबीर दास कहते है कि अवागमन में पडे नर को ज्ञात है की परमात्मा की प्राप्ति के बिना माया मरती है न मन केवल शरीर मिटता है आशा तृष्णा नहीं मरती। इसतरह माया का कभी अंत नहीं होता, माया सदा बनी रहती है, यह मानव देह ही नश्वर है जो पैदा होती है और समाप्त हो जाती है। माया सदा बनी रहती है और वह नए–नए शिकार ढूंढती रहती है। ऐसी ही आशा और तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती है। अत: माया का पीछा छोडकर सन्मार्ग पर चलते हुए ईश्वर के नाम का सुमिरण करना ही मुक्ति का आधार है।

6. वाणी का महत्त्व –

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोए।

औरन को सीतल करै, आपु हूँ सीतल होय।

इस दोहे के माध्यम से कबीर दास कहना चाहते है की मनुष्य को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वाले व्यक्ति का गुस्सा कम हो जाए तथा वह मन में शीतलता का अनुभव करें। ऐसा करने से ना सिर्फ सुनने वाले व्यक्ति का मन शीतल होगा बल्कि आपका मन भी शीतल होगा और आपको मन की शांति और शीतलता प्राप्त होगी। इसी तरह कबीर कहते है मन का अहंकार किनारे रखकर ऐसे वचन बोलने की बात कही जिससे आपका मन शांत और शीतल बने और दूसरों को भी सुख मिले। जीवन में मीठी वाणी का प्रयोग झगडों को कम कर सकता है तथा मनुष्यता को नया आयाम दिया जा सकता है।

7. प्रेम भावना–

प्रेम न खेती नीपजे, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ।।

इस दोहें के माध्यम से कबीर कहते है प्रेम खेत में नहीं उपजता, प्रेम बाजार में भी नहीं बिकता। चाहे कोई राजा हो या साधारण प्रजा, यदि प्यार पाना चाहते हैं तो वह आत्म बलिदान से ही मिलेगा। त्याग और समर्पण के बिना प्रेम को नहीं पाया जा सकता। प्रेम गहन सघन भावना है कोई खरीदी अथवा बेची जानेवाली वस्तु नहीं है। जब तक में है तब तक प्रेम नहीं है। प्रेम संसारिक और भैतिक वस्तु नहीं है जिसे हम उपजा (उगा) ले ओर किसी से खरीद ले ले। यह तो यह तो एहसास की बात है। जिसको प्रेम चाहिए उसे अपना क्रोध, इच्छा, भय को त्यागना चाहिए। कबीर के दोहे लोगों का सकारात्मक मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते है।

8. ईश्वर की प्राप्ति–

कबीर सब सुख राम है, और दुःखाँ की रासि।
सुर, नर, मुनियर, असुर सब, पडे काल की पासि।।

कबीर कहते है की केवल प्रभु ही समस्त सुख देने वाला है। बाकी सारा संसार अनेक दुखों का भंडार है। यहां पर परम सुख–शांति केवल अविनाशी परमात्मा के सुमिरण–भजन में ही है, अन्यथा कही नहीं। सभी देवता, मनुष्य, मुनि और राक्षस आदि जो भी हुए हैं, वे अपना कमी फल भोगते हुए काल के फंदे में ही फंसे है। इसी तरह मृत्यु किसी को नहीं छोडता। प्रभु की प्राप्ति ही सुखों का दाता है। राम ही सभी सुखों का मूल है। शेष सभी दुख की राशियॉ हैं। यहॉ मानवीकरण अलंकार है।

9. ईश्वर की महत्ता–

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसे घटि घटि राम है, दुनियाँ देखे नाँहि।।

कबीर ने ईश्वर का महत्त्व बताते हुए कहते है कि कस्तुरी हिरण की नाभि में होती है, लेकिन इससे वही अनजान हिरण उसके सुगंध के कारण पूरे वन में खोजती है। उस अज्ञानी हिरण को मालूम नहीं कि वह कस्तुरी (सुगंधित द्रव्य) उसकी नाभि में है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य परमात्मा की प्राप्ति के दूनिया या जगत् में ढूंढता फिर रहा है। परंतु अपने अंदर रहे परमात्मा को ढूंढ नहीं पा रहा है। इसी प्रकार ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करते है। इस परमात्मा को हम नहीं देख पा रहे है। वहीं मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मस्जिद और तीर्थस्थानों मे ढूंढता रहता है। परंतु ईश्वर संसार के कण–कण में व्याप्त है यह मनुष्य समझ नहीं पाता।

10. निंदक का महत्त्व–

निंदक नेडा रखिये, आँगणि कुटि बंधाइ।
बिना सांबण पाँनी बिना, निरमल करै सुभाइ।।

कबीर दास कहते है कि निंदक को अपने नजदीक अंगन में कुटी बनाकर रखना चाहिए। क्योंकि वह बिना पानी और बिना साबून से मनुष्य के दोषों को हटाकर उसे अच्छा बनाता है। मनुष्य के स्वभावगत दोषों को हटाकर उसे साफ कर देता है। साथ ही निंदक की निंदा से मनुष्य अपने दोषों के प्रति सतर्क हो जाता है। व्यक्ति का चरित्र हमेशा ही उसकी पहचान है उसे निंदा करनेवाले को साथ रखना चाहिए, ऐसा इन्सान हमारे अंदर की दुर्बलता और कमियों को हमारे सामने लाता है। निंदक आपके चरित्र और व्यवहार को निर्मल करता है।

1.4 स्वय अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में सें सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक के रूप में.............. जाने जाते है।

   अ. कबीर   ब. तुलसीदास   क. सूरदास   ड. बिहारी

2. कबीर का जन्म.............. में हुआ।

   अ. मगहर   ब. काशी   क. वृंदावन   ड. मथुरा

3. कबीर अपने आपको .... का शिष्य मानते थे।

   अ. नरहरीदास   ब. नंददास   क. रामदास   ड. मलुकदास

4. कबीर की प्रामाणिक रचना .... मानी जाती है।

   अ. बीजक   ब. सतसई   क. गुरू के संग   ड. रमैनी

5. ऐसी बोली बोलिए मन का .... खोई।

अ. तन ब. सीतल क. आपा ड. सुख

6. कस्तुरी कुंडल बसै, ... ढूंढे बत माँहि।

अ. जेवडी ब. कुला क. रमैनी ड. मृग

7. कबीर के वाणी के तीन अंग है - पद, साखी और..............।

अ. साखी ब. सबद क. रमैनी ड. पद

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

अनंत-सीमित, उपगार-उपकार, लोचन-आँख, उघडिया-खोल दिया, दिखावनहार-दर्शन किया, लूटियों-लूट लो, तन-शरीर, अंखडियाँ-आँखें, झाँई पडी-कमजोर होना, पंथ निहारी-राह देखना, जीभडियाँ-जिव्हा, छाला पडया-छाले पडना, हिम-बर्फ, बिलार-छूपाना, मुई-मेरी, मुवा-मरा हुआ, आंसा त्रिस्नाँ-आशा और तृष्णा, कामना, आपा-गुस्सा, सीतल-ठंडा, बॉणी-वचन, हाटि-बाजार, रूचै-चाह, रासि- राशि, सुर-देवता, नर-मानव, मुनिवर-साधू, असुर-राक्षस, काल मृत्यु, कस्तुरी-सुगंधित द्रव्य, कुंडल- नाभि, मृग-हिरण, घटि-घटि-कण-कण, नेडा रखिये-निकट या समीप रखना चाहिए, कुटी बंधाई-पेड पौधों की छाया, आँगणि-आँगण, निरमल-शुध्द, सुभाइ-स्वभाव

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. कबीर 2. काशी 3. रामानंद 4. बीजक

5. आपा 6. मृग 7. रमैनी

1.7 सारांश :

1. कबीर भक्तिकालीन भक्ति काव्य के प्रमुख कवि थे। उन्हे निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक माना जाता है।
2. कबीर मानवतावादी समाजसुधारक थे और महान साधक के रूप में प्रसिद्ध थे।
3. कबीर विचारधारा पर अद्वैतवाद और एकेश्वरवाद का प्रभाव दिखाई देता है।
4. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के नामस्मरण, ब्रह्मज्ञान, सत्संग और प्रेम भक्ति को महत्त्व दिया है।
5. कबीर ने आत्मा और परमात्मा की एकता का प्रतिपादन किया है।

6. कमीर के नाम पर विभिन्न रचनाएँ मिलती है लेकिन उनकी प्रामाणिकता विवादास्पद है। बीजक उनकी एकमात्र प्रामाणिक रचना मानी जाती है। ङ्गबीजकफ को साखी, रमैनी और पदावली में विभाजित किया है।

7. अपनी साधना में उन्होंने गुरू को अनन्य साधारण महत्त्व दिया है। कबीर के गुरू रामानंद माने जाते है।

8. कबीर के राम दशरथ पुत्र राम न होकर घर घर में व्याप्त ब्रह्म है। उनके राम शब्द ङ्गनिर्गुण ईश्वरफ के लिए प्रयोग किया है।

9. कबीर के आत्मा को पत्नी और परमात्मा को पति मानकर दाम्पत्य भाव के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम व्यक्त किया है।

10. कबीर अशिक्षित होकर भी महान ज्ञानी थे। वे क्रांतिकारी विचारक थे। उनकी भाषा –सध्धुकडी अथवा पंचमेल खिचडी भाषा मानी जाती है। जिससे पाँच भाषाओं का समन्वय मिलता है।

1.8 स्वाध्याय:

अ. लघुत्तरी प्रश्न:

1) कबीर का जीवन परिचय लिखिए।
2) कबीर के काव्य का परिचय दिजिए।
3) कबीर के नाम महिमा और सद्‌गुरू महिमा महत्त्व बताइए।
4) कबीर ने निंदा करने वाले मनुष्य का वर्णन किस प्रकार किया है?
5) कबीर का ईश्वर के प्रति मत लिखिए।

आ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. पठित दोहों के आधार पर कबीर की विचारधारा को स्पष्ट कीजिए।
2. कबीर के दोहों के माध्यम से सद्गुरू महिमा, नाम महिमा, ब्रह्मज्ञान और माया से मुक्ति संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
4. कबीर के दोहों के माध्यम से ईश्वर, प्रेम, वाणी, निदंक आदि के महत्त्व की रचना कीजिए।
5. कबीर के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
6. कबीर के समाजसुधारक रूप को विशद कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. कबीर की समकालीन मराठी संत कवि नामदेव के साथ तुलना कीजिए।
2. महाराष्ट्र के निर्गुण संत कवि की जानकारी प्राप्त कर हिंदी में लिखने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. कबीर ग्रंथावली- संपादक, श्यामसुंदर दास, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर
2. मध्यकालीन हिंदी काव्य -संपादक डॉ चंदूलाल दूबे- पूर्णिमा प्रकाशन, धारवाड
3. कबीर और बाबा अवतार सिंह - डॉ. विजय शर्मा, संत निरंकारी मंडल, दिल्ली।

3. मीराबाई के पद

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 मीराबाई का जीवन परिचय

1.3.2 मीराबाई के पदों का परिचय

1.3.3 मीराबाई के पदों का भावार्थ

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

1. मीराबाई का कृष्ण प्रेम, विरह भावना तथा भक्ति भावना से परिचित हो जाएंगे।
2. मीराबाई की भक्ति में दैन्य और माधुर्य भाव से परिचित होंगे।
3. मीराबाई के समर्पण भाव और एकनिष्ठा से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :–

भक्तिकाल के कृष्णभक्ति–काव्य में मीराबाई का स्थान सर्वोपरि रहा है। मीराबाई का काव्य समाज में अत्यंत लोकप्रिय रहा है। आज भारत में मीराबाई की भक्ति, विद्रोह और निर्भिकता का प्रतीक माना जाता है। मीराबाई के भक्त होने पर किसी को आपत्ति नहीं थी। आपत्ति का कारण था लोकलाज। राणा कुल की बहु बाहर निकल कर सब लोगों से मिले। मीराबाई को इसी लोकलाज से लडना पडा था। इसी कारण उनकी पदों की चर्चा सबसे अधिक है। मीराबाई की संघर्षशीलता का सबसे बडा प्रमाण यह है कि उनकी विरह की तीव्रता की अभिव्यक्ति। मीरा के जन्म – मृत्यु के संबंध में विवाद है। उसी तरह उनकी रचनाओं की संख्या भी विवादास्पद है। उनके नाम पर भी कई रचनाएँ मिलती है। 1. नरसीजी को मांहरो 2. गीत गोविंद की टीका 3. सोरठ के पद 4. गर्बा गीत 5. राग गोविन्द 6. मीराबाई का भलार 7. फुटकर पद आदि। इन ग्रंथों की प्रामाणिकता संदिग्ध है। ङ्गमीराबाई की पदावलीफके नाम से उनके लगभग 200 पद प्राप्त होते है। जो उनकी अक्षय कीर्ति का स्तम्भ है। उनके पदों का प्रमुख विषय कृष्णभक्ति और कृष्ण प्रेम है। प्रत्येक पद में उनका विरह भाव व्यक्त हुआ है। मीरा ऑसू और वेदना की गायिका थी। इसी कारण उन्हें 'दरद दीवानी' या 'प्रेम दिवानी' कहा जाता है। उनके पदों में गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य निष्ठा, समर्पण भाव, एकनिष्ठा, नारी हृदय का समर्पण, तल्लीनता, कोमलता आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। इसी तरह गेयता, तन्मयता, मधुरता, दर्द दीवनापन और भक्ति की गहन अनुभूति के कारण राजस्थान की कृष्ण भक्ति कवयित्री मीरा समस्त भारतवर्ष में जनप्रिय हो चुकी है। उनके पदों में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाष्य का प्रभाव पाया जाता है।

1.3 विषय –विवरण

1.3.1 मीराबाई का जीवन परिचय:

हिंदी साहित्य में कृष्णभक्त कवियों में मीरा का स्थान अनन्य साधारण है। मीरा का जन्म राजस्थान के मेड़ता के समीपवर्ती कुडकी गांव में सन् 1498 ई. हुआ था। मीरा मेडतिया राढौर के रत्नसिंह की पुत्री और राव दूदा जी की पौत्री थी। मीरा को बचपन में माँ की मृत्यु का दुःख झेलना पडा था। उनका लालन – पालन पितामह राव दूदाजी ने किया। दूदाजी परम वैष्णव – भक्त थे। अत: बचपन से ही मीरा के संस्कार कृष्ण –प्रेम ओतप्रोत थे। मीरा का विवाह राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र राणा भोजराज से सन् 1516 ई. में हुआ था। मीरा का दांपत्य जीवन आनंदपूर्ण था। विवाह के उपरान्त कुछ वर्षा में ही उनके पति का स्वर्गवास हुआ। मीरा तत्कालीन प्रथा के अनुसार सती नहीं हुई, परिणमत: उन्हें राजपरिवार का विरोध झेलना पडा। पति की मृत्यु के कारण बचपन से ही हृदय में स्थित भक्ति ही अब उनके जीवन की एकांत निष्ठा बन गई। मीरा ने समस्त लौकिक संबंधों को तोडकर, लोक एवं कुल मर्यादा त्यागकर और चारों ओर से चित हटाकर स्वयं को कृष्ण के चरणों पर समर्पित

किया। लोकलाज त्यागकर मीरा साधु संगति में भक्तिभाव से अपना जीवन व्यतीत करने लगी। मीराबाई यह व्यवहार और भक्तिभाव में समर्पित होकर गाना, नाचना राजा सांगा के मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी बने देवर विक्रमजित सिंह को असह्य लगा। उसने मीरा को अनेक यातनाएँ दी। उसने मीरा को कई बार जान से मारने की कोशिश भी की, लेकिन मीरा अपनी भक्ति के बल पर बच गई। उसका कृष्ण भक्ति के प्रति होनेवाला रूझान कम नहीं हुआ।

इन सभी घटनाओं का मीरा के कोमल हृदय पर आघात पहुँचा। इन सभी यातनाएं ङ्गमीरा की भक्तिफ दृढ बनती गयी। मीरा के चाचा वीरमदेव को इस अत्याचारो का पता लगा तो उन्होंने मीरा को मेडता आने का निमंत्रण दिया। जब तक वीरमदेव मेडता का शासक रहा, मीरा वही रहकर अपने आराध्य की साधना करती रहीं। जब मेडता वीरमदेव को हाथ से निकल गया, तो मीरा ने कृष्ण की लीला -भूमि वृन्दावन में शरण ली। ब्रज की माधुरी पर प्रसन्नता का जादू देखकर मीरा ने ब्रज की प्रशंसा में गीत लिखे-

''या ब्रज में कछु देख्यो री टोना।।''

वहां कुछ समय रहकर वहाँ से मीरा द्वारिका चली गयाी। वहीं रड छोड जी के मंदिर में भगवान की मूर्ति के सम्मुख एकाग्र भाव से भजन-कीर्तन करते हुए मीरा ने अपना शेष जीवन व्यतीत किया। संत रैदास या रविदास उनके गुरू थे। मीरा का आध्यत्मिक विकास में सबसे पहले नाथ संप्रदाय का प्रभाव रहा। जिसमे उसने जोगी (योगी) के संबंध में पद लिखे। उसके पश्चात् संतों के प्रभाव में आकर उन्होनें नश्वरता के फिर रहस्यान्मुखी विरह-भावना के गीत गाए। ङ्गभागवतफ के प्रभाव से कृष्णलीला और विनय के पद गाए। कृष्ण के वियोग में विप्रलंभ श्रृंगार के गीत उनके कंठ से निकले और अंत में कृष्ण के प्रेम में तन्मय होकर उन्होंने माधुर्य - भाव से उनकी पुजा उपासना की है। उनकी आध्यात्मिक जीवन साधना परक नहीं अनुभूति परक है। कुछ लोग मीरा को निर्गुण की साधिका बताते है। क्योंकि उनके पदों में योग के कुछ तत्त्व मिलते। हठयोग के अनेक सिध्दांतों का उल्लेख और रहस्यानुभूति के कारण हमें इस प्रकार सोचने के लिए विवश करती है। परंतु वास्तविकता यह है की मीरा पर निर्गुण और सगुण दोनों ही धाराओं का प्रभाव पडा था।इस प्रकार मीरा के आराध्य का प्रधान रूप कृष्ण का लीलामय रूप है जो बाल्यकाल से ही उनके हृदयपटल पर अंकित हो चुका था। उन्होंने अपना जीवन कृष्ण भक्ति में बिताया। ऐसा माना जाता है की गुजरात के द्वारिका स्थित रणछोड मंदिर मे सन् 1547 ई. में मीराबाई की मृत्यु हो गयी।

मीरा का काव्य उनके हृदय से सहजरूप से निकलनेवाला प्रेम सत्कार रूप है। उनकी वृति समग्रता प्रेम माधुर्य में रमी है। अपने आराध्य 'गिरीधर गोपल' की विलक्षण रूप छटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति शब्दधारा के रूप में फूट पडी है। कृष्ण प्रेम संजोगकर उससे निर्मित आनंद की अभिव्यक्ति की है। मीरा का संयोग-वर्णन उतना सबल नहीं जितना वियोग पक्ष रूप-वर्णन के पदों में उनका हृदय प्रिय से सामजंस्य स्थापित कर लेना है। कुछ पदों परंपरागत उपमानों के द्वारा कृष्ण के कृष्ण के सौंदर्य का चित्र प्रस्तुत किया गया है। मीरा ने मुक्तक पद शैली का अनुसरण किया है। उनके काव्य में भावनाओं का अपार वेग है, बुद्धि तत्त्व का अभाव है।

मीरा के काव्य का कला पक्ष नगण्य है, क्योंकि मध्यकालीन कवियों के समान वह पहले भक्त थी और बाद में कवि। उनके काव्य में अनुभूति प्रधान है अभिव्यंजना कौशल्य गौण है। कला की साधना को लक्ष्य बनाकर उन्होंने पद रचना नहीं की, फिर भी अलंकारों की योजना जहाँ वहाँ स्वत: हो गई है। यदि किसी एक भाषा को उनकी काव्य भाषा घोषित किया जा सकता है, तो वह पूर्वी राजस्थानी है जिसमें डिगंल के शब्दों का प्रयोग होते हुए भी प्रधान रूप पिंगल का है, हिंदी में लिखे गए पदों में गुजराती की स्पष्ट छाप है। पंजाबी, खेडी बाली तथा पूर्वी भाषा का प्रभाव कम अधिक मात्रा दिखने को मिलता है।

1.3.2 मीराबाई के पदों का सामान्य परिचय:-

मीराबाई को प्रस्तुत पदों में कृष्ण को प्रति समपर्ण भाव व्यक्त किया है। उन्होंने पूरे संसार में कृष्ण ही उसका आराध्य कहा है। उन्होंने कृष्ण को पति मानकर अपनी भक्ति - भावना व्यक्त की है। मीरा नामरूपी धन, सद्‌गुरू कृपा, भवसागर की प्राप्ति, लोकलाज का त्याग, कुल की मर्यादा, दास्य भक्ति, प्रेम भावना, सत्य की प्राप्ति, नाथ संप्रदाय के योगी स्परूप आदि विशेषता से हम परिचित होंगे। साथ गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य निष्ठा, विरह पीडा तथा कृष्ण के रूप - माधुर्य का वर्णन मिलता है।

1.3.3 मीराबाई के पदों का भावार्थ :

मीराबाई के पदों में नाममहिमा, सद्‌गुरू महिमा, मोक्ष की प्राप्ति, लोकलाज का त्याग, दास्य भक्ति और प्रेमभक्ति से संबंधित है।

पद 1 : नामरूपी धन, सद्‌गुरूकृपा-

> **पायो जी में तो राम-रतन धन पायो।**
> **वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू, करि किरपा अपणायो।**

मीराबाई के आराध्य कृष्ण है। उन्होंने अनेक स्थानों पर कृष्ण के लिए राम, गोविंद, प्रभु जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इस पद में उन्होंने राम रतन रूपी धन का वर्णन किया है। मीरा कहती है - मुझे राम रूपी रत्न का धन मिल गया है। यह बहुमूल्य वस्तू हमारे गुरू ने कृपा करके मुझे दी है? जिसे मैंने तन-मनसे ग्रहण किया है। मीरा ने इस संसार में सब कुछ खो कर इस जन्म की पूंजी को पाया है। ये नामरूपी धन ऐसा है, जो न खर्च करने कम होता है। और न कोई चोर लूट पाता है, इससे तो दिनों दिन सवा गुणा बढत होती रहती है। अर्थात् नाम की पूंजी बढती ही जाती है। मीरा ने सत्य की नाव जिसके खेवनहार सतगुरू श्री रविदास है। जिसकी कृपा से भवसागर पार कर लिया है। मीरा कहती है कि मेरे प्रभु गिरिधर श्रीकृष्ण है जिनका मैं खुशी खुशी से यश गाती हूँ। इस तरह मीरा ने अपने पद में नामधन लेकर सद्‌गुरू कृपा से भवसागर पार किया है। मीरा प्रभु कृष्ण को आराध्य मानकर उनका गुणगाण करती रही है।

पद –2 : लोकलाज और कुल मर्यादा का त्याग–

राणाजी थें जहर दियौ म्हे जाणी।
जैसे कंचन दहन अगिन में निकसत बारह षाणी।
लोक आज कुल काण जगत की दई बहाव जस पाणी।।

मीरा के भक्त होने पर किसी को आपत्ति हीं थी। आपत्ति का कारण था ङ्खलोकलाजफ और ङ्खकुलमर्यादाफ। राना कुल की बहु बाहर निकल कर सब लोगों से मिले। मीरा को इसी लोकलाज से लडना पडा था। इसी भक्ति के तल्लीन मीरा का देवर राणा दिव्य से कठोर यातना सहनी पडी। प्रस्तुत पद में कहती है राणाजी तुमने जहर दिया है मैं जान गई। जैसे सोना आग में तपकर सूरज की तरह चमक उठता हैं। मैंने प्रभु की खातिर लोकलाज, खानदान, कुल की इज्जत दुनिया में पानी की तरह बहाई है। हे राणा अपने घर का पर्दा कर लो, मैं पागल औरत हूँ। सभी संतों के चरणों में तन–मन से समर्पित हो गई हूॅ जो उन्हीं के चरण कमल लिपटी पडी हूँ। वे कहती है की मुझे जीवन के अंत तक कृष्ण को ही प्रतिपालक माना है और स्वयं को उनकी दासी मानती हूँ। वे कहती है मुझपर कृपा दृष्टि निरंतर रखने की बात करती है। कृष्ण की दासी सदैव गिरिधर नागर का स्मरण करती है। इस पद में लोकलाज और कुलमर्यादा छोडकर कृष्ण के प्रति दास्य भाव का वर्णन किया है।

पद–3 : नाथ संप्रदाय के योगी का प्रभाव और प्रेम भक्ति–

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाई परूँ येरी तेरी हौं।
प्रेम भगति कौ पैडो ही न्यारो, हम कूँ डौल बता जा।
अगर चंदन की चिता बनाऊँ, अपने हाथ जला जा।

मीरा के आध्यत्मिक विकास में सबसे पहले नाथ संप्रदाय का प्रभाव दिखता है। उन्होंने जोगी (योगीराज) के संबंध में पद लिखे है। मीरा ने अपने प्रभु गिरधारी को योगी स्वरूप कहकर प्रेम भक्ति का महत्त्व भी बताया है। जोगी या जोगिया शब्दों के द्वारा मीरा ने अपने आराध्य कृष्णा का ही स्मरण किया है। मीराबाई इस पद में कह रही है की, देख जोगी तू मत जा। हे जोगी मैं तेरी दासी हूॅ और तेरे पैरों पडती हूँ। मीरा अपने कृष्ण (जोगी) को कहती है प्रेम –पूजा की अलग राह है। उस मार्ग पर अग्रेसर होने का तरीका बताने के बारे में कहती है अगर मै कभी चंदन की चिता बनाऊँ तो तुम उसे अपने हाथ से जलाना। योगेश्वर शिव की भाँति अपने शरीर भस्म लगा लेने की बात कहती है। अपने प्रियतम कृष्ण को कहती है सब जलकर राख की ढेरी हो जाए तो अपने अंग को शिव की अंग कें भस्म को लगा लेन जिक्र करती है। मीरा ने कृष्ण को प्रभु, जोगी और शिव की उपमा दे दी है। अंत में कृष्ण को मीरा कहती है प्रेम ज्योति अपने ज्योति मिला लेगा जैसे परमात्मा मै आस्था को विलोम होना पडता सभी ज्ञान, साधना, हठयोग के बलपर प्रभु को पाने की बात करते हैं। लेकीन मीराबाई प्रेम की मार्ग से गिरीधर गोपाल मिलने की उपाय बताती है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. मीराबाई का जन्म राजस्थान के .... गाँव में हुआ।

अ. मेवाड　　ब. कुडकी　　क. जोधपुर　　ड. रामपुर

2. मीराबाई के पति का नाम .... था।

अ. भोजराज　　ब. महाराणा सांगा　　क. राणा　　ड. विक्रमजित

3. मीरा .... को अपना आराध्य मानती थी।

अ. कृष्ण　　ब. राम　　क. अर्जुन　　ड. भीम

4. मीरा ने अपने पदों में सद्‌गुरू को .... की उपमा दी है।

अ. खेवनहार　　ब. भवसागर　　क. राम　　ड. शिव

5. मीरा के देवर .... ने जहर दिया था।

अ. राणा सांगा　　ब. राणा विक्रमजीत सिंह

क. दादू　　ड. विग्रहराज

6. पायो जी में तो .... रतन धन पायों।

अ. कृष्ण　　ब. राम　　क. श्याम　　ड. शिव

7. मीरा ने अपने पदों में आराध्य कृष्ण को .... कहा है।

अ. भीम　　ब. जोगी　　क. खेवनहार　　ड. प्रभु

1.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

अमोलक - बहुमुल्य, खोवायो - खोया, खेवटीया -मल्लाह, हरख- हर्ष यश, बौराणी - पागल, तरकस- तीर रखने का चोंगा, सनकानी -पगलना, कँवल - कमल, परूँ- पैर, चेरी- दासी, डौल -तरीका, जोत - ज्योति

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. कुडकी　　2. भोजराज　　3. कृष्ण　　4. खेवनहार

5. राणा विक्रमजीत सिंह　　6. राम　　7. जोगी

1.7 सारांश :

1. हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में कृष्णभक्त कवयित्री के रूप में मीरा का स्थान अनन्य साधारण है। उनका जन्म राजस्थान के राज परिवार में हुआ। वैष्णव भक्ति के संस्कार बचपन से हुए थे। विवाह के कुछ वर्ष बाद पति की मृत्यु हुई। तब से मीरा ने सारे सांसरिक बंधनों का त्यागकर कृष्ण भजन- कीर्तन में लीन हो गई। उनके नाम पर अनेक रचनाएँ मिलती है। उनकी मीराबाई की पदावली ङ्गहिंदी साहित्य में प्रसिध्द है।फ उन्हीने नाम महिमा और सद्गुरू महिमा का वर्णन किया।

2. मीरा के पदों में कृष्ण प्रेम, कृष्ण भक्ति और कृष्ण विरह ही मुख्य विषय रहा है। उनमें भी विरह अनुभूति तीव्र रूप से व्यक्त हो गयी है। इस कारण उन्हें ङ्गदरद दिवानीफ या प्रेम दिवानी कहा जाता है।

3. मीरा ने कृष्ण भक्ति के लोकलाज और कुल मर्यादा को त्यागकर उनकी दासी बनकर रह गयी थी। उनके पदों में समर्पण भाव अपने आराध्य के प्रति अनन्य निष्ठा आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है।

1.8 स्वाध्याय :

अ. लघुत्तरी प्रश्न :

1) मीराबाई का जीवन परिचय लिखिए।
2) मीराबाई ने लोकलाज और कुल मर्यादा का त्याग किस प्रकार किया है वर्णन कीजिए।
3) मीराबाई पर नाथ संप्रदाय का प्रभाव किस प्रकार पडा है?
4) मीराबाई की प्रेमभक्ति विशद कीजिए।

आ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. मीराबाई के पदों के माध्यम से भक्ति भावना का परिचय दीजिए।
2. मीरा की प्रेमभावना और नाम महिमा को चित्रित कीजिए।
3. मीरा के पदों की मीमांसा कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. सन 1498 मीराबाई के विचारों के समकालीन संत कवयित्री बहिणाबाई चौधरी के साथ तुलना कीजिए।
2. महाराष्ट्र के संत कवयित्री की जानकारी प्राप्त कर हिंदी में लिखने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मीराबाई की पदावली - लेखक पं परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

❖❖❖

इकाई 2

मध्यकालीन काव्य

4. 'रहिम के दोहे'

अनुक्रमणिका

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 रहीम का जीवन परिचय

2.3.2 रहीम के दोहों का सामान्य परिचय

2.3.3 रहीम के दोहों का भावार्थ

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) रहीम के जीवन वृत्त का संक्षेप में परिचय प्राप्त करेंगे।

2) रहीम के व्यक्तित्त्व से परिचित हो जायेंगे।

3) रहीम के भक्ति, नीति और दर्शन संबंधी विचारों को समझ पाएंगे।

2.2 प्रस्तावना :–

किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के पूर्व उसके जीवन वृत्तांत एवं व्यक्तित्त्व से परिचित होना नितांत अनिवार्य होता है क्योंकि उसके व्यक्तीत्त्व के तमाम रंग उसके कृतित्त्व में झलकते नजर आते हैं उसका साहित्य उसकी स्वनुभूतियों का निचोड होता है।

रहीम का पूरा नाम अब्दुलरहीम खान–ए–खाना था। ये मुगल सम्राट अकबर के सेनापति और अभिभावक बैरमखाँ के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1556 ई.में लाहौर में हुआ। रहीम जब चार वर्ष के थे तब इनके पिता को हज जाते समय मार्ग में ही मार दिया गया। रहीम के भविष्य को असुरक्षित देखकर सम्राट अकबर ने बालक रहीम तथा उनकी माता को आगरा बुला लिया और उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। रहीम की शिक्षा का उचित प्रबंध भी किया गया। जन्मजात प्रतिभा, परिश्रमी वृत्ति तथा जिज्ञासु प्रकृति के कारण रहीम ने अल्प समय में ही अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत एवं हिंदी आदि भाषाओं पर अधिकार कर लिया था। रहीम की इसी उपलब्धि के कारण अकबर ने उन्हें 'मिर्जा खाँ' की उपाधि से विभूषित किया था।

रहीम एक साथ कलम और तलवार के धनी थे। वे अकबरी दरबार के नौ रत्नो में से एक थे। वे कुशल सेनापति थे। अकबर ने उसके पराक्रम–कौशल पर मुग्ध होकर उन्हें अपर धनराशि, सुभेदारी एवं जागीरे देकर संपन्न किया। रहीम का पारिवारिक जीवन भी सूखी था। माहेबानू जैसी सुंदर एवं सुशील पत्नी थी। रहीम का व्यक्तित्त्व सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न था। वे अपने युग के अपूर्व सेनापति, प्रशासक, दानवीर, बहुभाषाविद, कलापारखी, श्रेष्ठ कवि, विद्वान एवं कवि थे। स्वभाव से सरल, सहृदय और समझदार थे। जीवन की गहरी संवेदना उनके पास थी और विशाल अनुभव भी था।

2.3 विषय विवरण :

2.3.1 रहीम का जीवन परिचय

मुगल सम्राट अकबर के नवरत्न में से एक रत्न के रूप में रहीम विशेष ख्याति प्राप्त करने में समर्थ हुए। मुगल सम्राट और सामन्तों के बीच यदि वे अपने शासकीय प्रतिभा और शौर्यपूर्ण कार्यकलापों से प्रिय हुए तो

जनसाधारण में स्वरचित नीतिपूर्ण दोहों और चुटीले बरवों के कारण लोकप्रिय हुए। रहीम का जन्म 17 दिसंबर, सन् 1556 ई. को हुआ। रहीम के पिता सफल राजनीतिज्ञ और पटू सेनानायक तो थे ही, साथ ही कलाप्रेमी और कवि भी थे। रहीम को कलाप्रियता, शौर्य, पराक्रम, दूरदर्शिता आदि गुण अपने पिता से पैतृक संपत्ति के रूप में मिले थे।

रहीम ने अरबी, फारसी, तुर्की और संस्कृत भाषा–साहित्य का गंभीर अध्ययन किया था। रहीम ने हिंदुओं के धर्मग्रंथों का परायण भी भली भाँति किया था। हिंदी के वे ऐसे प्रथम मुसलमान कवि थे जिन्हे हिंदू धर्म और संस्कृति का एक हिंदू की भाँति ज्ञान था।

रहीम ने प्रेम, सौंदर्य, नायिका भेद आदि पर शृंगारिक कविताओं की रचना भी खूब की है, लेकिन नीतिकाव्य के प्रणेता के रूप में उनका हिंदी साहित्य में विशेष मान है। रहीम हिंदी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय और अग्रणी है। हिंदी की सतसई परंपरा में सबसे अधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ रचना 'बिहारी सतसई' है। उसके बाद 'रहीम सतसई' का स्थान अग्रणी है। 'रहीम सतसई' को हिंदी सतसई साहित्य की सर्व प्रथम कृति मानी जाती है।

2.3.2 रहीम की रचनाएँ

(1) दोहावली अथवा सतसई (2) नगर शोभा (3) बरवै नायिका भेद (4) बरवै (5) मदनाष्ट्क (6) शृंगार सोरठा (7) रहीम काव्य (8) खेट कौतुकम (9) फुटकर छंद (10) रास पंचाध्यायी

2.3.3 रहीम का नीतिकाव्य

रहीम ने प्रेम, सौंदर्य, नायिका भेद आदि पर शृंगारिक कविताओं की रचना भी खूब की है, लेकिन नीतिकाव्य के प्रणेता के रूप में उनका हिंदी साहित्य में विशेष माना है। उनकी लोकप्रियता का कारण है उनके नीतिकाव्य का सरस, सरल और प्रभावोत्त्पादक होना। जीवन की गहरी संवेदना, विशाल अनुभव उनके पास था। उनका नीति–कथन उनकी स्वनुभूतियों का निचोड है जो मानव जीवन के विविध पक्षों का उद्‌घाटन करता है। नीतिकाव्य के सभी प्रमुख गुणों का समावेश अत्यंत सुंदर रूप में हुआ है। अत: रहीम हिंदी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय और अग्रणी है।

2.3.4 रहीम की सतसई

हिंदी की सतसई परंपरा में सबसे अधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ रचना 'रहीम सतसई'। रहीम एक ऐसे कवि है जिन्होंने जीवन के विविध अनुभवों और उपदेशों को इतने सुंदर, सरल और मार्मिक ढंग से दोहों में चित्रण किया साधारण से–साधारण व्यक्ति उससे प्रभावित हुआ, इसलिए तो 'रहीम सतसई' सामान्य जनता में सर्वाधिक

लोकप्रिय है। ङ्गरहीम सतसईफ भाषा की दृष्टि से भी अप्रतिम है। उसमे भाषा का जैसा सीधा और सरल रूप मिलता है वैसा अन्य सतसईयों में दुर्लभ है।

2.3.5 रहीम के दोहे

रहीम हमें अच्छी जिंदगी जीने की बडी से बडी सीख दोहों के माध्यम बडी कुशलता से देते हैं। रहीम ने विविध विषयों पर दोहे लिखे हैं। रहीम के दोहों में उच्च कोटि की भक्ति-भावना के दर्शन होते है। उनकी भक्ति भावना में तन्मयता, समर्पण, शरणागति तथा भावात्मक तरलता है। रहीम कहते है कि ङ्गविष्णु भगवान की चरणों से निकलनेवाली तथा शिव जी के सिर पर मालती की माला के समान सुशोभित होनेवाली गंगा, तुम्हारी महिमा से भक्तजन मरने के बाद विष्णु और शिव का पद प्राप्त कर लेते है। रहीम की भक्ति भावना में आराध्य के प्रति वैसी ही अनन्यता एवं विश्वासमयी आस्था है।

2.3.6 रहीम के दोहों का भावार्थ

रहीम ने अपने दोहो में ऐसे जीवनोपयोगी तथ्य बताए है। उनका जीवन का निरीक्षण बडा गहरा था और इसीसे कई अमूल्य बातें बताई हैं। हमे जीवन में प्रेम के संबंध बनाए रखने के लिए कहा है। यदि हम अपने व्यवहार से, कटू वचन से प्रेम में व्याघात उत्पन्न नहीं करना चाहिए अन्यथा हमारे संबधों में आत्मीयता नहीं रहती।

1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय

अर्थ : रहीम कहते हैं कि प्रेम का नाता नाज़ुक होता है। इसे झटका देकर तोडना उचित नहीं होता। यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे मिलाना कठिन होता है और यदि मिल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड जाती है।

2. रहिमन चुप हो बैठीये, देखि दिनन के फेर

जब नीके दिन आई है, बनत न लगीहै देर

अर्थ : जब बुरे दिन आए हो तो चुप ही बैठना चाहिए, क्योंकि जब अच्छे दिन आते है तब बात बनते देर नहीं लगती रहीम ने आपत्ति और संपत्ति दोनों की पराकाष्ठा झेली थी। दोनों में लोगों के बदलते व्यवहार को परखा था। अत: उपर्युक्त दोहा उनकी विपत्ति काल की मानसिक अवस्था का द्योतक है।

3. रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिए डारि।

जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि

अर्थ : बडों को देखकर छोटों को भगा नहीं देना चाहिए। क्योंकि जहां छोटे का काम होता है वहां बडा कुछ नहीं कर सकता। जैसे कि सुई के काम को तलवार नहीं कर सकती।

4. रहिमन अंसुवा नयन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ,

जाहि निकारौ गेह ते, कस न भेद कहि देइ

अर्थ : रहीम कहते हैं की आंसू नयनों से बहकर मन का दुःख प्रकट कर देते हैं। सत्य ही है कि जिसे घर से निकाला जाएगा वह घर का भेद दूसरों से कह ही देगा।

5. जैसी परे सो सहि रहे, कहि रहीम यह देह

धरती ही पर परत है, सीत घाम औ मेह

अर्थ : रहीम कहते हैं कि जैसी इस देह पर पडती है सहन करनी चाहिए, क्योंकि इस धरती पर ही सर्दी, गर्मी और वर्षा पडती है। अर्थात्-जैसे धरती शीत, धूप और वर्षा सहन करती है, उसी प्रकार शरीर को सुख-दुःख सहन करना चाहिए

6. बडे बडाई ना करै, बडो न बोलै बोल।

रहिमन हीरा कब कहै, ला। टका मेरो मोल।

अर्थ : रहीम कहते हैं कि जिनमें बडप्पन होता है, वे अपनी बडी बडाई कभी नहीं करते। जैसे हीरा कितना भी अमूल्य क्यों न हो, कभी अपने मुँह से अपनी बडाई नहीं करता इस दोहे के माध्यम से यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि जो लोग सच्चे अर्थ में बडे होते हैं, वे अपने बडप्पन का ढींढोरा नहीं पीटते, लोग स्वयं उनका मूल्य जानकर उनका बडप्पन स्वीकार करते हैं।

7. दोनों रहिमन एक से, जों लों बोलत नाहि।

जान परत हैं काक पिक, रितु बसंत के माहि

अर्थ : कौआ और कोयल रंग में एक समान होते हैं। जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब वसंत ऋतु आती है तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है

8. समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।

सदा रहे नहि एक सी, का रहीम पछितात।

अर्थ : रहीम कहते हैं कि उपयुक्त समय आने पर वृक्ष में फल लगता है। झडने का समय आने पर वह झड जाता है। सदा किसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती, इसलिए दुःख के समय पछताना व्यर्थ है।

9. रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार,

रहिमन फिरि फिरी पोइए, टूटे मुक्ता हार

अर्थ : यदि आपका प्रिय सौ बार भी रूठे, तो भी रूठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए, क्योंकि यदि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार बार धागे में पिरो लेना चाहिए।

10. निज कर क्रिया रहीम कहि सीधी भावी के हाथ

पांसे अपने हाथ में दांव न अपने हाथ

अर्थ : रहीम कहते हैं कि अपने हाथ में तो केवल कर्म करना ही होता है सिद्धी तो भाग्य से ही मिलती है जैसे चौपड खेलते समय पांसे तो अपने हाथ में रहते हैं पर दांव क्या आएगा यह अपने हाथ में नहीं होता।

ङ्गरहीम सतसइफ में जीवन के विविध और दीर्घ अनुभवों और गहरी संवेदना के प्रमाण मिलते हैं। रहीम अन्य सतसईकारों की भाँति केवल कल्पना के संसार में विचरण करने वाले नहीं थे, अपितु जीवन की यथार्थता से उनका अत्यंत निकट का परिचय था। स्वानुभूति के इसी प्रकाशन के कारण उनके दोहे साधारण जनता के हृदय पर भी अपना पूर्ण प्रभाव डालने में सफल हुए है।

इस प्रकार स्पष्ट ही कहा जा सकता है कि ङ्गरहीम सतसईफ का हिंदी की सतसई परंपरा में विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है और सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रथम सतसईकार होने के नाते रहीम हिंदी साहित्य में गौरवशील पद पर प्रतिष्ठित है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

1) रहीम के पिता का नाम ....था।

अ) अलिखाँ ब) बैरमखाँ क) अकबर ड) शहाजहाँ

2) रहीम का जन्म ....में हुआ।

अ) ग्वालियर ब) पटना क) लाहौर ड) बनारस

3) रहीम का पूरा नाम ....खानखाना था।

अ) अब्दुलरहीम ब) रहीम क) मिर्जाखाँ ड) महावत

4) रहीम मूलतः ....कवि है।

अ) हास्य ब) शृंगार क) नीति ड) व्यंग्य

5) अकबर ने रहीम को ....की उपाधि से विभूषित किया।

अ) अलिखाँ ब) मिर्जाखाँ क) अल्लाखाँ ड) नूरखाँ

6) रहीम की ङ्गसतसईफ ....छंद में है।

अ) सोरठाब) चौपाई क) दोहा ड) घनाक्षरी

7) रहीम ....के दरबारी कवि तथा सेनापति रहे।

अ) बाबर ब) हुमायूँ क) अकबर ड) जयसिंह

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

चटकना - तोडना, जुरे - जुड़ना, डारना - फेंकना, ढारणा - बहाना, निकारो - निकाला, गेह - घर, लखि - देखकर, ठहराय - ठहरता है, ताहि - उसको, बढाई - प्रतिष्ठा, निज - अपने

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1) बैरमखाँ 2) लाहौर 3) अब्दुलरहीम 4) नीति

5) मिर्जाखाँ6) दोहा 7) अकबर

2.7 सारांश:

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि रहीम के दोहों में भावों की विविधता है। उनके भक्ति परक दोहों में सच्चे भक्त हृदय के उदगार हैं। उनका नीति कथन चिरंतन है, जो किसी दीपस्तंभ की भाँति समाज का पथ प्रदर्शन करने में समर्थ है। रहीम के दोहो में दार्शनिक सिद्धान्तों की सहज-सरल अभिव्यक्ति है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1) रहिम का जीवन परिचय लिखिए।

2) रहिम के रचनाओं के परिचय दीजिए।

3) रहिम नीति विषयक दोहों की चर्चा कीजिए।

4) रहिम के भक्तिपरक दोहों को स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) कविवर रहीम का संक्षिप्त परिचय देते हुए रहीम के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

2) पठित दोहों के आधार पर कवि रहीम की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) रीतिकाल के अन्य कवियों की रचनाओं की जानकारी इकट्ठा कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) हिंदी के प्रतिनिधि कवि - : डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, विद्या प्रकाशन, सी, 449, गुजैनी, कानपुर- 22

5. 'बिहारी के दोहे'

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

2.3.1 बिहारी का जीवन परिचय

2.3.2 बिहारी के दोहों का सामान्य परिचय

2.3.3 बिहारी के दोहों का भावार्थ

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

1) कविवर बिहारी के काव्य-कला से परिचित होंगे।

2) कविवर बिहारी के दोहों में प्रयुक्त श्रृंगार भावना, कला-सौंदर्य, माधुर्य, बहुज्ञता से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के इतिहास में संवत् 1700 से संवत् 1900 का कालखंड रीतिकाल से जाना जाता है। कविवर बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि है। हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ श्रृंगारी कवियों में बिहारी का नाम शीर्षस्थ है। ङबिहारी सतसईफ यह उनकी अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ है। इसमें उनके 700 से अधिक दोहों का संकलन है, जिसका प्रमु। प्रतिपाद्य श्रृंगार रस है। चुनिंदा शब्दों में बड़े से बड़े आशय को सरलता से समझाना उनके दोहों की विशेषता रही है। भाव एवं आशय की दृष्टि से देखा जाए तो कविवर बिहारी के दोहों में ङगागर

में सागरफ भरने की क्षमता है। इनके दोहों में भाव प्रवणता, श्रृंगार की विशुद्ध झाँकियाँ एवं भाषा की सामासिक ताकत देखते ही बनती हैं। दोहे जैसे कविता के छोटे से छंद प्रकार में कविवर बिहारी जी ने अपने अद्भूत काव्य प्रतिभा सौंदर्य से काव्य रसिकों को मंत्रमुग्ध किया है। बिहारी जी के अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ 'बिहारी सतसई' की प्रशंसा करते हुए हिंदी कविता के आलोचकों ने कहा है- ''सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर, देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर।'' अत: कविवर बिहारी जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय जानना जरूरी है।

2.3 विषय विवरण

2.3.1 बिहारी का जीवन-परिचय :

हिंदी के रीतिकालीन प्रमुख श्रृंगारी कवि बिहारी का जन्म संवत् 1652 (सन् 1595 ई.) में ग्वालियर राज्य में स्थित बसुआ गोविंदपुर गाँव में माथुर चौबे ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिताजी का नाम केशवराय था। बिहारी जी के पिताजी केशवराय धर्मपरायण एवं काव्यप्रेमी व्यक्ति थे। वे बचपन में अपने पिताजी के साथ ओरछा चले गए थे जहाँ पर संत-महात्माओं के सत्संग से बालक बिहारी प्रभावित हुए। उन्हें संत महात्माओं के सत्संग, भजन, कीर्तन में विशेष रूचि निर्माण हुई और वे ओरछा के प्रसिद्ध संत और निम्बार्क संप्रदाय के महंत श्री नरहरिदास के शिष्य हो गए। गुरू की कृपा से इनमें काव्य-प्रतिभा जागृत हुई। पिताजी के काव्यप्रेम, गुरू के सत्संग एवं उनके पांडित्य का बिहारी पर बेहद प्रभाव पड़ा। ओरछा में ही बिहारी ने संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का गहरा अध्ययन किया और जिससे उनकी काव्य-कला निखरने लगी। वे थोड़े ही दिनों में हिंदी साहित्य के विद्वान बने और ब्रजभाषा में कविताएँ लि।ने लगे। इनका विवाह मथुरा में हुआ और वे युवावस्था में कुछ समय तक अपने ससुराल में ही रहकर साहित्य साधना में लगे रहे।

कालांतर में कवि बिहारी ओरछा से वृंदावन चले गए और वहाँ भगवान श्रीकृष्ण की पावन ब्रजभूमि से अत्यधिक प्रभावित होकर साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा ग्रहण की। दोहा जैसे मुक्तक छंद में बिहारी जी ने लोक-व्यवहार के अनुभवों को कविताओं में अभिव्यक्त किया। दिल्ली के सम्राट शहाजहाँ ने बिहारी की कोमलकांत कविता को सुनकर उन्हें पुरस्कृत किया। उनके तत्कालीन प्रसिद्ध कवि रहीम के साथ उनकी आगरा में मुलाकात हुई। बिहारी की काव्य प्रतिभा और पांडित्य को दे।कर रहीम ने उनकी प्रशंसा की और उन्हें पुरस्कृत भी किया। वे कुछ समय आगरा में रहे और उसके बाद जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह ने उनकी कविता से प्रसन्न होकर राजा जयसिंह ने उन्हें वार्षिक वृत्ति शुरू की। एक दिन वार्षिक वृत्ति लाने गए बिहारी को जानकारी मिली की राजा जयसिंह अपना राज कर्तव्य भूलकर एक षोडश वर्ष की कन्या के प्रेमपाश में बँध गए हैं। तब उन्होंने सेवक के हाथों एक दोहा लिखकर राजा को भेज दिया- ''नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल, अली कली ही सों बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।'' इस दोहे को पढते ही राजा की आँखे खुल गई और वे पुन: अपने

कर्तव्य पथ पर लौट आए। इस दोहे को पढकर राजा इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने बिहारी को अपने दरबार में स्थान दिया और उन्हें उनके एक दोहे के लिए एक अशर्फी (स्वर्ण मुद्रा) प्रदान की जाने लगी। उन्होंने अपने जीवन काल में लि। दोहों का संकलन 'बिहारी सतसई' नाम से प्रसिद्ध है जिसमें 700 से अधिक दोहें संकलित हैं। उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद विरहदग्ध बिहारी भक्ति और वैराग्य की ओर बढे। संवत् 1720 (सन् 1663 ई.) में उनकी मृत्यु हुई।

बिहारी का रचना संसार :

कवि बिहारी के अक्षयकीर्ति का एकमात्र आधार उनकी बहुचर्चित कृति ङ्गबिहारी सतसईफ है। बिहारी पर प्राकृत भाषा के हाल कवि (पाँचवी शती) 'गाह्य सतसई' (गाथा सप्तशती) का प्रभाव था। इसकारण उन्होंने 'बिहारी सतसई' का निर्माण किया। इसमें करीब 700 से अधिक दोहों का संकलन किया गया है। बिहारी जी के बाद इसी परंपरा में ङ्गगाथा सप्तशतीफ, ङ्गआर्या सप्त शतीफ, 'अमरूकशतक' का प्रभाव दिखाई देता है। लेकिन ङ्गबिहारी सतसईफ की आभा के सामने आज तक कोई मुक्तक काव्य टिक नहीं पाया है। यह ग्रंथ साहित्यिक ब्रजभाषा में लि।ा गया है। ङ्गबिहारी सतसईफ को शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी ग्रंथ कहा जाता है। 'बिहारी-सतसई' पर हिंदी एवं विदेशी आलोचकों ने गहराई से समीक्षाएं लिखी है, जिसके कारण उसकी लोकप्रियता निरंतर बढती रही है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार यूरोप में 'बिहार-सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।

बिहारी के काव्य की विशेषताएँ :

1) 'बिहारी सतसई' में संकलित अधिकांश दोहे नायक-नायिका प्रधान है। इसमें शृंगार रस प्रमुख है और शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

2) 'बिहारी सतसई' एक मुक्तक रचना है और इसमें दोहा छंद का प्रयोग किया है।

3) बिहारी के काव्य में ङ्गगागर में सागरफ समाने की ताकत है अर्थात् दोहों की मात्र दो पँक्तियों में प्रभावपूर्ण आशय होता है।

4) बिहारी के दोहों में समसामायिकता और बहुज्ञता का परिचय मिलता है।

5) बिहारी के दोहे भाव-व्यंजना और शब्द विन्यास की दृष्टि से अद्भूत हैं।

6) बिहारी के दोहों की भाषा साहित्यिक ब्रज और अलंकार प्रधान होती है साथ ही उनकी कल्पना शक्ति अद्भूत है।

2.3.2 बिहारी के दोहों का सामान्य–परिचय:

हिंदी साहित्य के रीतिकाल में कवि बिहारीलाल सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध कवि रहे हैं । उनकी अक्षयकीर्ति का आधार उनकी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। कहा जाता है हिंदी में तुलसीदास कृत ङ्गरामचरितमानसफ ग्रंथ के बाद यदि किसी को सबसे अधिक प्रसिध्दी मिली है तो वह ग्रंथ 'बिहारी सतसई' है। इसमें बिहारी ने मुक्तक छंद में अनेक विषयों पर 700 से अधिक एक से बढकर एक सरस दोहों की रचना की है। बिहारी मूलत: शृंगारी कवि माने जाते हैं लेकिन उनकी सतसई में भक्ति, नीति विषयक बहुत से दोहे संकलित हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में बिहारी के बहुचर्चित और रसिकों द्वारा पसंद किए गए चुनिंदा दस दोहों का यहाँ अध्ययन जाएगा। बिहारी जी के इन दोहों के विषय क्रमश: प्रेम भावना की महानता, नायिका का सौंदर्य, प्रेम की गहनता और अरसिकों की संकीर्णता, स्वार्थ का त्याग और कर्तव्य परायणता, भौतिक जगत् का लालच और नशा, भगवत् प्रेम पाने की चुतराई, मन की पावनता के लिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में नायिका के मन की विवशता और ग्रंथ की सफलता के लिए अपने आराध्य राधिका की स्तुति और वंदना आदि हैं।

पहले दोहे में बिहारी जी ने प्रेम की अनूठी पद्धति और उसके विरोधियों की रीति का वर्णन किया है। दूसरे दोहे में उन्होंने नायिका अर्थात् प्रेमिका की क्षण-क्षण में बदलती छवि का वर्णन किया है। तिसरे दोहे में प्रेम की गहराई और प्रेम के विरोधी की संकीर्ण मानसिकता का वर्णन किया है। चौथा दोहा कवि बिहारी जी ने मिर्झाराजा जयसिंग को अपना कर्तव्य धर्म याद दिलाने के लिए लिखा था। पाँचवे दोहे में बिहारी जी ने कनक के दो अर्थ बताए हुए धूतरा और सोने की मादकता का मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। छठे दोहे में बिहारी जी ने नायिका के शरीर की खूबसूरती का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। सातवा दोहा ईश्वर भक्ति के संदर्भ में है। इसमें बिहारी जी अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण जी उपेक्षा से आहत है क्योंकि उनकी दीनता भरी पुकार को वे नहीं सुन रहे हैं। आठवें दोहे में कविवर बिहारी जी ने भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिप्रेम की महानता का गुणगान किया है। नौवें दोहे में कविवर बिहारीलाल जी ने श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है जिसमें भगवत् प्रेम में विवश नायिका अपनी विवशता का बयान अपनी सखी को देती है। दसवाँ दोहा ङ्गबिहारी सतसईफ के ङ्गभक्तिफ शीर्षक में संकलित है जिसमें बिहारी जी ने ग्रंथ के प्रारंभ में देवी राधा जी की वंदना की है। अपने ग्रंथ के सफल समापन के लिए राधाजी की स्तुति की है। इसमें उनके रंगों के ज्ञान का भी परिचय मिलता है। अत: स्पष्ट है कि बिहारी एक बहुज्ञ और प्रतिभावान कवि थे। उनके दोहों में सभी विषयों के व्यावहारिक एवं बहुज्ञता से ओत-प्रोत भरे मार्मिक उदाहरण दृष्टिगत होते हैं।

2.3.3 बिहारी के दोहों का भावार्थ:

पद क्रमांक – 1

''दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर–चित्त प्रीति।

परिति गांठि दुरजन–हियै, दई नई यह रीति।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहों में कवि बिहारी कहते हैं, प्रेम की पद्धति बहुत ही अनूठी होती है। प्रेम में प्रेमी–प्रमिका के नेत्र तो उलझते हैं लेकिन उनके परिवार (कुटूंब) टूटते हैं। रीति बहुत ही नई है कि इसमें प्रेमियों के मन तो एक–दूसरे से जुड़ जाते हैं, लेकिन दुर्जनों के ह्रदय में इससे गाँठ पड़ती है। हे ईश्वर! प्रेम की यह कैसी अनोखी रीति है। अर्थात् सृष्टि का नियम है कि जो उलझेगा वह टूटेगा और जो टूटेगा, वही जोड़ा जाता है। जो जोड़ा जायगा, उसीमें गाँठ पड़ती है। लेकिन प्रेम में यह नियम उल्टा है इसमें प्रेमी–प्रेमिका के नेत्र उलझते हैं लेकिन वे नहीं, तो उनके परिवार टूटते हैं। और प्रेमियों के मन तो एक–दूसरे से जुड़कर एक होते हैं लेकिन इस प्रेम से उनके दुश्मनों के दिल में गाँठ पड़ जाती है। बिहारी का यह एक सर्वोत्तम दोहा माना जाता है।

पद क्रमांक – 2

''लिखन बैठि जाकी छबी गहि – गहि गरब गरूर।

भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कविवर बिहारी जी ने नायिका अर्थात् प्रेमिका की क्षण–क्षण में बदलती छवि का वर्णन किया है। बिहारी कहते हैं कि इस अलौकिक सुंदरी नायिका के अनुपम सौंदर्य छवि का चित्र बनाने के लिए, न जाने कितने अहंकारी एवं गर्विले चित्रकार आए, लेकिन सब मूर्ख और असफल साबित हो गए। अर्थात् इस अनुपम सौंदर्यवती नायिका की छवि पल–पल में बदलती रहती है। अत: चित्रकार जब चित्र बनाकर उसके साथ मिलान करके देखते हैं तो उन्हें हर पल भिन्नता दिखाई देती है। इस कारण उनका महान चित्रकार होने का गर्व और अहंकार चूर–चूर हो जाता है।

पद क्रमांक – 3

''गिरि तैं ऊंचे रसिक–मन बूढे जहाँ हजारू।

बहे सदा पसु नरनु कौ प्रेम–पयोधि पगारू।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कवि बिहारी ने प्रेम की गहराई और प्रेम के विरोधी की संकीर्ण मानसिकता का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि पर्वत से भी ऊंची रसिकता रखने वाले प्रेमी जन प्रेम के सागर में हजार बार डूबने के बाद भी उसकी थाह को ढूँढ नहीं पाए, वहीं नर-पशुओं अर्थात् अरसिक प्रवृत्ति के लोगों को वह प्रेम का सागर छोटी खाई के समान प्रतीत होता है। अर्थात् प्रेम जैसी पवित्र भावना का विरोध करनेवालों को कभी-भी प्रेम की गहराई समझ ही नहीं सकती। वह केवल संकीर्ण भावना से प्रेम और प्रेमी-जनों का विरोध करते रहते हैं।

पद क्रमांक – 4

''स्वारथु सुकृतु न, श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि।

बाज पराये पानि परि तू पछिनु न मारि।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा कवि बिहारी जी ने मिर्झाराजा जयसिंग को अपना कर्तव्य धर्म याद दिलाने के लिए लिखा था। हिंदू राजा जयसिंह तत्कालीन समय में मुगल साम्राज्य के बादशहा औरंगजेब की ओर से हिंदू राजाओं के खिलाफ युद्ध करते थे। यह बात बिहारी जी को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने राजा जयसिंह को संबोधित करते हुए कहा, 'हे बाज! तू शिकारी के निर्देश पर अपनी ही जाति के अपने बंधु-बांधवों को मार रहा है। तू दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर अपनी जाति के पक्षियों का वध कर रहा है।' अर्थात् कवि बिहारी ने राजा जयसिंह को बाज की उपमा देते हुए कहा था कि हे राजन, आप दूसरों के अहम की तुष्टि के लिए अपने ही पक्षियों अर्थात् हिंदू राजाओं को मत मारो। तुम अच्छे तरह से विचार कर लो कि इससे न तो तुम्हारा कोई स्वार्थ सिद्ध होता है, न यह शुभ कार्य है, तुम तो अपना श्रम ही व्यर्थ कर देते हो। कहा जाता है कि इस दोहे से मिर्झा राजा जयसिंह प्रभावित हुए और उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज और मोगल बादशहा औरंगजेब के बीच संधि कराई थी।

पद क्रमांक – 5

''कनक कनक ते सौं गुनी मादकता अधिकाय।

इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने कनक के दो अर्थ बताए हैं, एक कनक का अर्थ सोना और दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है। बिहारी कहते हैं, सोना कनक यानि धतूरे से भी सौ गुना अधिक मादक अर्थात् नशीला होता

है। क्योंकि धतूरे का सेवन करने से नशा होता है, जबकि सोने को पा लेने मात्र से नशा हो जाता है। धतूरे का नशा तो एक बार खाकर थोड़ी देर बाद उतर जाता है, लेकिन सोने का जो नशा चढता है वह आसानी से नहीं उतरता। धतूरा एक मादक पदार्थ होता है। कनक यानि सोने से अधिक नशीला कनक यानि धतूरा है। कनक यानि धतूरे को खाने के बाद मनुष्य पागल होता है लेकिन कनक यानि सोने को पाकर भी मनुष्य पागल हो जाता है। धन का नशा इतना नशीला होता है, कि उसके पीछे मनुष्य पागल हो जाता है, और धन पाकर भी उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

पद क्रमांक – 6

''अंग–अंग नग जगमगत, दीपसिखा सी देह।

दिया बढाए हू रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने नायिका के शरीर की खूबसूरती का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। वे कहते हैं कि नायिका इतनी सुंदर है कि उसके शरीर के प्रत्येक अंग रत्नों की तरह चमक रहे हैं। उसका शरीर दीपक की शिखा (चोटी) की तरह झिलमिलाता है। इसलिए जब घर में दीया बुझा जाने के बाद भी घर में रोशनी बनी रहती है। अर्थात् नायिका की इतनी सुंदर कांति है कि उसकी सुंदरता से दीया बुझाने के बाद भी घर में उजियाला बना रहता है।

पद क्रमांक – 7

''कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ।

तुमहूँ लागी जगत–गुरू, जग नाइक, जग बाइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा ईश्वर भक्ति के संदर्भ में है। इसमें बिहारी जी अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण जी उपेक्षा से आहत है। उनकी दीनता भरी पुकार को वे नहीं सुन रहे हैं। वे कहते हैं, हे प्रभु! मैं कब से दीनता भरी पुकार से आपको अपनी सहायता के लिए पुकार रहा हूँ। लेकिन आप है कि मेरी दीन-पुकार को अनसुनी किए जा रहे हैं। हे श्याम! हे जगत के पूज्य! हे जगन्नायक! कहीं ऐसा तो नहीं कि आपको भी सांसारिक गुरुओं और नायकों के समान दोनों की अपेक्षा करना आरंभ कर दिया हो। यदि ऐसा न होता तो मेरी करूण पुकार सुनकर मेरी सहायता करने अवश्य आते। स्पष्ट है कि कवि अपने इष्ट भगवान श्रीकृष्ण को द्रवित करने के लिए चतुराई भरे तर्कों का सहारा लिया है।

पद क्रमांक – 8

''या अनुरागी चित्त की, गति समुझे नहिं कोई।

ज्यौं–ज्यौं बूड़े स्याम रंग, त्यौं–त्यौं उज्जलु होइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कविवर बिहारी जी ने भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिप्रेम की महानता का गुणगान किया है। कवि कहते हैं, भगवान श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मेरे मन की दशा अत्यंत विचित्र है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है। श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के हैं, किंतु कृष्ण के प्रेम में मग्न यह मेरा मन जैसे–जैसे श्याम रंग (कृष्ण की भक्ति, ध्यान आदि) में मग्न होता है वैसे–वैसे श्वेत (पावन) होता जाता है। इस तरह कवि बिहारी ने कृष्ण की भक्ति में तल्लीन होने से मन पवित्र होने की भक्ति भावना को सुंदर तरीके से अभिव्यक्त किया है।

पद क्रमांक – 9

''जसु अपजसु देखत नहीं देखत साँवल गात।

कहा करौं, लालच–भरे चपल नैन चलि जात।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने श्रीकृष्ण के भक्ति में रंगी नायिका की विवशता का सुंदर वर्णन किया है। नायिका अपनी सखी को अपने विवश प्रेम के संदर्भ में कहती है, हे सखी! मेरे ये चंचल नेत्र यश–अपयश या किसी की प्रशंसा अथवा निंदा की चिंता नहीं करते। वह यह नहीं दे।ते कि ऐसा करने से मेरी प्रशंसा होगी या फिर निंदा होगी। ये तो बस श्याम–शरीर (श्रीकृष्ण) को ही दे।ते हैं अर्थात् उनको देखने के पश्चात् यश–अपयश की बात भूल जाते हैं। मैं इनका क्या करूँ, ये लालच में भरे हुए श्याम–शरीर को देखने के मोह में चंचल होकर उधर ही चले जाते हैं। स्पष्ट है कि इस दोहे में कविवर बिहारीलाल जी ने श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।

पद क्रमांक – 10

''मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जां तन की झांई परै, स्यामु हरित–दुति होइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा 'बिहारी सतसई' के 'भक्ति' शीर्षक में संकलित है जिसमें बिहारी जी ने ग्रंथ के प्रारंभ में देवी राधाजी की वंदना की है। अपने ग्रंथ के सफल समापन के लिए राधाजी की स्तुति करते हुए कहते हैं, हे चतुर राधिका जी! आप मेरी सांसारिक भव-बाधाओं, कष्टों को दूर कीजिए। मेरी सांसारिक बाधाओं को वही चतुर राधा दूर करेंगी जिनके गौरवर्ण शरीर की चमक पड़ने से श्रीकृष्ण भी फीकी कांतिवाले हो जाते हैं। इसका प्रतीक अर्थ यह है कि, हे राधिका जी, जिनके ज्ञानमय (गौर) शरीर की झलकमात्र से मन की श्यामलता (पाप) नष्ट हो जाती है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत दोहे में मंगलाचरण के रूप में बिहारीलाल जी ने राधा की वंदना की है।

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न:

1) कवि बिहारी का जन्म .... को हुआ।

अ) संवत् 1652 ब) संवत् 1662 क) संवत् 1672 ड) संवत् 1682

2) कवि बिहारी के पिताजी का नाम .... था।

अ) रामलाल ड) देवदास क) केशवराय ड) नारायणदास

3) कवि बिहारी के गुरू का नाम .... था।

अ) श्री नरहरिदास ब) श्री वल्लभाचार्य क) संत रामानंद ड) धर्मदास

4) कवि बिहारी के अक्षय कीर्ति का एकमात्र आधार ग्रंथ .... है।

अ) बिहारी गाथा ब) बिहारी दोहावली क) बिहारी सतसई ड) बिहारी की वाणी

5) 'बिहारी सतसई' में .... से अधिक दोहे संकलित है।

अ) 700 ब) 500 क) 600 ड) 900

6) .... ने बिहारी का दोहा पढकर उन्हें अपना दरबारी कवि बनाकर एक दोहे के लिए एक सुवर्ण मुद्रा देना शुरू किया।

अ) छत्रपति शिवाजी महाराज ब) महाराजा जयसिंह

क) महाराणा प्रताप ड) महाराजा गोविंद सिंग

7) 'बिहारी सतसई' ग्रंथ में सबसे अधिक .... रस का निरूपण हुआ है।

अ) वीर ब) रौद्र क) भयानक ड) शृंगार

8) 'बिहारी सतसई' की भाषा .... है।

अ) ब्रज ब) अवधी क) भोजपुरी ड) प्राकृत

9) ''मेरी .... हरौ, राधा नागरि सोइ, जां तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।''

अ) दुविधा ब) भव-बाधा क) चिंता ड) सुख

10) ''............ ते सौं गुनी मादकता अधिकाय, इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।''

अ) कनक-कनक ब) रजत-रजत क) खनक-खनक ड) ताम्र-ताम्र

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

पद क्र.1- दृग आँख, उरझत-उलझती है, लडती है, टूटत कुटुम-सगे सम्बन्धी छूट जाते है, जुरत-जुडता है, जुटता है, हियै-हृदय, दई ईश्वर, नई-अनोखी।

पद क्र.2- लिखन बैठी-लिखने बैठे, चित्र बनाने को बैठे, जाकी-जिसकी, छबी-सुंदरता, गहि गहि-धारण कर कर के, गरब-गर्व, गरूर-अहंकार, घमंड, भए-हो गए, केते-कितने हि, चितेरे-चित्रकार, कूकू मूर्ख, असफल।

पद क्र.3- गिरी-पर्वत, बुढे-डूबता है, हजारू-हजार, पसु-पशु, पयोधि-छोटी खाई, पगारू-प्रतीत होना।

पद क्र.4- स्वार्थु-स्वार्थी, सुकृत-पुण्य कार्य, श्रम वृथा-व्यर्थ को परिश्रम, बिहंग-पक्षी, बाजि-बाज पक्षी तथा राजा जयसिंह, पानि-हाथ, पछिनु-पक्षियों को, अपने पक्ष वालों को।

पद क्र.5- कनक-सोना, धतुरा, गुणी-गुणकारी, मादकता-नशा, अधिकाय-अधिक, बौरा-पागल।

पद क्र.6 नग-रत्न, जगमगत-जगमगाते हैं, दिपसिखा-दीपक की लौ, दिया-दीपक, बढाए हूँ-बुझाने पर भी, उज्यारौ-प्रकाश, गेह-घर।

पद क्र.7- कबकौ-कितने अधिक समय से, टेरतु-पुकार रहा हूँ, दिनरट-दीनता भरी वाणी में, सहाय- सहायक, कृपालु, तुमहू-आपको भी, जगत गुरु-सारे जगत के पूज्य, स्वामी, जग बाइ-संसार की हवा, संसारिक प्रभाव ।

पद क्र.8- या-इस, अनुरागी-प्रेमी, चित्त-मन, गति-स्वभावे, व्यवहार, समुझै-समझ पाना, ज्यों ज्यों-जैसे जैसे, बुडे-डुबता है ।

पद क्र.9- जसु-अपजसु-यश-अपयश।, साँवल गात-श्रीकृष्ण के साँवला शरीर।, कहा करौं-क्या करें।, चपल नैन-चंचल नेत्र।

पद क्र.10- भव-बाधा-सांसारिक दुःख। हरौ-दूर करो। नागरि-चतुर। झाई परै-प्रतिबिंब, झलक पड़ने पर। स्यामु-श्रीकृष्ण, नीला, पाप। हरित-द्रुति - i) हरी कांति, ii) प्रसन्न, iii) हरण हो गई है द्युति। जिसकी, अर्थात् फीका, कांतिहीन।

2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) संवत् 1652 2) केशवराय 3) श्री नरहरिदास 4) बिहारी सतसई

5) 700 6) महाराजा जयसिंह 7) शृंगार 8) ब्रज

9) भव-बाधा 10) कनक-कनक

2.7 सारांश:

1) कविवर बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं। हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ शृंगारी कवियों में बिहारी का नाम शीर्षस्थ है। ङ्गबिहारी सतसईफयह उनकी अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ है। इसमें उनके ७०० से अधिक दोहों का संकलन है, जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य शृंगार रस है।

2) बिहारी के दोहों को भाव एवं आशय की दृष्टि से देखा जाए तो इन दोहों में ङ्गगागर में सागरफ भरने की क्षमता है।

3) ङ्गबिहारी सतसईफमें संकलित अधिकांश दोहे नायक-नायिका प्रधान है। इसमें शृंगार रस प्रमुख है और शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

4) बिहारी के दोहों में समसामायिकता, बहुज्ञता का परिचय मिलता है।

5) बिहारी के दोहे भाव-व्यंजना और शब्द विन्यास की दृष्टि से अद्भूत हैं।

6) बिहारी के दोहों की भाषा साहित्यिक ब्रज और अलंकार प्रधान होती है और उनकी कल्पना शक्ति अद्भूत है।

7) बिहारी जी के इन दोहों के विषय क्रमश: प्रेम भावना की महानता, नायिका का सौंदर्य, प्रेम की गहनता और अरसिकों की संकीर्णता, स्वार्थ का त्याग और कर्तव्य परायणता, भौतिक जगत् का लालच और नशा, भगवत् प्रेम पाने की चुतराई, मन की पावनता के लिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में नायिका के मन की विवशता और ग्रंथ की सफलता के लिए अपने आराध्य राधिका की स्तुति और वंदना आदि हैं।

2.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) कविवर बिहारी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बिहारी के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

2) पठित दोहों के आधार पर कवि बिहारी की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न :

1) कवि बिहारी के भगवत् प्रेम को स्पष्ट कीजिए।

2) कवि बिहारी के दोहों का विषय वैविध्य स्पष्ट कीजिए।

3) कवि बिहारी के शृंगार रस पर दोहों का आशय स्पष्ट कीजिए।

4) कवि बिहारी के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) रीतिकाल के अन्य कवियों की रचनाओं की जानकारी इकट्ठा कीजिए।

2) बिहारी के समकालीन कवियों के साथ उनके कविता की तुलना कीजिए।

3) महाराष्ट्र के संत कवियों की जानकारी लेकर उनकी रचनाओं को हिंदी में अनूदित करने का प्रयास कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) हिंदी के प्रतिनिधि कवि – लेखक: डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, विद्या प्रकाशन, सी, 449, गुजैनी, कानपुर–22

6. ''भूषण के पद''

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

2.3.1 भूषण का जीवन परिचय

2.3.2 भूषण की रचना

2.3.3 भूषण के पदों का भावार्थ

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य

1) भूषण के व्मक्तित्त्व से परिचित होंगे।

2) भूषण के पदों से छत्रपति शिवाजी की वीरता, प्रताप आदि से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना

भूषण रीतिकाल के अंतिम चरण के कवि है। औरंगजेब के अत्याचारों से जब भारतीय संस्कृति खतरे में पड गई थी, उस समय छत्रपति शिवाजी राजा ने जो कार्य किया उसका राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्व है। भूषण के समय छत्रपति शिवाजी राजा को राष्ट्र रक्षक के रूप में देखा है। भूषण के समय मुसलमानों को विदेशी आक्रमणकारी, हिंदू मंदिरों के एवं भारतीय संस्कृति के विध्वंसक शत्रु ही माना जाता था। इन स्थिति में भूषण

द्वारा दिया गया हिंदुत्त्व का संदेश भारतीयता का, राष्ट्रीयता का संदेश था और इस दृष्टि से निश्चित रूप से राष्ट्रीय कवि के रूप में श्रेष्ठ है। भूषण मुसलमानों के विरोधी नहीं थे, बल्कि अन्यायी, अत्याचारी, भारतीय संस्कृति के शत्रु औरंगजेब के विरोधी थे, जो हिंन्दुओं पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार कर रहा था। बाबर, हुमायूँ और अकबर ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया था, इसलिए भूषण उन्हें आदर की दृष्टि देखते थे । वे जाति द्वेष के शिकार नही थे, बल्कि एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

भूषण संस्कृत, हिंदी और फारसी के बडे विद्वान थे। भूषण के काव्य की मूल संवेदना वीर भावना और राष्ट्रीयता रही हैं। ब्रजभाषा कवि भूषण की मूलभाषा है। उसकी लोच और सफाई से वे पूर्णतः परिचित थे। भूषण की कविता में अधिकतर अरबी-फारसी का प्रयोग मिलता है। इसका कारण यह हो सकता है कि दक्खिन में मुसलमानों का राज्य फैला हुआ था और अरबी-फारसी का भी काफी प्रचलन था। वीर रस काव्य की एक तरह से आत्मा होने के कारण ओजयुक्त अभिव्यंजना कविता की प्रमुख विशेषता रही हैं।

भूषण ने वीर रस की निष्पत्ति के लिए भयानक, बीभत्स और रौद्र आदि सहायक रसों को भी यथास्थान प्रयुक्त किया है। रीतिकालीन शृंगार धारा से वे सर्वथा अछुते न रहे। वीर रस के प्रसंग में शृंगार रस के प्रयोग का अवसर भी जाने नहीं दिया। परंतु शृंगार रस की यह अभिव्यक्ति स्वतंत्र रूप में न होकर सर्वत्र व्यंजनात्मक रही। उन्होंने अपने काव्य में वीर रस के अतिरिक्त किसी अन्य भाव का प्रमुख रूप से चित्रण नहीं किया। भूषण ने जहाँ शुद्ध रस का चित्रण किया है, वे सभी स्थल अत्यंत ओजस्वी बन पडे हैं। ऐसे कविता में भाव, भाषा, शैली, वृत्ति आदि का इतना सुंदर समन्वय हुआ है कि विभावानुभाव से परिपुष्ट उत्साह मूलक वीर रस पाठकों को सहज ही मुग्ध कर देता हैं।

2.3 विषय विवरण –

2.3.1 भूषण का जीवन परिचय

भूषण का जन्म सन् 1613 ई. में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के घाटमपुर तहसील में तिकवापुर गाँव में हुआ। रीतिकालीन अधिकांश कवियों ने राजदरबारों में रहकर शृंगार प्रधान कविता द्वारा अपने आश्रयदाता राजाओं की कामुक प्रवृत्ति को उभारा। ऐसे घोर शृंगारी काव्य के काल में कवि भूषण ने जातीय गौरव को पर।ा और उसका गान कर सुप्त जनता को जगाने का स्तुत्य प्रयास किया।

भूषण ने कुल छः ग्रंथ लिखे। आज (1) शिवराज भूषण (2) शिवा बावनी (3) छत्रसाल दशक ये तीन ग्रंथ ही उपलब्ध है। भूषण की भाषा ब्रजभाषा है, उन्होंने युद्धों का वर्णन सजीवता से किया है। उनकी कविता वीर-रस के कारण ओजपूर्ण हैं। उन्होंने छ.राजा शिवाजी की वीरता, उनका कार्य, उनका यश आदि का वर्णन अत्यंत

प्रभावशाली ढंग से किया है। भूषण ने शत्रूओं पर छ.शिवाजी के धाक एवं चातुर्म का वर्णन अधिक मात्रा में किया है।

वे रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। चित्रकूट के राजा हृदयराम के पुत्र रुद्र सुलंकी ने इन्हे 'भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था। ये कई राजाओं के यहाँ आश्रित रहें। पन्ना के महाराज छत्रसाल के यहाँ इनका बडा मन हुआ। ऐसा कहते है की महाराज छत्रसाल ने इनकी पालखी में अपना कंधा लगाया था, जिस पर इन्होंने कहा था ङ्गसिवा को सराहौ कि सराहौ छत्रसाल कोफ्न इन्होने प्रमुख रूप से छ.शिवाजी और छत्रसाल की प्रशंसा में ही लिखा है। भूषण रीतिकाल के कवि है परंतु उन्होने वीररस में ही रचनाएँ की है। भूषण की कविताओं की भाषा ब्रज भाषा है परंतु उन्होंने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी आदि के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है ।

2.3.2 भूषण की रचना

भूषण संस्कृत, हिंदी और फारसी के बडे विद्वान थे। भूषण के काव्य की मूल संवेदना वीर भावना और राष्ट्रीयता रही हैं। ब्रजभाषा कवि की मूलभाषा है। उसकी सोच और भाषिकता से वे पूर्णत: परिचित थे। भूषण की कविता में अधिकतर अरबी-फारसी का प्रयोग मिलता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि दक्खिन में मुसलमानों का राज्य फैला हुआ था और अरबी-फारसी का भी काफी प्रचलन था। वीर रस काव्य की एक तरह से आत्मा होने के कारण ओजयुक्त अभिव्यंजना कविता की प्रमु। विशेषता रही है।

भूषण ने वीर रस की निष्पत्ति के लिए भयानक, बीभत्स और रौद्र आदि सहायक रसों को भी यथास्थान प्रयुक्त किया है। रीतिकालीन शृंगार धारा से वे सर्वथा अछूते न रहे। वीर रस के प्रसंग में शृंगार रस के प्रयोग का अवसर भी जाने नहीं दिया। परंतु शृंगार रस की यह अभिव्यक्ति स्वंतंत्र रूप में न होकर सर्वत्र व्यंजनात्मक रही। उन्होंने अपने काव्य में वीर रस के अतिरिक्त किसी अन्य भाव का चित्रण नही किया हैं। भूषण ने जहाँ शुद्ध रस का चित्रण किया है, वे सभी स्थल अत्यंत ओजस्वी बन पडे है। ऐसे कविता में भाव, भाषा, शैली, वृत्ति आदि का इतना सुंदर समन्वय हुआ है कि विभावानुभाव से परिपुष्ट उत्साह मूलक वीर रस पाठकों को सहज ही मुग्ध कर देता है।

भूषण ने कुल छ:ग्रंथ लिखे परंतु उनमें से केवल तीन ही ग्रंथ (1) शिवराज भूषण (2) छत्रसाल दशक (3) शिवा बावनी उपलब्ध है। भूषण के नायक शिवाजी थे। छ.शिवाजी का महिमा मंडन भूषण के काव्य में सर्वत्र दिखता है।

2.3.3 भूषण के पदों का भावार्थ

भूषण के काव्य में वीर भावना का चित्रण वास्तव में अद्वितीय है। भूषण का नायक अपने युग में ख्यात था, आज भी ख्यात है, साथ ही एक निश्चित धारणा उस नायक के प्रति भारतीय जनता में है। भूषण का वीर काव्य अपने युग को साकार करने वाला ही नहीं अपितु अपने युग की प्रगति कराने वाला स्तंभ है।

भूषण के वीर काव्य की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमें कल्पना और पुरान की तुलना में इतिहास से ही अधिक सहायता ली गई है। भूषण के काव्य का मूल आधार शुद्ध ऐतिहासिक है, यह वास्तव में शुद्ध वीर काव्य कहलाने का अधिकारी है। भूषण के काव्य में राष्ट्रीय भावना का चित्रण है। यथार्थ चित्रण के साथ भारतीय गौरव, मानव प्रतिष्ठा का भी चित्रण है, अत: यह एक शुद्ध राष्ट्रीय काव्य है और भूषण एक राष्ट्रीय कवि।

1) **साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि**

सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है

भूषण भनत नाद बिहद नगारन के

नदी–नद मद गैबरन के रलत है

ऐल–फैल खैल–भैल खलक में गैल गैल

गजन की ठैल पैल सैल ईसलत है

तारा सो तरनि धूरि–धारा में लगत जिमि

थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि भूषण ने शिवाजी की चतुरंगिणी सेना का युद्ध के लिए प्रस्थान का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि --

व्याख्या : कवि कहते हैं कि सरजा उपाधि से विभूषित अत्यंत श्रेष्ठ एवं वीर शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना (पैदल, घोडे और रथ) को सजाकर तथा अपने अंग–अंग में उत्साह का संचार करके युद्ध जीतने के लिए जा रहे हैं। भूषण कहते हैं कि उस समय नगाडों का तेज स्वर हो रहा था। हाथियों की कनपटी से बहने वाला मद (हाथी जब उन्मत्त होता है तो उसके कान से एक तरल स्राव होता है जिसे उसका मद कहते हैं) नदी–नालों

की तरह बह रहा था। अर्थात् शिवाजी की सेना में मदमत्त हाथियों की विशाल संख्या थी और युद्ध के लिए उत्तेजित होने के कारण हाथियों की कनपटी से अत्यधिक मद गिर रहा था जो नदी–नालों की तरह बह रहा था। शिवाजी की विशाल सेना के चारों ओर फैल जाने के कारण संसार की गली गली में खलबली मच गई। हाथियों की धक्कामुक्की से पहाड भी उखड रहे थे। विशाल सेना के चलने से बहुत अधिक धूल उड रही थी। अधिक धूल उडने के कारण आकाश में चमकता हुआ सूर्य तारों के समान लग रहा था और समुद्र इस प्रकार हिल रहा था जैसे थाली में रखा हुआ पारा हिलता है।

यहाँ वीर रस का सुंदर निरुपण हुआ है। काव्य में तीन गुण महत्त्वपूर्ण माने गए है, माधुर्य, ओज, और प्रसाद। ओज गुण वीर, बीभत्स और रौद्र रस के अनुकूल होता है। भूषण ने मुख्यतया वीर रस का निरुपण किया है। अत: उनकी कविता ओज गुण संपन्न है, जिसके रसस्वादन से चित्त दीप्त हो उठता है और हृदय में आवेग उत्पन्न हो जाता है। उपर्युक्त छंद की पंक्तियों में शिवाजी की सैन्य शक्ति का व्यापक आतंक ध्वनित होता है।

विशेष:– छ.शिवाजी की चतुरंगिणी सेना के प्रस्थान का अत्यन्त मनोहारी चित्रण किया है।

2) इंद्र जिमि जंभ पर बाडव ज्यौं अंभ पर,

रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।

पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,

ज्यौं सहस्रबाह पर राम–द्विजराज हैं।

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,

'भूषन वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।

तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,

त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर सिवराज हैं।।

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : भूषण ने इस पद को छ.शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन करते हुए लिखा है इसमें उन्होंने शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन किया है।

व्याख्या : भूषण कहते हैं कि जैसे इंद्र ने जंभासुर नामक राक्षस का वध किया और जल की अग्नि जल को नष्ट करती है और घमंडी रावण पर रघुकुल के राजा ने राज्य किया और जिस प्रकार पवन जल युक्त बादलों को

उडा ले जाता है। और शिव शंभू ने रति के पति कामदेव को भस्म किया था तथा सहस्त्रबाहु अर्जुन को मारकर परशुराम ने विजय प्राप्त की तथा जिस प्रकार जंगल की अग्नि जंगल को जला देती है और चीता हिरणों के समूह पर और जंगल का राजा शेर हाथियों पर अपना अधिकार कायम रखता है और रोशनी अंधकार को समाप्त करती है जिस प्रकार कृष्ण ने अत्याचारी कंस का वध किया। ठीक उसी प्रकार म्लेच्छवंश पर वीर शिवाजी महाराज शेर के समान है। जिस प्रकार जंभासुर पर इंद्र, समुद्र पर बडवानल, रावण के दंभ पर रघुकुल राज, बादलों पर पवन, रति के पति अर्थात् कामदेव पर शंभु, सहस्त्रबाहु पर ब्राह्मण राम अर्थात् परशुराम, पेडो के तनों पर दावानल, हिरणों के झुंड पर चीता, हाथी पर शेर, अंधेरे पर प्रकाश की एक किरण, कंस पर कृष्ण भारी हैं उसी प्रकार म्लेच्छ वंश पर छ.शिवाजी शेर के समान हैं।

3) सबन के ऊपर ही ठाढो रहिबे के जोग,

ताहि खरो कियो जाय जारन के नियरे.

जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि उर,

कीन्हों न सलाम, न बचन बोलर सियरे।

भूषण भनत महाबीर बलकन लाग्यौ,

सारी पात साही के उडाय गए जियरे।

तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भयो,

स्याम मुख नौरंग, सिपाह मुख पियरे।

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : इस कवित्त में मुगल दरबार में आयोजित छ.शिवाजी की औरंगजेब से भेंट का वर्णन है। छ.शिवाजी को छह हजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा किया गया था। इस अपमान को छ.शिवाजी सहन न कर सके और भरे दरबार में क्रोधावेश में बडबडाने लगे। उसी दृश्य का चित्रण इस पद में प्रस्तुत किया गया है। व्याख्या : जो सरजा छ.शिवाजी मुगल दरबार में सबसे ऊपर खडे होने योग्य थे उनको अपमानित करने की नियत से औरंगजेब ने उन्हें छःहजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा कर दिया। अपने प्रति किये गये इस अनुचित व्यवहार से गुस्साबर शिवाजी अत्यधिक कुपित हो उठे और उस समय अवसर की मर्यादा के अनुकूल न तो शहंशाह औरंगजेब को सलाम किया और न विनम्र शब्दों का ही प्रयोग किया। भूषण कहते हैं कि महाबली छ.शिवाजी क्रोधावेश से

गरजने लगे और उनके इस क्रोधावस्था के व्यवहार को देखकर मुगल दरबार के सभी लोगों के जी उड गये। अर्थात् भय से हक्का-बक्का हो गये। क्रोध से लाल हुए शिवाजी के मुखमण्डल को देखकर औरंगजेब का मुंह काला हो गया और सिपाहियों के मुख भय की अतिशयता के कारण पीले पड गये।

विशेष :-

1. छ.शिवाजी के रौद्र रुप के वर्णन में रौद्र रस के सभी अंगों की सफल व्यंजना हुई है।
2. मुहावरों के प्रयोग एवं शब्दावली की सहजता से भाषा में जीवन्तता एवं गतिशीलता का पूर्ण समावेश है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) भूषण का जन्म .... सन् ई. में हुआ।

अ) ई.1616 ब) 1613 क) 1617 ड) 1615

2) भूषण ने छ.शिवाजी की ....सेना का वर्णन किया है।

अ) चतुरंगिनी सेना ब) पैदल सेना क) घोडदल सेना ड) वीरसेना

3) भूषण के पदों में नायक ....है।

अ) छ.शिवाजी ब) छ.संभाजी क) छ.शहाजी ड) औरंगजेब

4) शिवभूषण ग्रंथ ....ने लिखा है।

अ) रहीम ब) भूषण क) बिहारी ड) कबीर

5) भूषण के पदों में ....रस का निरुपण किया है।

अ) रौद्र ब) हास्य क) वीर ड) करूण

6) म्लेंछ पर छ.शिवाजी महाराज ....के समान है।

अ) दयावान ब) शेर क) मित्र ड) भाई

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

पद क्र.1- साजि = सजाकर। चतुरंग सैन = हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक चार अंगों से युक्त सेना। अंग = शरीर। उमंग = उत्साह। धरि = धारण करके। सरजा = छ.शिवाजी की उपाधि। जंग = युद्ध। भनत = कहते हैं। नाद= शब्द। बिहद = भारी, घोर। नगारन के = युद्ध के नगाड़ों के। नद = विशाल नदी। मद = मत्त हाथी

की कनपटी से टपकने वाला द्रव। गैबरन = हाथियों। रलत है = बहते हैं। ऐल फैल = सेना के फैलने या चलने से। खैल-मैल = खलबली, भय। खलक = संसार। गैल-गैल = गली-गली या सभी मार्गों पर। गजन की = हाथियों की वैल-पैल = धक्कों से। सैल = पर्वत। उसलत = उखडते। तारा सौ = तारे के समान (छोटा)। तरनि = सूर्य। धूरि-धारा = धूल का उड़ना। जिमि = जैसे। धारा = थाल। पारा = एक द्रव अवस्था में रहने वाली धातु। पारावार = समुद्र। यों हलते है = इस प्रकार हिलता है।

पद क्र.2- जिमि = जैसे। जंभ = जुंभासुर नाम का दैत्य जिसका वध इंद्र ने किया था। बाड़व = वड़वानल, समुद्र में रहने वाली आग जो जल को जलाया करती है। अंभ = जल। सदंभ = अहंकारी। रघुकुलराज = राम। पौन = पवन। वारिवाह = बादल। संभु = शिव। रतिनाह = कामदेव। सहस्रबाहु = एक पौराणिक राजा। राम = परशुराम। द्विजराज = ब्राह्मणों में श्रेष्ठ। दावा = दावानल, जंगल में लगने वाली आग। द्रुम दंड = वृक्ष। मृगझुंड = हरिणों का समूह। वितुंड = हाथी। मृगराज = सिंह। सेर = शेर, हाबी, आतंकित करने वाला।

पद क्र.3 - ठाड़ो = खड़ी। जोग = योग्य। खरौ = खडी। छह हजारने = बादशाह द्वारा दिया जाने वाला एक ओटा पद। नियरे = पास। गैरमिसिल = बराबर न होना, अपमानजनक। गुसीले = क्रोधी। गुसा = गुस्सा, क्रोध। सियरे = नम्र, ठंडे। भनते = कहते हैं। बलधन लाग्यौ = उत्तेजित होने लगी। पातसाही = बादशाहत, दरबारी लोग। उड़ाई गए = उड़ गए। जिअरे = प्राण, होश। तमक = क्रोध, आक्रोश। निरखि = देखकर। स्याह = काला। नौरँग = औरंगजेब। सिपाह = सिपाही, सैनिक। पियरे = पीले।।

2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) 1613 2) चतुरंगिनी 3) छ.शिवाजी 4) भूषण 5) वीर 6) शेर

2.7 सारांश:

भूषण ने सारे देश का भ्रमण किया था। उन्होंने उस युग के प्राय: सभी ऐतिहासिक पुरुषों की चर्चा की है, जिन्होंने देश की राष्ट्रीय भावना की सुरक्षा में योगदान दिया था। उनमें से छ.शिवाजी और छत्रसाल को कवि ने अपने राष्ट्रोत्थान के लिए आदर्श रूप में ग्रहण किया और इनके अतिरिक्त प्रकीर्ण रचनाओं में सहूजी बाजीराव, सुलंकी, अवधूतसिंह आदि पर भी एक-एक, दो-दो कविता लिखी है। राष्ट्रीय साहित्य में प्राचीन संस्कृति और धर्म से प्रेरणा ली जाती है। उसी के माध्यम से उस देश के राष्ट्रवादियों को राष्ट्र रक्षार्थ ललकारा है। उस समय बहुत से राजाओं ने औरंगजेब का आश्रय ग्रहण किया था। केवल छ.शिवाजी ही औरंगजेब के प्रतिकार के लिए डटे रहे।

'शवा बावनी' से उद्धृत छंदों में छ. शिवाजी की वीरता, छ.शिवाजी का प्रताप, रान प्रस्थान का वर्णन, रान वर्णन, तलवार वर्णन, नगाडा वर्णन, हाथियों की चिघाड, आतंक वर्णन आदि अत्यंत प्रभावशाली हो चुका है। 'भूषण' भारतीयों के हृदय में चिरंतन स्थान प्राप्त कर चुके है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) कविवर भूषण का संक्षिप्त परिचय देते हुए भूषण के पदों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

2) पठित दोहों के आधार पर कवि भूषण की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न:

1) भूषण का जीवन परिचय लिखिए।

2) भूषण के काव्य की चर्चा कीजिए।

3) भूषण के वीर काव्य को स्पष्ट कीजिए।

4) छ. शिवाजी के प्रताप का वर्णन भूषण ने किन शब्दों में किया है विशद कीजिए।

5) छ. शिवाजी की चतुरंग सेना के प्रभाव का वर्णन भूषण ने किन शब्दों में किया हैं – स्पष्ट कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) रीतिकाल के अन्य कवियों की रचनाओं की जानकारी इकट्ठा कीजिए।

2) भूषण के समकालीन कवियों के साथ उनके कविता की तुलना कीजिए।

3) महाराष्ट्र के संत कवियों की जानकारी लेकर उनकी रचनाओं को हिंदी में अनूदित करने का प्रयास कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) हिंदी के प्रतिनिधि कवि–लेखक: डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, विद्या प्रकाशन, सी, 449, गुजैनी, कानपुर- 22

2) हिंदी के प्रतिनिधि प्राचीन कवि–लेखक: द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा।

3) शिवा बावनी

4) शिवराज भूषण

5) छत्रसाल दशक

❖❖❖

इकाई 3

आधुनिक कविता

7. 'द्रुत झरो'

– सुमित्रानंदन पंत

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

- 3.3.1 सुमित्रानंदन पंत जी का परिचय।
- 3.3.2 'द्रुत झरो' कविता का परिचय।
- 3.3.3 'द्रुत झरो' कविता का भावार्थ।
- 3.3.4 'द्रुत झरो' कविता की विशेषताएँ।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) सुमित्रानंदन पंत के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2) प्रगतिवादी काव्यधारा समझेंगे।
3) परिवर्तनवादी दृष्टिकोन को अपनायेंगे।
4) बाधक प्राचीन रुढि परंपराओं को नष्ट करने के बारे में सोचेंगे।
5) नये युग के नये मूल्य एवं नयी चेतना को स्वीकारने के लिए आगे बढेंगे।
6) प्रगति के लिए बदलाव की आवश्यकता को समझेंगे ।
7) नयी पीढी की युवाशक्ति पर विश्वास रखेंगे।

3.2 प्रस्तावना :–

प्रकृति के सुकमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी की ''द्रुत झरो'' बहुत ही प्रसिद्ध कविता है। कविता में जीर्ण पत्र पुरानी सडी गली परंपराओं का प्रतीक है। वास्तव में पूरे समाज में पूरानी मान्यताएँ, अंधविश्वास है। जिनका आज के जीवन में बिलकुल महत्त्व उपयोग नहीं है। ऐसी पुरानी मान्यताओं, पद्धतियों को जल्दी से जाना होगा, झडना होगा ताकि नये चिंतन का, नये दृष्टिकोन का विकास हो सके और प्रगति का पथ प्रशस्त हो सके। ये आधुनिक बोध और प्रगतिवादी चेतना की कविता है। नवयुग का स्वागत सुमित्रानंदन पंत जी ने इस कविता में किया है। सुमित्रानंदन पंत के काव्यं में कल्पना एवं भावों की सुकुमार, कोमलता के दर्शन होते हैं।

3.3 विषय विवरण

3.3.1 कवि परिचय : कवि सुमित्रानंदन का परिचय

सुमित्रानंदन पंत जी बहुमुखी प्रतिमा के संपन्न साहित्यकार थे। सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख कवि है, उनका जन्म अल्मोडा, उत्तर प्रदेश के कैसोनी में 20 मई सन् 1900 ई. में हुआ था। पिता का नाम पं. गंगादत्त पंत था। पंत जी के जन्म के बाद उनकी माँ का तुरंत ही देहांत हुआ। उनका पालन उनकी दादी ने किया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा (मॅट्रिक तक) अल्मोडा में हुई और इंटर अध्ययन के लिए इलाहाबाद आये। गांधी के विचारों का उनपर प्रभाव रहा है। इसलिए उन्होंने गांधी जी के साथ ''स्वाधीनता आंदोलन'' में सहभाग लिया था। बचपन से ही उन्हें कविता लिखना पसंद था। पंत जी का हिंदी, अंग्रेजी, बंगला भाषा पर प्रभुत्त्व हैं। पंत

प्रकृति के चतुर चितेरे है। प्रकृति पर सुंदर रचना लिखनेवाले ये सुकुमार कवि के रुप में जाने जाते है। पंत जी का निधन 28 दिसंबर 1977 को हुआ।

पंत जी ने खडीबोली भाषा और प्रबंधात्मक शैली का प्रयोग किया है। पंत जी की प्रथम कविता ङ्कङ्कगिरीजे का घंटाफ्फ़ 1916 में प्रकाशित हुई।

पंतजी की रचनाएँ – काव्यसंग्रह

1. लोकायतन	2. वीणा	3. गीत हंस	4. गुंजन
5. ग्रंन्थि	6. स्वर्णधूलि	7. उत्तरा	8. युगपथ
9. युगान्त	10. ग्राम्या	11. पल्लव	12. युगवाणी
13. स्वर्ण किरण	14. उत्तरा	15. चिदंबरा	
16. कला और बूढा चाँद	17. रश्मिबंधन	18. ग्रंथि	

उपन्यास – हार

नाटक – रजतरश्मि, शिल्पी, जोत्सना

- **पुरस्कार –**

पंत की रचना, ''कला और बूढा चाँद'' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। 'लोकायतन' पर, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार और 'चिदंबरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है।

3.3.2 ''द्रुत झरो'' कविता का परिचय –

'द्रुत सरो' कविता की रचना सन् 1934 ई. में हुई है। युगांत (सन् 1935 ई.) और पल्लविनी (सन् 1940 ई.) काव्यसंग्रह में यह कविता संकलित है। यह प्रगतिवादी विचारधारा की कविता है। कवि ने इसमें नवयुग का स्वागत करते हुए पुराने, रुढि-प्रथा-परंपरा, अंधविश्वास और पुरातन काल को छोडने की बात सामने रखी है। आधुनिकता के युग में कामहीन, विचारों को नष्ट करना है। यहाँ कवि ने जीर्ण सडे हुए और मृत पक्षी की उपमा पुराने विचारों देकर उन्हें जल्द से जल्द समाप्त करने के लिए कहा है। अगर पुराने गंदे विचार हम छोडते हैं तभी नये विचार स्वीकार कर सकते हैं। इससे संसार में नये युग का निर्माण होगा। इस तरह कवि यहाँ प्रगतिवादी चेतना को स्वर दे रहा हैं। पंत जी ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है। सजीव बिंब – विधान तथा ध्वन्यात्मकता भी पंतजी के शैली की विशेषता है। पंत जी संपूर्ण युग को प्रेरणा देनेवाले प्रेरणाशील कवि है।

3.3.3 ''द्रुत झरो'' कविता का भावार्थ –

प्रस्तुत कविता सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। उन्होंने इस कविता में प्रगतिवादी विचार रखे हैं। कवि ने यहाँ पर प्राचीनता के प्रति विद्रोह का स्वर व्यक्त किया है। तभी नये समाज का निर्माण होगा। दकियानुसी संस्कार रुपी पुराने पत्तों को, विचारों को जल्दी से झडने के लिए या नष्ट हाने के लिए कवि कह रहा है। यहाँ पेड के पत्तें, रुढीवादी विचारधाराओं, अंधविश्वासों का, परंपराओं का प्रतीक है। समाज पुरानी विचारधारा, अंधविश्वास, परंपराओं को त्याग ने से ही आगे बढेगा। यहाँ हिमताप के कारण पेड के पत्ते पीले पडे है और जब वसंत ऋतु आता है तब ये सडे हुए पत्ते वसंत से डरते हैं। मतलब नये विचारधारा से पुरानी विचारधारा डर जाती है ताकि उनको निकाल ना दिया जाय, गिरा ना दिया जाय इस बात से पुराने विचारोंवाले भयभीत है। पुरानी मान्यताएँ उदासीन है, निर्जीव है। अत: उनमें नवजीवन, नवप्रेरणा के जो विचार है वह पुरानी मान्यताओं में अब नहीं है। अपने सामाजिक पुराने रुढीवादी विचारों का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि समाज में परिवर्तन की लहर चल पडी है। यहीं कवि चाहते हैं।

पुराने विचारों का समय बीत चुका है, वे विचार निष्प्राण है। एक मरे हुए पंछी की लाश की तरह पुरानी मान्यताएँ होती है। पुरानें विचारों में ना ही सही शब्द है और ना ही सही अर्थ है। मरे हुए पंछी के पंख अस्त-व्यस्त पडे हुऐ है, वैसे ही ये पुरानी मान्यताएँ अस्त-व्यस्त है। पुरानी मान्यताओं में सफल जीवन की उडाने नहीं है। जैसे मरे हुए पंछी के पर अन्त में झडकर विलीन हो जाते है, वैसे ही पुरानी मान्यताएँ, विचार आज निष्प्राण हो चुकी है, इसलिए उन्हें त्यागना है।

पुराणे विचारों से चारों ओर जग में निरसता का जाल फैला है। नये विचारों से सबके शरीर में रक्त में नया उत्साह आ जाता है। अगर युवकों के विचारों में नवपरिवर्तन होगा तब फिर से समाज विकास की ओर जायेगा क्योंकि इस नवयुग में अंधविश्वासों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। चारों ओर नवीन विचारों से जीवन परिवर्तित हो जायेगा और जीवन में हरियाली और खुशहाली आयेगी, इससे नवजीवन का विकास हो जायेगा।

विश्व में नव युवक कों के आधुनिक विचार और उनकी ऊर्जा, उनके टेक्निकल (तांत्रिक) ज्ञान को अपना ने से समाज में एक नई आशा की किरण चारों और फैलेगी। 'ज्ञान' का उजाला फैलता रहेगा। साथ ही समाज में समरसता स्थापित होगी, क्योंकि प्रकृति खुद ही परिवर्तनशील है। पेड के शुष्क पत्र झडकर हमेशा पेड नव पल्लवित होते हुये दिखाई देते। इसलिये नई पीढी के विचारों को अवसर देना है। इस तरह विश्व में नवयौवन मंजरी उत्पन्न हो जायेगी और कोकिला अमर प्रेम के राग सुनायेगी। अर्थात् नये विचारों से जीवन ओर सुंदर बनेगा, ऐसा कवि वर्णित करता है।

परिवर्तन ही कवि का मुख्य उद्देश्य है। नई पीढी के साथ, नये विचारों को लेकर चलने की सलाह पंत ने यहाँ पर दी है।

3.3.4 ''द्रुत झरो'' कविता का विशेषताएँ –

1. नवयुग के निर्माण की भावना सबके मने में जगाने में पंत जी सफल रहे।
2. पुराने मान्यताओं, विचारों को नष्ट करना और अंधविश्वास, रुढि, प्रथा–परंपराओं को नकारने का साहस पंत जी में है।
3. पूराने विचार, सडी–गली मान्यताएँ सचमुच निर्जीव हो चुकी है। उन्हें बदलने की, नकारने की जरुरत है।
4. समाज परिवर्तन ही पंत जी का मूल उद्देश्य है।
5. नवयुग के साथ अगर हम चलेंगे तो ही विश्व में भारत सबसे आगे होगा यह कवि का विश्वास है। इसलिए कवि परिवर्तनशील समाज से आग्रह, मांग करता हुआ दिखाई देता हैं।
6. इस कविता में यमक, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग करने में पंत जी सफल रहे।
7. पंत जी प्रकृति के चतुर चितेरे हैं यह इस कविता से साबित होता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

1. द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र का अर्थ................ है।

   अ) पुरानी सोच   ब) पीले पडे हुए पत्ते

   क) सडी गली मान्यताएँ   ड) पुराना पत्र

2. 'द्रुत झरो' कविता के कवि .... है।

   अ) निराला   ब) नागार्जुन   क) सुमित्रानंदन पंत   ड) मुक्तिबोध

3. पंत जी ने विगत युग को .... कहा है।

   अ) निष्प्राण   ब) आधुनिक   क) पारंपरिक   ड) प्राचीन

4. 'द्रुत झरो' कविता में पत्ते पिले............ से पड गये है।

   अ) हिमताप   ब) पानी न मिलने   क) बारिश   ड) रासायनिक खाद

5. कंकाल जाल .... में फैले।

   अ) बाग   ब) घर   क) जग   ड) पानी

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ –

1) कंकाल – अस्थिपंजर,	2) नवल – नई,	3) पल्लव – नए लाल पत्ते,
4) मर्मर– ध्वनि,	5) मुखरित–ध्वनित	6) मांसल – सजीव,
7) मंजरित – फूल से लदे हुए,	8) पिक – कोयल,	9) दुत – तेजी से,
10) जीर्ण – पुराने,सडे हुए,	11) पत्र–पत्ते,	12) शुष्क – सूखा,
13) क्षीण – दुर्बल,	14) वीतराग– विरक्त,	15) पुराचीन– प्राचीन,
16) विहंग – पक्षी,	17) अन्तत – जिसका अन्त न हो, अमर,	
19) ताप – धूप,	20) जड – निर्जीव,	21) झरो – नष्ट होना

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

1) सडी गली मान्यताएँ 2) सुमित्रानंदन पंत 3) निष्प्राण

4) हिमताप 5) जग

3.7 'द्रुत झरो' कविता का सारांश –

इस कविता में पंत जी ने पुराने युग की व्यवस्था को नष्ट करने के लिए कहा है। पेड के सुखे हुए पीले जर्जर पत्ते विगत आयु और युग का सूचक है।

सडे पत्तों का एकमात्र अंत है कि वह टूटकर गिर जाते और तभी उस डाली पर नए पत्ते अंकुरित होते। वैसे ही सडी गली परंपराओं, अंधविश्वासों के जाने का समय आ गया है। उनके जाने के बाद नवयुग आयेगा और नवयुग के, विकसित समाज में अंधविश्वास, अज्ञान के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा।

नया विचार, नई मान्यताएँ, नव युवकों के शरीर में उत्साह युक्त नया रक्त भरेगी और निष्प्राण पुरातन युग चला जाऐगा। परिणामत: जीवन में फिर से खुशहाली, हरियाली छा जाऐगी।

विश्व में नवयुवा शक्ति के कारण उत्साह, आनंद फैलेगा, इसी कारण मधूर स्वरोंवाली कोकिला आनंद भरा, अमर प्रेम के, सफलता के, सुंदर जीवन के गीत गायेगी।

पंत जी का यहाँ प्रकृति के प्रति तल्लीनता स्पष्ट हुई है। साय ही परिवर्तनवादी गतिवाद का भाव ही झाँकी को प्रस्तुत करता है।

अंत में कवि का उद्देश्य यह है कि संसार में नवयुग का आगमन हो और समस्त विश्व में नयें विचारों की खुशबू फैले।

कवि ने भाषा सरस, साहित्यक रुप में हमारे सामने रखी है, साथ ही प्रतीकात्मक शैली और रुपक और अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग किया है।

3.8 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1) सुमित्रानंदन पंत जीवन का परिचय

2) सुमित्रानंदन पंत का कृतित्व

3) 'द्रुत झरो' कविता का मूल उद्देश्य

4) 'द्रुत झरो' कविता के कवि पुराने विचार संबधी मत

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'द्रुत झरो' कविता का आशय लिखिए।
2. 'द्रुत झरो' कविता में व्यक्त विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य –

प्रस्तुत कविता को पढने बाद '21 वी सदी का भारत' इस विषय निबंध लिखिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत
2. कला और बूढा चाँद – सुमित्रानंदन पंत

8. तीनों बंदर बापू के

नागार्जुन

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 नागार्जुन जी का परिचय।

3.3.2 'तीनों बंदर बापू के' कविता का परिचय।

3.3.3 'तीनों बंदर बापू के' कविता का भावार्थ।

3.3.4 'तीनों बंदर बापू के' कविता की विशेषताएँ।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1. प्रगतिशील काव्यधारा से परिचित होंगे।
2. नागार्जुन के व्यक्तित्त्व और कवित्त्व को समझेंगे।
3. कवि ने समाज की बुराईयों को लोकभाषा के माध्यम से सामने रखा है, इसे जान सकेंगे।

4. बापूजी के तीनों बंदरों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक व्यंग्य को समझेंगे ।

5. प्रस्तुत कविता में महात्मा गांधीजी के तीनो बंदरों के प्रतीकात्मक रूप से परिचित होंगे।

6. नागार्जुन जी के साहित्यिक व्यंगात्मक रूप से रूबरू होंगे।

3.2 प्रस्तावना

नागार्जुन को जनकवि के रूप में जाना जाता। नागार्जुन ने भारतीय राजनीति को अपने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा सामने रखा है। ङतीनों बंदर बापूफके यह नागार्जुन की बहुत ही लोकप्रिय कविता है। तत्कालीन अव्यवस्था तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वराज्य सपने को और सुव्यवस्था के न चलने के कारण यह कविता नागार्जुन ने लिखी। कई लोगों ने गांधीजी के आदर्श का ढोंग रचाकर, सिर्फ सत्ता की खुर्सी हासिल की और जनता को दिये गये वायदे कभी भी पूरे नहीं किये। राजनेताओं की कथनी और करनी में जो भेद है वह इस कविता द्वारा नागार्जुन ने हमारे सामने गांधीजी के तीनों बंदर आदर्श के प्रतीक के रूप में गांधीजी के मूल्यों के प्रचारक है, लेकिन राजनेताओं ने गांधीजी के आदर्शो को सिर्फ अपने प्रचार के लिए इस्तेमाल किया है और चुनाव जीतते ही खुर्सी मिलने के बाद उन्होंने अपने परिवार की, सबसे पहले गरीबी हटाई है। बुरा सुनकर, बुरा बोलकर और बुरा देखकर वे सत्ता का मजा लूट रहे है। इस तरह नागार्जुन ने जनता को गांधी के नामपर लुटनेवाले लुटेरों के, सच को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। आजादी के बाद भी जब कवि की आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुई तो उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक जीवन के प्रति रोष प्रकट किया।

3.3 विषय विवरण

3.3.1 नागार्जुन जी का परिचय।

नागार्जुन हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था। परंतु मैथिली में ङयात्रीफउपनाम से रचनाएँ की। इनका जन्म बिहार राज्य के दरभंगा प्रमंडल के अंतर्गत मधुबनी जिले के सतलेखा नामक गॉव में सन् 1911 में हुआ। नागार्जुन जब चार वर्ष के थे तभी उनके सिर पर से माता का छत्र चला गया, परिणाम: उनका पालन–पोषण उनके पिताजी ने किया। उनके पिताश्री गोकुल मिश्रा एक किसान थे और खेती के अलावा पुरोहिती आदि के सिलसिले में बाहर के इलाकों में आया–जाया करते थे। उनके साथ–साथ बचपन से नागार्जुन भी 'यात्री' हो गए ऐसे रुढिवादी मैथिली ब्राह्मण परिवार में उनका बचपन गुजरा।

रचनाएँ :

काव्य – 'युगधारा सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी पथराई ऑखें', 'भस्मांकुर', 'खून और शोलें', 'चना जोर गरम, शपथ', 'प्रेत का बयान।'

उपन्यास – 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'बाबा बटेसरनाथ', 'नयी पौध', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'उग्रतारा', 'सुभीपाक', पारो, 'आसमान में चाँद तारे'।

व्यंग – अभिनंदन

निबंध संग्रह – अन्नहीतम क्रियानाम

बालसाहित्य – कथा मंजरी भाग –1, 2, मर्यादा पुरुषोत्तम, विद्यापति की कहानियाँ

अनुवाद – मेघदूत, गीत गोविंद, विद्यापति के गीत।

संपादक – दीपक, विश्वबंधु, कौमी बोली

मैथिली रचनाएँ – पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य), हीरक जयंती – उपन्यास

पुरस्कार – 1969 ई 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। 1994 में साहित्य अकादमी फेलो के रुप में नामांकित कर सम्मानित भी किया था।

3.3.2 ''तीनों बंदर बापू के'' कविता का परिचय।

प्रस्तुत कविता सन् 1969 ई. में नागार्जुन द्वारा लिखी गई है। प्रस्तुत कविता में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तीनों बंदरों को याद किया है। प्रासंगिकता यह है कि स्वयं गांधीजी काँग्रेस के सूत्रधार थे परंतु स्वयं काँग्रेस में कभी नहीं थे, लेकिन काँग्रेस के कुछ मूल नेताओं ने कैसे गांधीजी के उसूलों को और अपने कर्तव्य को हाशिए पर रखकर मजे ले रहे थे। गांधी के तीन बंदरों के आडे में समाज के सफेदपाश किस तरह मगरुर हो रहे है यह बताया गया है।

3.3.3 ''तीनों बंदर बापू के'' कविता का भावार्थ।

''तीनों बंदर बापू'' इसमें बापू यानी महात्मा गांधी जो भारत के राष्ट्रपिता थे। राष्ट्रपिता के तीनों बंदरों को हमने बचपन से सुना है जो गांधीजी के मूल्यों के प्रतीक है। उनकी विशेषता यह है की बूरा मत देखो, बूरा मत बोलो और बूरा मत सुनो। इन्हीं मूल्यों के आधार पर गांधीजी के तीनों बंदर हमें जीवन जीने का सही तरीका सीखाते हैं। ये तीनों बंदर आदर्शों के प्रतीक है लेकिन इस कविता में हमें देखना है कि ये बापू के तीन बंदर किस तरह से बदलकर देश की आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ बदलते हैं। कवि यह व्यंगात्मक शैली में बताते हैं। बापू के तीनों बंदर महात्मा गांधी के भी ताऊ निकले, उनसे भी आगे निकले और भी व्यवहारी, ज्ञानी, कुशल निकले। गुरु से भी आगे शिष्य है। सरल सूत्र को उलझाया गया है (बिगडा गया है) जो लोग दूसरों को उलझाते हैं वह दूसरों को जीवनदान दे सकेंगे? क्या वे बंदर रुपी इन्सान सचमूच ज्ञानी है? ध्यानी है? वे अपने

ज्ञान, ध्यान से जल थल पृथ्वी पर उनका ध्यान रखते है। तीनों सीमाओं की रक्षा करनी है इसलिए ये तीनों घूमते हैं। कृष्ण की लीलाओं से भी अधिक नटखट है।

यहाँ नटवरलाल ये शब्द 'ठग'अर्थ में प्रयुक्त है। ये धोखाधडी करनेवाले, सभी लोग दूनिया भर में फैले हुये है। वे पीढी दर पीढी आगे चल रहै है। ये भ्रष्टाचारी लोग सौ साल तक रहेंगे। ये नटवरलाल घोडे की तरह चलकर, दौडकर भ्रष्टाचार कर रहे है। सभी ओर नटवरलाल फैले हुये है। नागार्जुन यहाँ भ्रष्टाचारी लोगों की तेज दौड को रोखना चाहते है।

यहाँ पर तीनों बंदर बापू के यह शब्द प्रतीकात्मक रुप से लिया है। इन भ्रष्टाचारी लोगों की उम्र बहुत होती है। ये हमेशा खुश रहते हैं, ये बूढें होते है मगर जवानों जैसी हरकतें करते हैं। वे परम चतुर है। गांधीजी के जयंती को सौं वर्ष पूरा हो जाने पर उनकी सौंवी मनाकर ये नटवरलाल बापू को ही बना रहे है। क्योंकि बापू के तीनों बंदर जो सही कर रहे थे बिलकुल ये नटवरलाल के झूठे तीनों बंदर उल्टा करके अपना उल्लू सीधा कर रहे है।

अत्याचारी नटवरलाल का चारों तरफ बोलबाला है। इसीलिए ये नटवरलाल छोटे बच्चों के हाथों किताब के बजाय, राजनेताओं के झंडे देकर उन्हे मालामाल करते हैं। शिक्षा को छोडकर नई पीढी के हाथों बंदूकें, लाठियाँ, झंडें दिये जा रहे हैं। उनको अमीर बनाया जा रहा है। साथ ही बच्चों के परिवारवालों को ये नटवरलाल खुश करते है और भ्रष्टाचारी पैसों से उनके घरों को बसाया जाता है।

बापू के तीनों बंदर व्यापारियों को ही अधिक फायदा करा रहे है। यहाँ कुछ साधू संत के प्रवचनों को जनता पर लादा जा रहा है। उन्हें धार्मिक बनाया जा रहा है। सत्य-अहिंसा आज किस तरह लूट रही हैं, तोडी जा रही है। ये बंदर अपनी पूँछ से अपनी प्रतिमा आँक रहे है। जैसे बेमतलबी पूँछ (चाटुगिरी) को ज्यादा महत्त्व दिया जा रहा है। दल के उपर, नीचे ये बंदर अपनी कला दिखा रहे है। बार-बार लोगों को गुमराह कर रहे है और ये तीनों बंदर बहुत खुश हो रहे है की हमने जनता के दल के उपर नीचे रहकर, कैसे उन्हें उल्लू बनाया है और अपना स्वार्थ निकाला है।

आज समाज में एक तरह से फरेब का जाल बनाया जा रहा है, इसमें गीता को गलत अर्थ में रखा जा रहा है। सभी धर्मो के पुराण को ढाल बनाकर बहुत सारा पैसा कमाया जा रहा है इसलिए अनेक धर्म के समाज के दलाल आज अच्छे हाल में स्थित में है। ऐसे दलाल नटवरलाल के सच रुप में सभी जगह पर निर्माण होते हुये दिखाई देते है।

यहाँ पर कवि कहना चाहते है के ये नटवरलाल सामान्य लागों की मुंडी मरोड कर पुरे दुनिया को अपनी मुट्ठी में रखे हुए है। ये तीनों बंदर आसमान को भी चिढा रहे है मतलब की वे खुद को आसमान से उँचा मानते है। ये तीनों बंदर सरकारी पैसों से हवाई जहाज से परदेस यात्रा कर रहे है। हर एक क्षेत्र में भ्रष्टाचार कर रहे है।

हर समय एक क्षेत्र में न रहकर अलग-अलग क्षेत्र में जाकर भ्रष्टाचार कर रहे है। यानी हर क्षेत्र में भ्रष्ट्राचारयुक्त मलाई खा रहे है। गांधीजी का छाँप खुद पर मारकर सबको धोका दे रहे है। ये गांधीजी के बंदर असली होने का दावा करते हैं मगर ये सर्कस के जैसे झूठे नकली है, दिखावटी है, डाकू रुपी बंदर है।

नागार्जुन कहते है नटवरलाल जैसे लोग खुद को सिर्फ लोकसेवक दिखाते हैं लेकिन उनका अपना व्यक्तिगत स्वार्थ होता है। अपने शौक पूरे करते हैं। काले बाल करके शौकिन रहते है। ये झूठे आज समाज के रक्षणकर्ता बने है और बहुत पैसा कमाकर गगन को चूमते है। वे आगे जाकर आर्थिक स्थिति के साथ, शरीर से भी फुलते है। लेकिन ऐसे नटवरलाल का एक ना एक दिन बूरा हाल होता हुआ दिखाई देता है।

बापू के बंदर एक आदर्श जीवन के मार्गदर्शक है लेकिन आज वहीं तीनों बापू के बंदर बापू के जाने के बाद हमें अंगूठा दिखा रहे है। हमें बूरा भला कह रहे है। ये तीनों बंदर अब हमें बुरा सिखा रहें है। ये तीनों बंदर आज प्रेम में पागल है और उनकी पाँचों उँगलियाँ घी में है। अच्छा पकवान खाकर सुसस्ता गये है। अब उन्हें किसी बात की कमी नहीं है। ये तीनों बंदर गुरुओं के गुरु बनें है, वे आज अपने गुरु को ही सीखा रहे है कि किस तरह से भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार करना है। सौ वर्ष के बाद परिस्थितियाँ बदली है। तीनों बंदर बापू के जो आदर्शवाद के प्रतीक थे, आज वह बापू को ही बना रहे है, उनको ही फँसा रहे है।

इसी तरह नागार्जुन ने बापू के समय के तीन बंदर जो सत्य, अहिंसा के प्रतीक है वहीं सौ साल के बाद के तीनों बंदर बापू के जाने के बाद भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, अहंकारी बने हुये समाज को धोका दे रहे है। यह सच कवि ने हमारे सामने रखा है।

3.3.3 'तीनों बंदर बापू के' कविता की विशेषताएँ।

1. नागार्जुन की यह कविता स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीतिक अव्यवस्था को दर्शाती है।
2. राजनीतिक व्यंग्य के लिहाज से यह एक महत्त्वपूर्ण कविता है।
3. यहाँ पर गांधी जी के शिष्यों तथा उनके सिध्दांतों पर चलने वाले उनके अनुयाङ्गिों की पोल खोलने में नागार्जुन सफल रहे हैं।
4. गांधीजी के तीनों बंदरों को लेकर नटवरलाल चारों दिशा में फैले और अपने झूठ के जाल से दुनिया को फँसाकर सौ साल तक जीने का इरादा रखते हैं।
5. गांधी के भक्त उनके तीनों बंदरों को लेकर प्रचार करते हैं मगर उनकी कथनी और करनी में बहुत फर्क दिखाई देता है।

6. आझाद भारत के राजनेता, आज जनता से अलगाव रखकर गांधीजी को भूला रहे हैं।

7. व्यंग्यांत्मक लहजे में नागार्जुन इन नेताओं को परम ज्ञानी, ध्यानी कह कर उनकी पोल खोलने में सफल रहे है।

8. आज हर राजनेता बडे-बडे सेठों का हित देखते है। निजीकरण के बहाने पूँजीपतियों को और भी अमीर बनाने की राजनीति कवि ने बेजिझक सामने रखी है।

9. सत्ता के सुख की चमक सेठों राजनेताओं के गाल पर दिखाई देती है और ये भ्रष्टाचार की चमक सौ साल तक चलेगी ऐसा उन्हे विश्वास है।

10. आज गुरु का बनकर उसे भ्रष्टाचार की नई विद्या सिखाई जा रही है। ऐसे भ्रष्टाचारी राजनेता का असली चेहरा नागार्जुन अपने कविता के माध्यम से सामने लाते हैं।

11. बापू के तीनों बंदर - बूरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बूरा मत बोलो ये संदेश देते है, मगर आज के राजनेता इन बंदरों का गलत उपयोग करके बूरा सुनकर, बुरा देखकर, बूरा बोलकर सफलता की ऊँचाई पर है। यह बडी दुख की बात कवि ने सामने रखी है।

12. कवि ने उसके समय के राजनीतिक सच्चाई को व्यंग्यात्मक लहजें में प्रस्तुत करते हुये भारत के राजनीति में बापूजी का योगदान अहम् दिखाया है। मगर आज गांधीजी के सिध्दांतों की बली चढाई जा रही है यह दिखाई देता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न -

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. तीनों बंदर .... के है।

    अ) बापू ब) काका क) चाचा ड) मामा

2. तीनों बंदर बापू के कविता कवि .... है।

    अ) महादेवी वर्मा ब) कुँवर नारायण क) नागार्जुन ड) निराला

3. बापू के भी .... निकले तीनों बंदर बापू के।

    अ) मामा ब) बाबा क) ताऊ ड) चाचा

4. .... के हित साध रहे है तीनों बंदर बापू के।

अ) डॉक्टर ब) सेठ क) फकीर ड) बच्चों

5. गुरुओं के भी ....बने है तीनों बंदर बापू।

अ) मित्र ब) शत्रू क) गुरु ड) पडोसी

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दावली –

1. ताऊ – पिता के बडे भाई को ताऊ कहते है।
2. सर्वोदय – सबकी उन्नति, सब की प्रगति
3. नटवरलाल – ठगनेवाला
4. बरसी – मृतक का वार्षिक श्राध्द
5. सौवी – सौ वर्ष
6. झूल – वह चौकोर कपडा जो प्राय: शोभा के लिए घोडों, बैलों, हाथियों आदि की पीठ पर डाला जाता है।
7. मूँडना – सुक जाना (तार मुडना, लोहा मुडना)
8. चटकीला – रंगीन
9. हिकमत – बढिया, तरकीब, उत्तम युक्ति
10. बनाना – बनावट

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर –

1) बापू 2) नागार्जुन 3) ताऊ 4) सेठ 5) गुरु

3.7 सारांश

1. नागार्जुन की चर्चित यह लोकप्रिय व्यंग्य कविता है।
2. नागार्जुन जी ने तींनों बंदर बापू के इस कविता के माध्यम से वर्तमान राजनीति पर तीखें प्रहार किये है।
3. बापू जी के असली तीनों बंदर जो है उनका उद्देश्य बिलकुल अलग, शुध्द, सत्य, अहिंसा से युक्त है। लेकिन आज के राजनीति में अपनी प्रगति के लिए इन तीन बंदरों को झूठी कृति लिए उकसा रहे हैं।

4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वराज, रामराज्य जैसे सपनों के भंग होने से नागार्जुन अपनी दुखी मनस्थिति को यहाँ प्रस्तुत करते है।

5. नागार्जुन ने गांधीवादी मूल्यों और आदर्शो की आड में सत्ताधारी नेताओं की कथनी और करनी के भेद को सामने रखा है।

6. राजनेता सत्ता से चिपके रहने के लिए गांधी जी के नाम का गलत उपयोग कर रहे है।

7. बापूजी के ये बंदर बुरा न देखो, बुरा न सुनो, बुरा ना बोलो, के सिध्दांतों को दर्शाते हैं। लेकिन आज भारत की राजनीति में बापू के तीनों बंदरों का सिर्फ खुर्सी पाने तक ही उपयोग किया हैं।

8. नागार्जुन ने इस कविता के माध्यम से राजनीतिक दलालों, नेताओं की पोल खोलनेवाले व्यंग्य का उपयोग किया है। तो दूसरी और राजनेताओं द्वारा शोषण किये जानेवाले जनता की व्यथा, का भी वर्णन किया है।

3.8 स्वाध्याय –

अ) टिप्पणियाँ

1. नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व
2. बापूजी के असली तीनों बंदरों का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए
3. ‘तीन बंदर बापू के’ गांधीजी का विचार
4. ‘तीनों बंदर बापू के’ कविता में चित्रित नटवरलाल

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1. ‘तीनों बंदर बापू’ के कविता का आशय लिखिए।
2. ‘तीनों बंदर बापू’ के कविता के माध्यम से कवि ने वर्तमान राजनीति पर कैसे प्रहार किया है।

3.9 क्षेत्रीय कार्य –

ङतीनों बंदर बापूफ के कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन –

1. नागार्जुन : कवि और कथाकार सत्यनारायण
2. नागार्जुन की कविता : अजय तिवारी

9. औरत

चंद्रकांत देवताले

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरन

- 3.3.1 चंद्रकांत देवताले का परिचय।
- 3.3.2 'औरत' कविता का परिचय।
- 3.3.3 'औरत' कविता का भावार्थ।
- 3.3.4 'औरत' कविता की विशेषताएँ।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य –

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. नारी विषयक कविताओं को स्पष्ट रुप से समझ सकेंगे।

2. कवि चंद्रकांत देवताले जी के नारी संदर्भ में व्यक्त विचार को जानेंगे।

3. सर्वहारा वर्ग की 'आम' नारी तथा शोषित, पीडित नारी की समस्याएँ समझ सकेंगे।

4. देवताले जी कविता में चित्रित नारी के स्वतंत्र अस्तित्त्व की सच्चाई से परिचित होंगे।

5. इस कविता के माध्यम से अनेक प्रतिकों, बिंबों के साथ कविता का भाव भी समझ सकेंगे।

6. कवि देवताले जी के गजलकार रुप से रुबरु होंगे।

3.2 प्रस्तावना –

नारी ईश्वर की सबसे हसीन देन है। अत: संपूर्ण भारतीय समाज नारी को समर्पन की अधिष्ठात्री मानता है। लेकिन नारी की बहुमुखी योग्यता के बावजूद हमारे पुरुषवादी समाज ने उसे उचित सम्मान नहीं दिया हमेशा उसके साथ दुय्यम दर्जे का व्यवहार किया है। अगर नारी आधी अधूरी रहेगी तो समाज की प्रगति नहीं होगी इसी कारण समकालीन कवि चंद्रकांत देवताले की कविताओं में भी भारतीय स्त्री की दयनीय स्थिति का विविध रुपों में मार्मिक चित्रण हुआ है। वस्तुत: स्त्री संवेदना के जो बहुरुपी मर्मिक चित्र देवताले ने अपनी कविताओं खिंचे है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसलिए उनके कविताओं में संपूर्ण 'औरत' जाति का संघर्ष, पीडा मूर्तिमान हो उठा है। अत: उन्होंने अपनी कविता 'औरत' में आज की मध्यवर्गीय नारी को मुख्य विषय बनाया है।

3.3 विषय विवरण –

3.3.1 कवि परिचय –

साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर चंद्रकांत देवताले का जन्म, 7 नवंबर सन् 1936 ई. में जौलखडा गाँव, जिला, बैतूल, मध्यप्रदेश में हुआ। आपकी उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में हुई तथा एम. ए. और पीएच.डी. हिंदी विषय में करने के बाद आप प्राध्यापक बनें। इस तरह वे उच्च शिक्षा में अध्यापन कार्य से जुडे, साथ ही वे साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख कवि रहे है। उन्होंने अखबारों में लिखा है तथा कविताएँ भी लिखी है, साहित्य का अनुवाद और समीक्षा करना आदि कई साहित्यिक गतिविधियों से वे जुडे हुए पाते है।

उनकी कविताओं में समय और संदर्भ एक दूसरे से संबंध रखते हुये दिखाई देते हैं। उनकी कविताओं में समकालीन समय की भी प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है तथा उनके कविताओं की जडें गाँव, कस्बों के निम्नमध्यवर्गी जीवन में बसी है। इसी कारण उनकी कविता का केंद्रबिंदू 'आम इन्सान' है। देवताले जी प्रगतिवाद से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी रचनाओं में हमेशा वास्तविकता का ही चित्रण किया है। इसलिए उन्होंने भारतीय नारी का वास्तव चित्र 'औरत' कविता में स्पष्ट रखा है।

चंद्रकांत देवताले की प्रमुख रचनाएँ –

प्रमुख काव्यसंग्रह

1. हड्डियों में छिपा ज्वर – 1973
2. दीवारों पर खून से – 1975
3. लकड बग्धा हँस रहा है। – 1980
4. रोशनी के मैदान की तरफ – 1982
5. भूखंड तप रहा है। – 1982
6. आग हर जगह में बताई गई थीं। 1987
7. बदला बेहद मेहंगा सौदा – 1995
8. पत्थरों के बैंच – 1996
9. उसके रुपन – 1997
10. इतनी पत्थर रोशनी – 2002
11. उजाड में संग्रहालय – 2003
12. जहाँ थोडासा सुर्योदय होगा – 2008
13. पत्थर फेंक रहा हूँ – 2011

आलोचना – मुक्तिबोध कविता और जीवन विवेक।

अनुवाद – पिसाटी का बुर्ज (दिलीप चित्रे की कविताएँ, मराठी से अनुवाद)

3.3.2 'औरत' कविता का परिचय :–

चंद्रकांत देवताले रचित 'औरत' कविता उनके ही ''लकड बग्धा हँस रहा है'' (प्र.सं.1980) इस कविता संग्रह में संकलित है। प्रस्तुत कविता में मध्यवर्गीय 'औरत' के करुण रुप को उजागर किया है जो कवि के व्यक्तित्व और स्वभाव का अंतरंग का पहलू है।

कवि ने इस कविता के माध्यम से अपनी माँ और पत्नी को व्यक्त करने का प्रयास किया है। भारत की मध्यवर्गीय नारी का जीवन किस तरह संघर्षो से भरा है यहीं कवि इस कविता द्वारा दिखाना चाहता है।

भारतीय संस्कृति में औरत को देवी समान माना जाता है लेकिन आगे चलकर औरत एक ङ्गभोग्याफ्के रुप में दिखाई देती है। अत: आज के जमाने में औरत को सभी भूमिकाओं से गुजरना पडता है। भारत की मध्यवर्गीय नारी संस्कारों से दबी हुई है और उसी संस्कारों के अतिक्रमण से नारी का शोषण होता हुआ नजर आ रहा है। कवि ने इस कविता के जरिए औरतों पर जो गुजरी है उसके कटू अनुभव बयान किये है और वहीं अनुभव अब हमारे बने हुये है। औरत के बारे में जो करुणा का भाव उभरना चाहिए वह आज गायब होता हुआ नजर आ रहा है लेकिन कवि आज औरत का वास्तविक रुप हमारे सामने रखकर उसने जो देखा है भोगा है जो अनुभव किया है उसे अपनी काव्य पंक्तियों द्वारा सामने रखने का प्रयास करते है।

'औरत' हमेशा अपने आपको साबित करने के लिए संघर्षरत रहती है। औरत मूलत: आत्मसम्मानी है, उसको अपना अस्तित्त्व कायम रखने के लिए बहुत सारी परीक्षाओं से गुजरना पडता है और यहीं उसका संघर्ष, कवि की आखों से नहीं छिप सका है। अत: देवताले जी की कविताओं में नारी का गरिमामय रुप तथा संघर्षरत रुप दिखाई देता है लेकिन आज नारी का सच्चा रुप उसे अपनी पहचान बनाने नहीं देता। कवि ने अपनी कविता में संपूर्ण औरत जाति का संघर्ष एवं पीडा को मूर्तिमान किया है। इस दृष्टि से देवताले जी की कविता ङ्गऔरतफ अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

3.3.3 औरत कविता का भावार्थ :-

प्रस्तुत कविता में कवि ने अपनी ङ्गअस्मिताफ खोजती हुई स्त्री का वर्णन किया है। स्त्री का संघर्ष प्रति के साथ जोडा है। जैसे शताब्दियों से स्त्री एक तरह का जीवन जी रही है और वह उसकी नियति बनी है। वह आकाश और पृथ्वी के बीच कपडे धो रही है और अपने को बेदाग सिद्ध कर रही है। यानी सदियों से एक तरह का कष्टप्रत जीवन जीकर खुद को हमेशा से सरल सीधा साबित करने की कोशिश में है। उसे बदलाव की अपेक्षा है मगर यहीं काम कष्ट उसके माथे पर थोपकर उसे उसकी नियति से जोडा है। सदियों, शताब्दियों से औरत को यही करना अनिवार्य किया है। यहीं उसका नसीब है ऐसा चित्र समाज ने बनाया है।

शताब्दियों से वह कपडें धो रही है और धूले कपडे धूप में सूखा रही है। वह आकाश और हवा से अलिप्त होकर धुप्प गुफा (अंधेरी गुफा) में हमेशा से रसोई पका रही है मतलब घर की चार दीवारों के अंदर, अंधेरा से युक्त धुँएधार रसोईघर में खाना पकाना बरसों औरत का काम रहा है।

औरतें हमेशा घर के सब काम करती है मतलब रसोई पका कर, घर के कपडे धोना, घर साफ रखना, परिवार के सब सदस्यों के खयाल रखना, ये सब करके उसे खेतों में भी काम करना पडता है। वह समय की नदी में दोपहर रुपी पत्थर से सदियों से अपनी एडियाँ घीस रही है यानी सदियों से वह समय के पहिये की तरह ये सब काम कर रही है। औरत पृथ्वी को समेटे हुये अपनी माँ रुपी भूमिका में जाकर अपने बच्चों को दूध पिला रही है। अपनी

संतान का अच्छी तरह से पालन–पोषण कर रही है। साथ ही घाँस के गट्टर का बोझ सिर पर लादकर धरती को नाप रही है मतलब घाँस सिर पर लेकर जल्दी–जल्दी खेत से काम करके घर की ओर जा रही है ताकि रात का खाना भी उसे ही जाकर पकाना है इसलिए वह जल्दी चलने के लिए बेबस है।

औरत दिनभर उपर्युक्त सभी कष्टयुक्त काम करती है और रात को उसे खर्राटे लेनेवाले पति के पास उसके खर्राटे सुनते हुऐ जागना पडता है पति के खर्राटों के आवाज से उसे निंद भी नहीं आती फिर भी ऐसे खर्राटे भरनेवाले पति के पास अपनी पूरी सूरक्षा सौंपकर उसे रहना है और शताब्दियों से ऐसे घोडे बेचकर सोनेवाले पति के साथ वह रह चुकी है। सदियों से पुरुष के अंहकार और श्रेष्ठता के भाव के आगे उसे झुककर सब चुपचाप सह रही है और उसे अपना सारा जीवन इसी मजबूरी में गुजारना पडा है।

नारी का अपना कोई अलग अस्तित्त्व नहीं है। केवल सदियों से उसे मेहनत करना और परिवार की सेवा करना ही उसे सिखाया गया है। इसलिए वह आज अपना खुद का पता हर एक से पूछ रही है। उसका अपने खुद के लिए क्या कोई भी कर्तव्य नहीं है? या सिर्फ दूसरों के लिए जीना–मरना है? औरत बार–बार दूसरों से पूछ रही है की वह क्या है? इस तरह वह आज अपने अस्तित्त्व की खोज करती हुई दिखाई देती है।

3.3.4 औरत कविता की विशेषताएँ :–

1. संपूर्ण भारतीय समाज नारी के ममतामयी, करुणामयी, त्यागमयी, प्रेमरुपी, समपर्णमयी, अधिष्ठात्री युक्त भूमिका का गौरव करता है।
2. हमारे भारतीय समाज ने नारी के बहुमुखी योग्यता के बावजूद उसे उचित सम्मान प्रेम नहीं दिया हमेशा ही उसके साथ दुय्यम स्तर का, दर्जे का व्यवहार किया है। उसे 'भोग्या' मानकर अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति का परिचय दिया है। ऐसी शोषित नारी की करुण कथा को ङ्गऔरतफ कविता द्वारा अभिव्यक्त किया है।
3. देवताले की 'औरत' कविता में भारतीय स्त्री की दयनीय स्थिति का विविध रुपों में मार्मिक चित्रण हुआ है।
4. औरत की करुणा, कोमलता, स्नेह आदमी की सबसे बडी शक्ति होती है। फिर भी आज शोषित नारी पुरुष प्रधान संस्कृति में हर प्रकार के अत्याचार को अन्याय को शांति से सहती है। इसी कारण देवताले के 'औरत' कविता में संपूर्ण 'औरत' जाति का संघर्ष एवं पीडा मूर्तिमान हो उठी है। इस दृष्टि से यह कविता बहुत विशेष रही है।
5. प्राचीनकाल से आज तक बहुत से बदलाव हो चुके है लेकिन क्या नारी की स्थिति बदल चुकी है? अगर बदली भी है तो उसे शिक्षित होकर नौकरी करने के बाद भी पूरा घर, परिवार संभालकर बच्चों का

पालनपोषण कर उससे मीठा बोलकर श्रम भी करावाया जा रहा है। उसे भीड में दौडना ही पडता है लेकिन खुद लिए नहीं दूसरों के लिए इसलिए उसे खुद के लिए समय ही नहीं है। नये तरिकों से आज नारी को इस्तेमाल किया जा रहा है।

6. कवि ने 'औरत' कविता में नारी का श्रमिक रुप, माता रुप, पत्नि रुप, शोषित रुप सहनशील रुप आदि कई रुपों से परिचत कराया है।

7. नारी का अपना अस्तित्त्व न होने कारण उसे मेहनत करना, परिवार संभालना खेतों के काम करने तक ही मर्यादा में रखा गया है उसे घर के निर्णय प्रक्रिया में नहीं लिया गया। घर के सारे निर्णय पति ही लेता है यह यथार्थ चित्र देवताले ने औरत कविता द्वारा हमारे सामने रखा है।

8. कविता का आरंभ अत्यंत प्रभावशाली है। आज औरत आकाश और पृथ्वी के दोनों पात्रों के बीच पीसी जा रही है। उसे अपना अस्तित्त्व खोजने के लिए दूसरों की मदद लेनी पड रही है।

9. ''असंख्य रोटियाँ, सूरज की पीठ पर पका रही है'' पंक्ति में आई बिंबात्मकता महत्त्वपूर्ण है।

10. कविता की भाषा सरल, सुमधूर, मुक्तहस्त छंद में लिखी गई है।

    ''खर्राटे भरते हुए आदमी के पास'' पंक्ति में शोषक का रुप उभर आया है।

11. आज नारी शोषित, पीडित है फिर भी वह प्रगति करना चाहती है, आगे बढना चाहती है।

12. धूप के तार, वक्त की नदी, दोपहर के पत्थर, पदों में प्रतीकात्मकता, अलंकारिकता स्पष्ट दिखाई देती है।

13. आज नारी को अपने मनमुताबिक जीने का अधिकार नहीं है इसके बारे में कवि हमें सोचने पर मजबूर करता है।

3.4 स्वयंअध्यन के लिए प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. औरत कविता के कवि .... है।

   अ) नीरज ब) नागार्जुन क) चंद्रकांत देवताले ड) निराला

2. कब से कपडे ....रही है।

   अ) बाँध ब) धुला क) पछीट ड) खरीद

3. भीड में भटक रहा है, उसके हाथ अपना .... ढूँढ रही है।

अ) पाँव ब) चेहरा क) मान ड) कान

4. ....भरते हुए आदमी के निर्वसन जागती है।

अ) पानी ब) खर्राटे क) बील ड) दूध

5. .... रोटियाँ सूरज की पीठ पर पका रही है।

अ) तीन ब) दो क) असंख्य ड) दस

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. खर्राटे - नींद में आनेवाली आवाज।
2. पछीटना - कपडे धोने की क्रिया।
3. गूँधना - माँडना (आटा गूँधना)।
4. घुप्प गुफा - वह गहरा अंधेरा गड्डा, जो जमीन या पहाड के नीचे बहुत दूर तक चला गया हो। (अंजता एलोरा की गुफाएँ)

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1. चंद्रकांत देवताले 2. पछीट 3. चेहरा 4. खर्राटे 5. असंख्य

3.7 सारांश

'औरत' कविता नारी के व्यथा पर आधारित है। देवताले ने भारतीय समाज की सामान्य नारी का चित्रण प्रस्तुत किया है। आज सामान्य नारी को अपनी स्वयं की पहचान नहीं है। हमारी पुरुषप्रधान संस्कृति में शताब्दियों से औरतें कपडें धोना, खाना पकाना, खेती के सब काम करना, बच्चों की देखभाल करना, घाँस काटकर उसके गठ्टर सिर पर उठाकर घर लाना आदि कठिन काम करती हुई दिखाई देती है। साथ ही बच्चों का पालनपोषण करके रात में खर्राटे भरनेवाले पती से बिना शिकायत करें उसके पास रात भर जगना, फिर सुबह उठकर पहले जैसे काम करते रहना यहीं उसकी नियति बनाई है। आज तक वह दूसरों के लिए सबकुछ करती है लेकिन खुद के लिए कुछ भी नहीं करती है। खुद के लिए औरत के पास समय नहीं है। आज तक उसे अपने चेहरे की पहचान नहीं मिलती। कवि ने इस कविता में दर्दभरी स्त्री की व्यथा को सामने रखने का प्रयास किया है और नारी जागृति, नारी सक्षमीकरण होना चाहिए यह संदेश दिया है।

3.8 क्षेत्रीय कार्य

इस कविता को पढने के बाद इसी भावार्थ, आशय की मराठी में ढूँढकर पढिए।

3.9 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1. चंद्रकांत देवताले का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
1. 'औरत' कविता में अस्मिता खोजती स्त्री
3. 'औरत' कविता में नारी की कौन-कौन सी व्यथा स्पष्ट की गई है
4. 'औरत' कविता में नारी अपने परिवार के लिए क्या काम करती है स्पष्ट कीजिए
5. 'औरत' कविता में चित्रित निम्न मध्यमवर्गीय भारतीय नारी का अस्तित्त्व स्पष्ट कीजिए

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'औरत' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. 'औरत' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
3. देवताले जी ने 'औरत' कविता में औरत के कौन-कौन से रुप चित्रित किये हैं?

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. 'लकड बग्घा हँस रहा है।' (काव्य संग्रह) चंद्रकांत देवताले
2. 'हड्डियों में छिपा ज्वर' (काव्य संग्रह) चंद्रकांत देवताले

❖❖❖

इकाई 4

आधुनिक कविता

10. वह अनजान आदमी – अभिमन्यु

अनुक्रम :

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 अभिमन्यु का परिचय

4.3.2 'वह अनजान आदमी' कविता का परिचय

4.3.3 'वह अनजान आदमी' कविता की समीक्षा

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आप

- अभिमन्यु अनंत के व्यक्तित्त्व से परिचित होंगे
- 'वह अनजान आदमी' कविता के भावार्थ से परिचित होंगे
- प्रवासी भारतीय साहित्य से परिचित होंगे
- मॉरिशस में बसे भारतवंशियों के संघर्ष से रूबरू होंगे

4.2 प्रस्तावना

पिछले कुछ दशकों से विदेशों में जो हिंदी में साहित्य लेखन हुआ है, उससे हिंदी का वैश्विक स्वरुप काफी विकसित हुआ है। इसमें प्रवासी साहित्यकारों का एक विशिष्ट योगदान रहा है। यदि आज विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली पाँच भाषाओं में हिंदी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है तो इसमें कोई दोराय नहीं है कि उसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को जाता है जो भारत से इतर देशों में जाकर बसने के बावजूद हिंदी को अपनाए हुए हैं, उसे जिंदा रखे हैं। अपनी भाषा और जमीन से जुड़े रहे। घर से दूर रहने की पीड़ा को झेलते हुए भी साहित्य के माध्यम से अपने देश की संस्कृति को जीवित और सुरक्षित रखे हैं।

प्रवासी साहित्य के अंतर्गत वे सारी साहित्यिक विधाएँ मौजूद हैं जिनके द्वारा साहित्य की जड़ आज इतनी समृद्ध हुई है। इन प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपरा को न केवल सुरक्षित रखा है बल्कि उसे एक नया आयाम भी प्रदान किया है। मॉरिशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक अभिमन्यु अनंत भी उन्हीं में से एक हैं। जिन्होंने अपनी रचनाओं के दम पर हिंदी साहित्य को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया है। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों में तेजेंद्र शर्मा, शैलेजा सक्सेना, अनिता वर्मा, पुष्पिता अवस्थी, राज हिरामण, दिव्या माथुर आदि का उलेख किया जा सकता है।

4.3 विषय विवेचन :

4.3.1 अभिमन्यु का परिचय :

हिंदी जगत् के शिरोमणि तथा मॉरिशस के महान कथा-शिल्पी अभिमन्यु अनंत का जन्म 9 अगस्त, सन् 1937 ई. को त्रिओले, मॉरिशस में एक गरीब परिवार में हुआ था। मॉरिशस निवासी और वहीं पर पले-बढे अभिमन्यु ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में विशेष योग दिया है उनका मूल भारत की मिट्टी है उनके पूर्वज अन्य भारतीयों के साथ अंगेजों द्वारा वहां गन्ने की खेती में श्रम करने के लिए लाए गए थे मज़दूरों के रूप में गये भारतीय

अनत: वहीं पर बस गए। मॉरिशस काल-क्रम से अंग्रज़ों के शासन से मुक्त हुआ। भारतीय जो श्रमिक बनकर वहाँ गए थे, उनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ियाँ पढ़ी-लिखी और सम्पन्न हैं। उनका जीवन स्तर बहुत ऊँचा है। अभिमन्यु की भारतीय पृष्ठभूमि ने उन्हें हिन्दी की सेवा के लिए उत्साहित किया और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया। मॉरिशस के महान् कथा-शिल्पी अभिमन्यु अनंत ने हिन्दी कविता को एक नया आयाम दिया है। उनकी कविताओं का भारत के हिन्दी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

घर पर हिंदी का वातावरण होने के कारण उनमें बचपन से ही हिंदी पढ़ने-लिखने का शौक उत्पन्न हो गया। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अभिमन्यु का पदार्पण पहले कहानीकार के रूप में हुआ था जब पहली बार उनकी कहानी 'रानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। तब से वे निरंतर लिखते रहे थे।

अभिमन्यु अनंत एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक हैं। वे एक साथ कवि, नाटककार और कथा लेखक तीनों हैं। अभिमन्यु अनंत ने अपनी प्रतिभा के द्वारा हिंदी कविता को एक नयी दिशा दी है। जिसके कारण हिंदी कविताएँ न केवल मॉरिशस में बल्कि पूरे विश्व में छा रही है। इनकी कविताओं में वैविध्यपन साफ झलकता है। व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह, सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति, शोषण के प्रति आक्रोश, अभिमन्यु अनंत के कविताओं की विशेषता रही है। अभिमन्यु अनंत को अनेक महान् पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जैसे- साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार, जनसंस्कृति सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि साहित्यकार अभिमन्यु अनंत का सोमवार, 4 जून, सन् 2018 ई. को निधन हो गया। उनकी आयु 81 वर्ष थी और वह लंबे समय से अस्वस्थ थे।

कविता संकलन

- अब तक अनंत के चार कविता संकलन प्रकाशित हो चुके हैं-
    1. कैक्टस के दांत
    2. नागफनी में उलझी सांसें
    3. एक डायरी बयान
    4. गुलमोहर खौल उठा
- अनंत द्वारा संपादित कविता संकलन हैं :
    1. मॉरिशस की हिन्दी कविता
    2. मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि

नाटक –

1. विरोध
2. तीन दृश्य
3. गूँगा इतिहास
4. रोक दो कान्हा
5. देख कबीरा हांसी

कहानी संग्रह –

1. एक थाली समन्दर
2. खामोशी के चीत्कार
3. इंसान और मशीन
4. वह बीच का आदमी
5. जब कल आएगा यमराज

- इनके छोटे-बड़े उपन्यासों की संख्या पैंतीस है। कुछ प्रसिद्ध नाम नीचे दिए जा रहे हैं-

1. लहरों की बेटी
2. मार्क ट्वेन का स्वर्ग
3. फैसला आपका
4. मुड़िया पहाड़ बोल उठा
5. और नदी बहती रही
6. आन्दोलन
7. एक बीघा प्यार
8. जम गया सूरज
9. तीसरे किनारे पर
10. चौथा प्राणी
11. लाल पसीना
12. तपती दोपहरी

13. कुहासे का दायरा

14. शेफाली

4.3.2 'वह अनजान आदमी' कविता का परिचय :-

अभिमन्यु ने अपनी कविताओं में अधिकतर मजदूरों के शोषण, अन्याय, अत्याचार तथा दमन के खिलाफ आवाज बुलंद किया है, जिसका उदाहरण हमें प्रस्तुत कविता के माध्यम से दिखाई देता है भारत में सन् 1830 ई. में ब्रिटिश सरकार की नीतियों के कारण कई हजार भारतीय बेरोजगार हो गए। इन भारतीय मजदूरों को सन् 1834 ई. में आकर्षक प्रलोभन देकर (शर्तबन्दी प्रथा के अन्तर्गत) सर्वप्रथम मॉरिशस ले जाया गया। ये भारतीय मजदूर भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश, मद्रास, हैदराबाद, मुम्बई और कलकत्ता आदि शहरों के रहने वाले थे। इन मजदूरों को ङ्गगिरमिटियाफ कह कर भी संबोधित किया गया। मॉरिशस में इन लोगों से 14-15 घण्टें कड़ी मेहनत करवायी जाती थी। लेकिन आशाजनक बात यह थी कि इन मजदूरों में एकता थी। इस कारण यह सब रात में ङ्गबैठकोंफ में मिलते थे। इन बैठकों में ही यह अपने धर्म व संस्कृति पर विचार-विमर्श करते थे। ज्यादा पढ़ा-लिखा न होने के कारण यह थोड़ी-बहुत रामायण, महाभारत, सत्यनारायण कथा आदि पढ लेते थे और लोकगीतों के गायन द्वारा अपना मनोरंजन कर लेते थे। यह लोग मिलकर विभिन्न तीज-त्योहारों जैसे-दिवाली, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, रामनवमी आदि बड़ी धूमधाम से मनाते। साथ ही नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह, कर्ण छेदन आदि संस्कार भी पूरी श्रद्धा-भक्ति से पूरे करते। इस प्रकार ये भारतीय अपनी लोकरीतियों और रिवाजों को यथासम्भव पूरा करते रहे।

अभिमन्यु ने अपनी कविता ङ्गवह अनजान आदमीफ के माध्यम से अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। कभी-कभी इतिहासकारों से भी इतिहास की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ छूट जाती हैं जिन्हें संपूर्ण करने का दायित्त्व एक साहित्यकार को उठाना पड़ता है। अभिमन्यु अनंत को भी यह दायित्व उठाना पड़ा ओर मॉरिशस के इतिहास में घटीत उस समय को दिखाना पड़ा जिसे कई बार इतिहासकारों ने महत्त्वपूर्ण नहीं मानकर छोड़ दिया था। वर्षों पूर्व भारत से गये गिरमिटिया मजदूर किस प्रकार मॉरिशस के जमीन पर अपनी जड़ और अस्मिता की तलाश में भटक रहे हैं उसकी व्याख्या उन्होंने अपनी इस कविता के माध्यम से की है।

4.3.4 'वह अनजान आदमी' कविता आशय :-

अभिमन्यु अनंत अपने खुद के जीवन में एक मजदूर रह चुके हैं; इसलिए उनकी कविताओं में मजदूरों के प्रति संवेदनात्मक भाव की उपज स्वाभाविक है। 'वह अनजान आदमी' कविता इस बात की साक्षी है। इस

कविता का मुख्य स्वर मॉरिशस में बसी उन तमाम श्रमजीवियों की वेदना है जिसको कवि ने बड़े ही मार्मिक ढ़ंग से अभिव्यक्त किया है। वर्गभेद को उन्होंने नजदीक से देखा और भोगा है तथा साथ ही व्यवस्था की चालबाजियों को भी वे खूब समझते हैं –

''आज अचानक
हवा के झोंकों से
झरझरा कर झरते देखा
गुलमोहर की पंखुड़ियों को
उन्हें खामोशी में झुलसते छटपटाते देखा
धरती पर धधक रहे अंगारों पर
फिर याद आ गया अचानक
वह अनलिखा इतिहास मुझे
इतिहास की राख में छुपी
गन्ने के खेतों की वे आहें याद आ गयी''

अभिमन्यु अनंत को भी यह दायित्त्व उठाना पड़ा ओर मॉरिशस के इतिहास में घटी उस समय को दिखाना पड़ा जिसे कई बार इतिहासकारों ने महत्त्वपूर्ण नहीं मान कर छोड़ दिया था। वर्षों पूर्व भारत से गये गिरमिटिया मजदूर किस कदर मॉरिशस के जमीन पर अपनी जड़ और अस्मिता की तलाश में भटक रहे हैं उसकी व्याख्या उन्होंने अपनी इस कविता के माध्यम से किया है –

'जिन्हें सुना बार–बार
द्वीप का प्रहरी मुड़िया पहाड़
दहल कर काँपा बार–बार
डरता था वह भीगे कोड़ों की बौछारों में
इसलिए मौन साधे रहा'

वास्तव में यह कविता प्रलोभन से लायी गयी उन तमाम भारतीय अप्रवासी मजदूरों की, उनके पूर्वजों की संघर्ष–गाथा को तथा अन्याय और अत्याचार से मुक्ति पाने की छ्टपटाहट को दर्शाती है, जिनकी मृत्यु इतिहास की मृत्यु थी। अभिमन्यु अनत की दृष्टि समकालीन बेरोजगारी एवं आर्थिक संकटों की ओर भी गई है। इसलिए उन्होंने व्यवस्था के ऊपर व्यंग्य बाण कसा है और उस गरीब समुदाय को दिखाया है जो इस व्यवस्था के द्वारा

सताये जा रहे हैं। भूखे पेट दिन रात काम करने की व्यथा, वर्तमान की आर्थिक संकट से उपजी यथार्थता को बड़ी जीवंतता के साथ रेखांकित किया है –

''आज जहाँ खामोशी चीत्कारती है
हरियालियों के बीच की तपती दोपहरी में
आज अचानक फिर याद आ गये
मजदूरों के माथे के माटी के वे टीके
नंगी छाती पर चमकती बूंदे
और धधकते सूरज के ताप से
गुलमोहर की पंखुड़ियां ही जैसे
उनके कोमल सपने भी हुए थे राख''

वास्तव में अभिमन्यु अनंत की कविताएँ अपने आप में संपूर्ण हैं। उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली कविताएँ हैं। जो समाज के शोषित, पीड़ित एवं निर्धन आदमी के दुख–दर्द को अभिव्यक्ति देती हैं। साधनहीन मजदूरों के प्रति पूंजीपतियों के कटुता को व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करती है। साथ ही साथ इनकी कविताओं में निर्धन वर्ग की आर्थिक विपन्नता तथा विवशता की झांकियाँ भी हैं। मॉरिशस में बसे भारतवंशियों के सामूहिक अचेतन में वे स्मृतियाँ आज भी संचित हैं; जिनका संबंध भारत भूमि से उन्हें जबरन एक वीरान द्वीप पर लाकर छोड़ दिए जाने से है और जिनमें वह सारी संघर्षगाथा सुरक्षित है कि कैसे खून–पसीना सचमुच एक करके इन भारतवंशियों ने जिजीविषा की उत्तरजीविता प्रमाणित की वे जिए क्योंकि उन्होंने संघर्ष किया वे बचे क्योंकि वे सर्वोतम थे लेकिन यह जीवन संघर्ष सदा–सदा के लिए सामूहिक स्मृति में दर्ज हो गया अभिमन्यु अनंत इसे अभिव्यक्त करने वाले सबसे प्रखर वक्ता हैं, जिसका उदाहरण हमें इन पंक्तियों में देखने को मिलता है–

''आज अचानक
हिन्द महासागर की लहरों से तैर कर आयी
गंगा की स्वर–लहरी को सुन
फिर याद आ गया मुझे वह काला इतिहास
उसका बिसारा हुआ
वह अनजान अप्रवासी

देश के अन्धे इतिहास ने न तो उसे देखा था
न तो गूंगे इतिहास ने
कभी सुनाई उसकी पुरी कहानी हमें
न ही बहरे इतिहास ने सुना था उसके चीत्कारों को
जिसकी इस माटी पर बही थी पहली बूँद पसीने की
जिसने चट्टानों के बीच हरियाली उगायी थी
नंगी पीठों पर सह कर बाँसों की बौछार
बहा-बहाकर लाल पसीना
वह पहला गिरमिटया इस माटी का बेटा
जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना''

इस प्रकार अभिमन्यु अनंत ने इस कविता के माध्यम से अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। उनकी कविता उत्पीड़ित समाज के उन मुश्किल भरे जीवन संघर्ष की ओर संकेत है, जिससे आज का समकालीन समाज जूझ रहा है। वर्षों पूर्व मुख्यधारा का समाज गरीबों के साथ जिस प्रकार अमानवीय व्यवहार कर रहा था वह बर्ताव तथा रवैया आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक अस्मिता, आर्थिक विषमता, राजनीतिक घपलेबाजी, सामाजिक न्याय से वंचित नागरिक, ऊचें पदों पर अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति तथा अपने देश और लोगों से अलग होने की विडबंना आदि कुछ ऐसे सवाल हैं जो उनकी कविता को दूसरे कविताओं से अलग कर विशेष बना देती हैं। उनकी कविताओं की दूसरी एवं महत्त्वपूर्ण विशेषता उनकी भाषा है, वास्तव में हिंदी भाषा के प्रति उनका लगाव उनकी कविताओं में साफ-साफ नजर आता है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. अभिमन्यु का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1937 ब) सन् 1980 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. अभिमन्यु की मृत्यु कब हुई?

   अ) सन् 2002 ब) सन् 2018 क) सन् 2020 ड) सन् 2022

3. अभिमन्यु के पूर्वज मॉरिशस क्यों लाए गए थे?

   अ) गन्ने की खेती करने ब) चाय की खेती करने क) घुमने ड) माल बेचने

4. अभिमन्यु का जन्म कहाँ हुआ?

अ) नेपाल ब) श्रीलंका क) भारत ड) मॉरिशस

5. वर्षों पूर्व भारत से गए मजदूरों को क्या कहा गया?

अ) बेगार ब) गिरमिटिया क) कुली ड) श्रमिक

4.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

जमींदार-भू-स्वामी, अनाथ-लावारिस, असहाय, पतोहू-बहू, मृतप्राय-जो मरे हुए के समान हो, प्रयत्न-कोशिश, अदालत-न्यायालय, स्मरण-याद करना, पश्चाताप- पछतावा

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- अ, 2- ब, 3- अ, 4- ड, 5- ब

4.7 सारांश

1. अभिमन्यु को यों तो मॉरिशस का हिन्दी कथा सम्राट माना जाता है; लेकिन सही अर्थ में प्रवासी हिन्दी कविता के शीर्षस्थ कवि है।
2. अभिमन्यु की कविताएँ अपने आप में संपूर्ण हैं। उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली कविताएँ हैं। जो समाज के शोषित, पीड़ित एवं निर्धन आदमी के दुख-दर्द को अभिव्यक्ति देती हैं। साधनहीन मजदूरों के प्रति पूंजीपतियों के कटूता को व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करती है। साथ ही साथ इनकी कविताओं में निर्धन वर्ग की आर्थिक विपन्नता तथा विवशता की झांकियाँ भी हैं।
3. उनकी कविता उत्पीड़ित समाज के उन मुश्किल भरे जीवन संघर्ष की ओर संकेत है जिससे आज का समकालीन समाज जूझ रहा है। वर्षों पूर्व मुख्यधारा का समाज गरीबों के साथ जिस प्रकार अमानवीय व्यवहार कर रहा था वह बर्ताव तथा रवैया आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं।

4.8 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1) अभिमन्यु का परिचय और रचनाएँ
2) अभिमन्यु अनंत और प्रवासी साहित्य
3) 'वह अनजान आदमी' कविता में मजदूरों की व्यथा

4) कवि ने पूँजीपतियों की कटूता का वर्णन

5) अप्रवासी भारतीय का दुख का चित्रण

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'वह अनजान आदमी' कविता के माध्यम से कवि ने अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। कथन की समीक्षा कीजिए

2. 'वह अनजान आदमी' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए

4.9 क्षेत्रीय कार्य

नेदरलंड की प्रवासी भारतीय साहित्यकार पुष्पिता अवस्थी की कविताओं को पढ़िए

4.10 अतिरिक्त अध्ययन

हिंदी प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की सूची तैयार कीजिए

11. 'सूरज पाना है' – परशुराम शुक्ल

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 परशुराम शुक्ल का परिचय

4.3.2 'सूरज पाना है' कविता का परिचय

4.3.3 'सूरज पाना है' कविता की समीक्षा

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य से परिचित होंगे।
- 'सूरज पाना है' कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।
- किशोर बच्चों के मनोविज्ञान को जान सकेंगे।
- बाल साहित्य की आवश्यकता पर जोर देंगे।

4.2 प्रस्तावना

बाल कविता हिन्दी बाल साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसकी उत्पत्ति बाल उपन्यासों, बाल नाटकों, बाल कहानियों एवं बाल साहित्य की अन्य सभी विधाओं से पहले हुई थी। वास्तव में बाल–साहित्य की उत्पत्ति उसी समय हो गयी थी, जब माँ अपने बच्चे को देख कर कुछ गुनगुनायी थी अथवा उसने बेटे को सुलाने के लिए लयबद्ध लोरी सुनायी थी। बाल कविता में सर्वाधिक वात्सल्य रस होता है। इस रस में स्वाद होता है एवं यह स्वाद आनन्द प्रदान करता है और वह भी अलौकिक आनन्द। इस आधार पर बाल कविता को व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के निर्माण की नींव का आधार कहा जा सकता है। माँ द्वारा बच्चे को गोद में लेकर सुनायी गयी लोरियाँ उसे सहृदय और संवेदनशील बनाती हैं। इनके अभाव में बच्चा क्रूर, निर्दयी और क्रोधी बन सकता है।

''बाल कविताओं का स्वरूप परिवर्तनशील होता है क्योंकि अलग–अलग आयुवर्ग के बच्चों के लिए अलग–अलग स्वरूप वाली बाल कविताएँ उपयोगी होती है। बाल कविता का आरम्भ शिशुगीतों से होता है। ये शिशुगीत ढाई वर्ष से लेकर पाँच वर्ष तक के बच्चों के लिए होते हैं। शिशुगीतों को बाल कविता के ऐसे स्वरूप के रूप में पारिभाषित किया जा सकता है, जिसका सृजन ढाई वर्ष से पाँच वर्ष तक की आयु के शिशुओं के लिए किया गया हो, जिसमें चार से लेकर आठ तक अत्यन्त सरल शब्दों से युक्त पंक्तियाँ हों, जिसका उद्देश्य विशुद्ध रूप से शिशु का स्वस्थ मनोरंजन हो, जिसे बच्चे सरलता से गा सकते हों तथा जिसकी भाषा और भावों में इतना आकर्षण हो कि शिशुओं के मस्तिष्क में एक स्पष्ट चित्र उभर आता हो।'' बाल कविता की शिशुगीत से आरम्भ होने वाली यात्रा किशोर कविता तक पहुँचती है। यह इसका अन्तिम पड़ाव है। किशोर कविता बारहवर्ष से अधिक की आयु के बच्चों के लिए होती है।

4.3 विषय विवेचन:

4.3.1 डॉ. परशुराम शुक्ल का परिचय:

श्री परशुराम शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के कानपुर ज़िले के सैबसू गाँव में दि. 6 जून सन् 1947 ई. को हुआ। 2 बहनों के बीच श्री शुक्ल अकेले भाई थे। प्रारंभिक शिक्षा सदर बाजार जूनियर हाई स्कूल और मारवाड़ी इंटर कॉलेज, कानपुर से पूरी की। किशोरावस्था में ही पिता श्री मंगली प्रसाद शुक्ल के देहांत के कारण परिवार कठिन दौर से गुज़रा। श्री शुक्ल ने न केवल अकेले ही पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी उठायी, बल्कि साथ साथ कड़ी मेहनत से अपनी शिक्षा भी जारी रखी। प्रकाशन : इन्द्रधनुषी बाल कहानियाँ, जंगल की बाल कहानियाँ, प्राचीन ग्रन्थों की बाल कहानियाँ, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, परियों की बाल कहानियाँ, लोक कथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ आदि 36 बाल कहानी संग्रह तथा 250 से अधिक अन्य पुस्तकें एवं 6000 से अधिक स्फुट रचनाएँ प्रकाशित। अनेक रचनाओं का भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवादें।

पुरस्कार/सम्मान : समाज कल्याण मंत्रालय, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, हिन्दी अकादमी, हैदराबाद सहित अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत।

विशेष : शांति निकेतन (प. बंगाल), शिवाजी विश्वविद्यालय और मुंबई विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा), बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय और जीवाजी विश्वविद्यालय (म.प्र.) सहित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में इनके साहित्य पर शोधकार्य संपन्न हुआ है।

4.3.2 'सूरज पाना है'कविता का परिचय :-

'सूरज पाना है' पूरी तरह किशोर कविता है। यह कविता बारह वर्ष की आयु से लेकर अठारह वर्ष तक के बच्चों के लिए हैं। इस कविता में सामान्य बाल कविता के समान भरपूर मनोरंजन और नैतिक शिक्षा है। बाल कविता का प्राण तत्त्व-मनोरंजन होता है। बाल कविताओं में यदि मनोरंजन नहीं है, तो बच्चे इसमें रुचि नहीं लेंगे, अतः कविता लिखना निरर्थक हो जाएगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कवि ने कविता का लेखन किया है।

'सूरज पाना है' इस कविता का मूल उद्देश्य नैतिक शिक्षा है। किन्तु यह नैतिक शिक्षा बोझिल नहीं लगती। बच्चों के लिए, चाहे वे किशोर ही क्यों न हों, नैतिक शिक्षा दवाई की गोली की तरह होती है। यही कारण है कि कवि ने नैतिक शिक्षा रूपी कड़वी गोलियों को मनोरंजन रूपी चाशनी के भीतर रख कर मसुगर-कोटेड टेबलेटफ के समान परोसने का कार्य किया है।

4.3.4 'सूरज पाना है' कविता की समीक्षा :-

परशुराम शुक्ल जी मूलतः हमारे देश के जाने-माने बाल साहित्यकार है। उन्होंने आदिवासी साहित्य लिखा परंतु उनकी पहचान बाल साहित्यकार के रूप में बहुत ज्यादा हुई उन्होंने हिंदी के बाल उपन्यास, बाल कहानियां, बाल कविताएं, बाल नाटक, बाल धारावाहिक लिखे हैं डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल सतसई भी लिखी है।

'सूरज पाना है' यह उनकी बड़ी ही सुन्दर और प्रेरणादायी कविता है। जब बच्चा बड़ा होने लगता है तो घर के दादा-दादी, नाना-नानी से या घर के अन्य बुजुर्गों से इस संसार को समझने की कोशिश करता है। जिंदगी की लड़ाई सीखने के लिए वह कहानियों के माध्यम से इस संसार को समझता है परंतु परशुराम शुक्ल जी एक अलग दुनिया में बच्चों को ले जाना चाहते हैं वह एक अलग प्रकार की मानसिकता इसमें दर्शाना चाहते हैं इसीलिए वह बच्चा, आज ना राजा रानी की कहानी सुनना चाहता है; ना परियों की कहानी जानना चाहता है; क्योंकि, उसके आसपास विश्व का हर गरीब से गरीब और अमीर से अमीर देश चांद पर क्या है। यह ढूंढने की कोशिश कर रहा है; सूरज पर क्या है यह जानने की कोशिश कर रहा है।

''मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।
आँधी पानी तेज हवाएँ, शीत लहर तूफानी।
जाना मुझको दूर बहुत है, राह बड़ी अनजानी।
चारों तरफ बवंडर फिर भी, जड़ें जमाना है।। सूरज......''

एक नन्हे से अंकुर के माध्यम से सूरज पाने की लालसा उत्पन्न होना, यह भाव शुक्ल जी ने बहुत सुंदर तरीके से हमारे सामने रखने का प्रयास किया हैं जैसे हम अनाज (फसल) आने के लिए पहले अनाज जमीन में बोते हैं; एक छोटा सा अनाज का दाना, वह फुटकर अंकुर बनता है, फिर पौधा, फिर पेड़, फिर बहुत बड़ा पेड़ बनता है उसी की कल्पना करते हुए मैं छोटा सा अंकुर इस जमीन से अभी-अभी बाहर निकला हूं मेरी कल्पना, आशा, सपने बहुत बड़े हैं मुझको सूरज पाना है उसके लिए तेज आंधी आए, हवाएं या फिर चाहे कितनी भी मुसीबत आए लेकिन तूफानी लेकिन हर तूफान का मुझको सामना करना है मेरे लिए राह बहुत कठिन है, अंजान है, बहुत दूर भी है परंतु, मैंने ठान लिया है; इस जमाने में जड़े जमाना है; क्योंकि मुझे मेरी पहचान बनानी है इस जमाने को दिखाना है कि मैं देश के कुछ काम आ सकता हूं, कुछ कर सकता हूं मुझे मेरी पहचान बनानी है; इसलिए मुझे सूरज पाना है एक छोटे से अंकुर के माध्यम से इस तरह एक बच्चा इस समाज को समझता है, बड़े-बड़े सपने देखता है।

बच्चा यदि सशक्त रहा तो, वह एक नए जमाने की, नए देश की, नए चैतन्य की कल्पना उत्पन्न कर सकता है यही कवि इस माध्यम से बताना चाहते हैं।

''फूल हमेशा कभी खिले बस, एक बार खिलता है।
यह जीवन ऐसा जीवन जो, एक बार मिलता है।
इस छोटे से जीवन में कुछ, कर दिखलाना है।। सूरज......''

कवि ने कहा है यह जीवन एक बार ही मिलता है, कोई पुनर्जन्म नहीं होता यह जीवन जो मिला है उसमें मुझे कुछ करके दिखाना है, मुझे सूरज पाना है; क्योंकि यह जीवन मुझे एक बार मिला है; वह बार-बार नहीं मिलेगा इस छोटे से जीवन में मुझे कुछ अलग करके दिखाना है और मुझे सूरज पाना है ।

''मेरे जैसे और बहुत से, अंकुर जग में होंगे।
अंधकार से घबराये वे, सहमे सहमे होंगे।
इनके भीतर कुछ करने की, अलख जगाना है ।। सूरज......''

यहां पर उस बच्चे के मन में एक और तिलमिलाहट है कि, मेरे सपने साकार करने के लिए मेरे पास मेरे माता–पिता है, पोषक वातावरण है, लेकिन मेरे जैसे और भी अंकुर होंगे जो अंधकार में जीवन जी रहे हैं जिन्हें बाहर निकलने का कोई मौका नहीं मिल रहा जिन्हें अपने सपने पूरा करने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा जिन्हें अपना सपना पूरा करने का कोई माध्यम उपलब्ध नहीं ऐसे कितने सहमे–सहमे लोग होंगे जिनके भीतर एक इच्छा होगी मुझे उनके अंदर एक अलख जगाना है, प्रकाश जगाना है ऐसे भटके हुए लोगों को मुझे रास्ता दिखाना है, और मुझे सूरज पाना है।

''धरती हरी भरी होगी जब, अंकुर महकेंगे।
इनके मन में रहने वाले, पक्षी चहकेंगे।
मैंने ठान लिया है सारा, जग महकाना है।। सूरज......
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।।''

यह धरती हरी–भरी तब होगी, जब अंकुर महकेंगे धरती हरे वस्त्र तब धारण करेगी, जब वह पूरी तरह से हरी–भरी बनेगी वैसे ही इस धरती का नन्हा सा बालक सशक्त होगा, होशियार होगा, उसे अलग–अलग प्रश्न आते होंगे, समझने–समझाने की शक्ति यदि उसमें होगी तो ही वह प्रश्न करेगा इसीलिए कि इनमें अंकुर महकेंगे, उनके मन में रहने वाले सभी पंछी भी चहकेंगे यदि यह नन्हा सा बालक दृढ़ रहा तो देश में टिकेगा अपना स्थान विश्व में उत्पन्न करेगा जब महकेगा तो यह नन्हा सा अंकुर, फुल बनकर कुछ करके दिखाने की चाह रखेगा इसीलिए इस छोटे से बालक को ना परियों की कथाएं सुननी है, ना काल्पनिक कथाएं सुननी है, उसे तो इस धरती को जानना है, इस धरती को समझना है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. परशुराम शुक्ल जी का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1950 ब) सन् 1971 क) सन् 1947 ड) सन् 1961

2. परशुराम शुक्ल जी का जन्म कहाँ हुआ?

   अ) कानपुर ब) जयपुर क) उदयपुर ड) नागपुर

3. परशुराम शुक्ल जी के पिता का नाम क्या है?

   अ) मंगलीप्रसाद ब) जयशंकर प्रसाद क) भीम ड) मंगलेश

4. 'सूरज पाना है' किसके द्वारा लिखित कविता है?

अ) परशुराम शुक्ल   ब) निर्मला पुतुल   क) प्रसाद   ड) अभिमन्यु अनंत

5. 'सूरज पाना है' कविता का मूल उद्देश्य क्या है?

   अ) नैतिक शिक्षा   ब) मनोरंजन   क) आनंद प्राप्ति   ड) खेल सीखाना

4.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

नन्हा- छोटा, अंकुर- पल्लव, आँधी- तूफ़ान, शीत- ठंडी, राह- रास्ता, अनजानी- अपरिचित, बवंडर- तेज हवा, अलख- प्रकाश, चहकना- खुशी में बोलना, महकना- अच्छी सुगंध

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- क,   2- अ,   3- अ,   4- अ,   5- अ

4.7 सारांश

1. हिन्दी बाल साहित्य में बहुत बड़ी संख्या में बाल कविताओं का सृजन किया गया है। किशोर कविता का सृजन किशोर बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। इस आयु के बच्चों में अपने निर्णय अपने आप लेने की क्षमता उत्पन्न होने लगती है। ये अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करने लगते हैं। इनकी अपनी विचारधारा इनके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

2. किशोर मनोविज्ञान पर आधारित उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रख कर कविता का सृजन करना सरल कार्य नहीं है। ङ्गसूरज पाना हैफ यह किशोर कविता लिखने का प्रयास परशुराम शुक्ल जी ने किया है इस कविता में एक ओर किशोरों के उद्देश्य की ओर संकेत किया गया है, तो दूसरी ओर एक नये प्रयास की सफलता की दृढ़ इच्छा शक्ति को अभिव्यक्ति दी गयी है। इस शीर्षक में और भी बहुत कुछ है।

3. बच्चे किशोर होते-होते अपने सुनहरे भविष्य के सपने देखने लगते हैं। ये बहुत कुछ कर डालना चाहते हैं प्रगति की बुलन्दी पर पहुँच जाना चाहते हैं। इनमें असम्भव को भी सम्भव करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होती है। इनकी क्षमताएँ अनन्त होती हैं। कभी-कभी इनके माता-पिता अथवा अभिभावक इनकी इच्छा शक्ति और क्षमताओं का उपहास उड़ाते हैं, अतः ये अपने मन की बातें मन में ही रखते हैं अथवा अपने अन्तरंग मित्रों को थोड़ा-बहुत बता देते हैं।

4.8 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1) डॉ. परशुराम शुक्ल का जीवन और साहित्य परिचय

2) 'सूरज पाना है' कविता का उद्देश्य

3) नन्हें से अंकुर की अभिलाषा

4) 'सूरज पाना है' कविता में बच्चे की तिलमिलाहट

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'सूरज पाना है' इस कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

2) 'सूरज पाना है' इस कविता की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए।।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

'सूरज पाना है' इस कविता संग्रह की अन्य कविताओं को पढ़िए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन

मराठी के प्रसिध्द साहित्यकार विं. दा. करंदीकर जी के बाल काव्य का अध्ययन कीजिए।

12. ‘उतनी दूर मत ब्याहना बाबा’ – निर्मला पुतुल

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 निर्मला पुतुल का परिचय

4.3.2 ‘उतनी दूर मत ब्याहना बाबा’ कविता का परिचय

4.3.3 ‘उतनी दूर मत ब्याहना बाबा’ कविता की समीक्षा

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- निर्मला पुतुल के काव्य साहित्य से परिचित होंगे।
- ‘उतनी दूर मत ब्याहना बाबा’ कविता के भावार्थ से परिचित होंगे।
- प्रस्तुत कविता में निर्मला पुतुल ने एक युवती की भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है वह युवती अपने बाबा के सामने अपनी पसंद ना पसंद व्यक्त करती है जिसमें उसकी सोच-विचार, समझदारी, वैचारिक परिपक्वता का भाव समझ सकेंगे।

- आदिवासी समाज किस तरह जल, जंगल, जमीन के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, इस कविता से जान सकते हैं आदिवासी ही नहीं बल्कि समूचे नारी जगत् की वेदना को यह कविता कहती नजर आती है एक लड़की का अपने पिता से लगाव, शादी के बाद घर से दूर होने की पीड़ा, दहेज जैसी कुप्रथा, पति का शराबी होना आदि तमाम बातों से गुजरते हुए निर्मला पुतुल जो संदेश देती हैं, उससे परिचित होंगें।

4.2 प्रस्तावना

आदिवासी महिला लेखन का इतिहास बहुत पुराना है। कई पीढ़ियों से आदिवासी लेखिकाएं देश के विभिन्न भागों से अलग-अलग भाषाओं में लेखन कर रही हैं। आदिवासी लेखिकाओं का स्वर आदिवासी पहचान, प्रकृति के प्रति अपनी आस्था व सहअस्तित्त्व को ज़ाहिर करता है।

शांत और एकांत प्रिय रहने वाले आदिवासियों के जीवन में औद्योगिकरण के बढ़ते प्रभाव ने उथल-पुथल मचा दी। कल तक जो इस जल, जंगल और जमीन का मालिक था, आज वह उसी से वंचित है। विकास के नाम पर आदिवासियों के साथ छल किया गया, उन्हें अपनी जमीनों से बेदखल कर पलायन को मजबूर कर दिया गया। आज आदिवासियों में विस्थापन की मुख्य समस्या हैं, वे रोजगार की तलाश में दर-दर की ठोकरे खा रहा हैं। तथाकथित सभ्य समाज आदिवासी समाज को अपनी बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहता है। वैश्वीकरण के कारण आदिवासी संस्कृति दूषित हो रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदिवासी समाज की अस्मिता व अस्तित्त्व संकट में है। आदिवासी समाज में विस्थापन, पलायन, रोजगार भूखमरी, अशिक्षा और स्त्री अस्मिता मुख्य समस्याएँ है।

आदिवासी साहित्य में लेखन करनेवाले रचनाकारों में निर्मला पुतुल, ग्रेस कुजुर, वंदना टेटे, महादेव रोप्पो, अनुजु लुगुन, जंसिता केर केट्टा, वाहरू सोनवणे, हरिराम मीणा प्रमुख नाम है। आदिवासी साहित्यकार अपनी लेखनी के द्वारा आदिवासी संस्कृति, उनके जीवन-दर्शन, परम्पराएँ, तथा उनकी अस्मिता व अस्तित्त्व के ऊपर आये संकट से दुनिया को अवगत करा रहे हैं।

4.3 विषय विवेचन:

4.3.1 निर्मला पुतुल का परिचय:

निर्मला पुतुल समकालीन हिन्दी कविता की सशक्त हस्ताक्षर है इनका का जन्म दि. 6 मार्च सन् 1972 ई. को झारखंड के दुमका ज़िले के दुधनी कुरुवा ग्राम में एक ग़रीब आदिवासी परिवार में हुआ। पिता का नाम सिरील मुरमू है, तथा मां का नाम कांदिनी हांसदा है। इनकी शिक्षा-दीक्षा सामान्य रही। आसानी से आजीविका पा सकने के लिए नर्सिंग का कोर्स किया। बाद में इग्नू से राजनीतिशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। दो दशकों

से अधिक समय से आदिवासी महिलाओं के विस्थापन, पलायन, उत्पीड़न, लैंगिक भेदभाव, मानवाधिकार, संपत्ति का अधिकार जैसे विषयों पर व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत स्तर पर सक्रिय रही हैं। इसके साथ ही ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी और आदिम जनजाति की महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार के लिए विशेष प्रयासरत रही हैं। इस उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष राजनीति में उतर आने से भी परहेज़ नहीं किया और अपने गृह पंचायत से मुखिया पद के लिए चुनी गईं।

कविता-लेखन की शुरुआत मातृभाषा संताली में की थी। फिर हिंदी में भी लिखने लगी। अपनी कविताओं के विद्रोही स्वर और अपने समाज की यथार्थपरक अभिव्यक्ति के लिए कवयित्री प्रशंसित हुईं है। उनका पहला कविता संग्रह 'अपने घर की तलाश में' संताली-हिंदी द्विभाषिक संग्रह के रूप में वर्ष 2004 में प्रकाशित हुआ। हिंदी में उनका प्रवेश 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' (2005) कविता-संग्रह के साथ हुआ। इसे पहली बार जंगल के बाहर शहर में किसी आदिवासी स्त्री द्वारा कविता के स्वर में अपने अस्तित्त्व का नगाड़ा बजाने की घटना की तरह देखा गया। एक आदिवासी स्त्री द्वारा उसके ङ्गस्वफ की तलाश, पुरुष व्यवस्था और पितृसत्तात्मकता के प्रति विद्रोह, आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्री की वेदना, आदिवासी समाज व्यवस्था के गुण-दोष, तथाकथित सभ्य शहरी समाज पर व्यंग्य, मुक्ति की कामना जैसे वृहत विमर्श बिंदुओं में उनकी कविताओं का पाठ हुआ। उनका तीसरा कविता-संग्रह ङ्गबेघर सपनेफ वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ।

इनकी कविताओं का अनुवाद अंग्रेजी, मराठी, उर्दू, उड़िया, कन्नड़, नागपुरी, पंजाबी, नेपाली में हो चुका है। उनकी कविताएँ पाठ्य-पुस्तकों में भी शामिल की गई हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में उनकी कविताओं पर शोध-प्रबंध लिखे गए हैं। उनके जीवन पर आधारित फ़िल्म ङ्गबुरू-गाराफ को वर्ष 2010 में राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ।

वह साहित्य अकादेमी के ङ्गसाहित्य सम्मानफ भारतीय भाषा परिषद के राष्ट्रीय युवा सम्मान, बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान सहित दर्जनाधिक पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ी गई हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें विभिन्न संस्थानों से फ़ेलोशिप प्राप्त हुए हैं।

4.3.2 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का परिचय :-

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल की एक महत्त्वपूर्ण कविता है। इस कविता में आदिवासी लड़कियों की जिंदगी का चित्रण हुआ है। उनका लेखन अनुभव की सच्चाई है। वे झारखण्ड की वास्तविक सच्चाई हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। निर्मला जी की कविताओं में आदिवासी नारी जीवन संघर्ष की अनेक छवियों का वर्णन हुआ है।

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल जी के 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' काव्य- संकलन की एक श्रेष्ठ कविता है। इस कविता में एक पहाड़ी लड़की द्वारा पिताजी से अपनी शादी की बातचीत को प्रस्तुत किया गया है।

मनुष्य के जीवन में शादी एक बहुत बड़ी घटना होती है; शादी के बारे में हर व्यक्ति के कुछ ना कुछ सपने होते हैं; नया गांव, नया घर, ससुराल, वहां के नए लोग, उनके स्वभाव, अपनापन, सोच-विचार, परस्पर स्नेह-भाव आदि बातों को लेकर मन में हमेशा हलचल सी मची रहती है यह बातें जितनी भी व्यक्तिगत क्यों ना हो किसी न किसी के सामने प्रकट करनी पड़ती है प्रस्तुत कविता ङ्गउतनी दूर मत बहाना बाबाफ में निर्मला पुतुल ने एक युवती की भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है वह युवती अपने बाबा के सामने अपनी पसंद ना पसंद व्यक्त करती है जिसमें उसकी सोच-विचार, समझदारी, वैचारिक परिपक्वता का भाव कविता में प्रकट हुआ है।

4.3.3 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता की समीक्षा :-

कविता का प्रारंभ एक पहाडी लडकी खुद की शादी के संबंध में अपने पिता से कुछ बातें साझा कर रही है युवती की भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कवयित्री ने कविता को दो भागों में विभाजित किया है कविता के पूर्वाध में नया गांव, नया घर, नया वातावरण, भावी पति आदि के बारे में युवती की नापसंद प्रकट हुई है यहां युवती की सोच- समझदारी देखने को मिलती है अपने पिताजी की आर्थिक स्थिति को देखकर वह अपने बाबा के सामने इच्छा प्रकट करती है कि, उसकी शादी इतनी दूर नहीं करनी चाहिए कि उसे मिलने के लिए बाबा को अपनी बकरियों को बेचना पड़े वह कहती है-

''बाबा!
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने ख़ातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज़्यादा
ईश्वर बसते हों
जंगल नदी पहाड़ नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन''

प्रस्तुत कविता में एक पहाड़ी लड़की, पिताजी से अपनी शादी के बारे में कहती है कि, उसकी शादी उतनी दूर मत करना जहाँ उससे मिलने जाने के लिए घर की बकरियों को बेचना पड़े। उसकी शादी दूर करने पर घरवालों

को उससे मिलने के लिए व्यर्थ का खर्च करना पड़ेगा। आगे वह कहती है कि उसकी शादी उस देश में मत करना जहाँ आदमी से ज्यादा ईश्वर बसते हों। वह अपनी ज़िंदगी सामान्य लोगों के साथ बिताना चाहती है। फिर वह कहती है कि उसकी शादी वहाँ बिलकुल न करना जहाँ जंगल, नदी और पहाड़ नहीं हों। क्योंकि वह प्रकृति के साथ घुल-मिलकर रहना चाहती है।

युवती पिता से शादी के बारे में और भी राय प्रकट करते हुए कहती है-

'वहाँ तो क़तई नहीं
जहाँ की सड़कों पर
मन से भी ज़्यादा तेज़ दौड़ती हों मोटरगाड़ियाँ
ऊँचे-ऊँचे मकान और
बड़ी-बड़ी दुकानें
उस घर से मत जोड़ना मेरा रिश्ता
जिस में बड़ा-सा खुला आँगन न हो
मुर्ग़े की बाँग पर होती नहीं हो जहाँ सुबह
और शाम पिछवाड़े से जहाँ
पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे
मत चुनना ऐसा वर
जो पोचई और हड़िया में डूबा रहता हो अक्सर
काहिल-निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लड़कियाँ उड़ा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी ख़ातिर'

लडकी चाहती है कि, उसकी शादी ऐसी जगह पर न हो जहाँ की सड़कों पर तेज़ दौड़ती मोटर गाडियाँ हों और जहाँ ऊँचे-ऊँचे मकान हों। जिस घर में बड़ा-सा खुला आँगन न हो वहाँ शादी करना वह नहीं चाहती। जहाँ मुर्गे की बाँग से न होती सुबह और शाम को पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखता हो, वहाँ ब्याहकर जाना वह पसंद नहीं करती।

आगे वह पिताजी से कहती है कि हमेशा नशे में डूबे रहनेवाले के साथ उसकी शादी मत करा देना फिर वह कहती है कि आलसी, निकम्मा और मेले से लड़कियों को उड़ा ले जानेवाले के साथ उसकी शादी मत

कराना। जो आदमी बात-बात पर झगड़ा कर कहीं चला जाता हो, ऐसा वर उसे नहीं चाहिए जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाया हो, फसलें नहीं उगाई हो और किसी की सहायता नहीं की हो, उसके साथ उसे शादी नहीं करना है। जो आदमी अनपढ़ है और किसी की सहायता नहीं की हो, उसके साथ उसे शादी नहीं करना है। जो आदमी अनपढ़ हो, उसके साथ ब्याहने से वह इन्कार करती है।

युवती आगे अपनी पसंद के बारे में कहती है- मेरी शादी वहां कर देना जहां आप सुबह जाकर शाम को पैदल लौट सकें कभी मैं दुखी होकर रोने लगे नदी के इस घाट पर तो उस घाट पर स्नान करते तुम मेरा विलाप सुनकर मुझे मिलने के लिए आ सको-

'ब्याहना हो तो वहाँ ब्याहना
जहाँ सुबह जाकर
शाम तक लौट सको पैदल
मैं जो कभी दुख में रोऊँ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण विलाप
महुआ की लट और
खजूर का गुड़ बनाकर भेज सकूँ संदेश तुम्हारी ख़ातिर
उधर से आते-जाते किसी के हाथ
भेज सकूँ कद्दू-कोहड़ा, खेखसा, बरबट्टी
समय-समय पर गोगो के लिए भी
मेला-हाट-बाज़ार आते-जाते
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर-गाँव का हाल-चाल
चितकबरी गैया के बियाने की ख़बर
दे सके जो कोई उधर से गुज़रते
ऐसी जगह मुझे ब्याहना!'

जहाँ सुबह जाकर शाम को लौट सके पैदल, वहाँ उसका ब्याह करना चाहती है। वह दुख से रोती तो नदी के उस पार उसके पिता उसका विलाप सुन सकें, उतनी दूरी पर ही वह शादी करना चाहती है। वह चाहती है

कि उसकी शादी इतनी पास हो, कि वह जब चाहे अपने घरवालों को कुछ भी बनाकर भेज सके। मेला जाते वक्त अपने गाँव के लोगों से मिल सके और गाँव का हाल-चाल पूछ सके, उतनी दूर पर ही वह ब्याहकर जाना चाहती है। वह पिताजी से कहती है कि जहाँ ईश्वर से ज्यादा आदमी बसते हों, जहाँ बकरी और शेर एक ही घाट से पानी पीते हों, वहीं उसका ब्याह कराना। किसी तरह के भेद-भाव के बिना जहाँ लोग रहते हैं वही जगह उसे पसंद है।

लड़की आगे कहती है कि-

'उसी के संग ब्याहना जो
कबूतर के जोड़े और पंडुक पक्षी की तरह
रहे हरदम हाथ
घर-बाहर खेतों में काम करने से लेकर
रात सुख-दुख बाँटने तक
चुनना वर ऐसा
जो बजाता हो बाँसुरी सुरीली
और ढोल-माँदल बजाने में हो पारंगत
वसंत के दिनों में ला सके जो रोज़
मेरे जूड़े के ख़ातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे!

जो आदमी हमेशा साथ रहता हो, सुख-दुख बांटता हो, उसी के साथ उसकी शादी कराना। उसे ऐसा वर चाहिए जो, उसके लिए सुरीली बांसुरी बजाता हो और ढोल-मांदल बजाने में समर्थ हो। वसन्त के दिनों में जो उसके जूड़े की ख़ातिर पलाश का फूल लाता हो, वही उसके लायक वर है। अंत में लड़की पिताजी से कहती है कि, उसके भूखे रहने पर जिससे कुछ खाया नहीं जाता, उसी के साथ वह शादी करना चाहती है।

कवयित्री इस कविता के जरिये यह सूचित करती है कि पुराने ज़माने में बेटियों का विवाह किसी भी वर के साथ कर दिया जाता था। वर्तमान काल में इस स्थिति में बदलाव आया है। अब लड़कियों का पसंद महत्त्वपूर्ण बन गया है। लेकिन कहीं-न-कहीं आज भी पुरानी स्थिति का प्रचार है। निर्मला पुतुल जी समय और परिवेश

के बदलने के साथ समाज में आनेवाले बदलावों पर दृष्टि डालती हैं। खुद की शादी के संबंध में एक लड़की के सपनों का वर्णन कर कवयित्री समाज को प्रेरणा देने की कोशिश करती हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवयित्री ने शादी के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं शहरी आकर्षण के कारण गांव की लड़कियां भी आजकल गांव के लड़कों के साथ शादी नहीं करना चाहती फिर वह कितना भी संपन्न क्यों ना हो, वह कितना भी कमाता हो, लेकिन आज की लड़कियां गांव के साथ नाता नहीं जोड़ना चाहती; इसलिए कविता में युवती ने गांव की संस्कृति गांव का वातावरण और गांव की लड़की के साथ शादी करने की इच्छा प्रकट कर समाज की समस्त लड़कियों को ही विचार करने के लिये बाध्य किया है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. निर्मला पुतुल का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1972 ब) सन् 1871 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. निर्मला पुतुल का जन्म कहां हुआ?

   अ) उज्जैन ब) काशी क) झारखंड ड) दिल्ली

3. आसानी से आजीविका पा सकने के लिए निर्मला पुतुल ने कौनसा कोर्स किया?

   अ) वकीलब) शिक्षक क) समाचार लेखन ड) नर्सिंग

4. निर्मला पुतुल ने इग्नू से कौनसी स्नातक की डिग्री प्राप्त की?

   अ) मराठी ब) संताली क) राजनीतिशास्त्र ड) हिंदी

5. निर्मला पुतुल का पहला कविता संग्रह कौनसा है?

   अ) बंद कमरा ब) बंद घर

   क) नगाड़े की तरह बजते शब्द ड) अपने घर की तलाश में

6. 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल जी के कौनसे काव्य- संकलन की एक श्रेष्ठ कविता है।

   अ) बंद कमरा ब) बंद घर

   क) नगाड़े की तरह बजते शब्द ड) अपने घर की तलाश में

7. निर्मला पुतुल के जीवन पर आधारित फ़िल्म का नाम क्या है?

   अ) गाना ब) बुरू-गारा क) सोना ड) रोना

8. निर्मला पुतुल के तिसरे कविता संग्रह का नाम क्या है?

अ) बेघर सपने ब) कमरा क) बेघर ड) सपने

4.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

ब्याह– शादी, विवाह, लगन– शादी, विवाह, कतई– बिलकुल, रिश्ता– संबंध, पोचई– आदिवासी शराब, काहिल– आलसी, माहिर– निपुण, थारी– थाली, महुआ– पेड का नाम

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1– अ, 2– क, 3– ड, 4– क,

5– ड 6– क, 7– ब, 8– अ

4.7 सारांश :

1. निर्मला पुतुल आदिवासी महिलाओं उत्थान के लिए नियमित संघर्ष कर रही हैं निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी महिलाओं का संघर्ष देखा जा सकता हैं। उजड़ते जंगल की चीख सुनी जा सकती है और विकास का दंश झेल रहे पहाड़ों का दर्द महसूस किया जा सकता है।

2. 'उतनी दूर मत ब्याहना' इस एक कविता के माध्यम से एक आदिवासी लड़की के पूरे जीवन का दर्द समझा जा सकता है आदिवासी समाज किस तरह जल, जंगल, जमीन के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, इस कविता से जान सकते हैं आदिवासी ही नहीं बल्कि समूचे नारी जगत की वेदना को एक कविता कहती नजर आती है एक लड़की का अपने पिता से लगाव, शादी के बाद घर से दूर होने की पीड़ा, दहेज जैसी कुप्रथा, पति का शराबी होना आदि तमाम बातों से गुजरते हुए निर्मला पुतुल जो संदेश देती हैं, वह इस पूरी कविता का मर्म है– 'उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ, जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाया।'

3. एक लड़की प्रकृति के कितना नजदीक होती है, यहां महसूस किया जा सकता है वह अपने पिता से कहती है कि मुझे ऊंचे मकान, दौड़ती मोटरगाड़ियों वाले शहर में मेरा रिश्ता न जोड़ना, बल्कि ऐसी जगह मेरा ब्याह करना जहां बड़ा सा आंगन हो इस कविता को पढ़ें और महसूस करें एक लड़की की इच्छाएं और उसकी पीड़ा– 'बाबा! मुझे उतनी दूर मत ब्याहना' बेटी का पिता के साथ बड़ा मार्मिक संवाद है।

4.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) निर्मला पुतल का साहित्य परिचय
2) 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का उद्देश्य
3) 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता में युवती की इच्छा
4) युवती कौने देश मे शादी करना चाहती है
5) शादी के लिए किस प्रकार का पति चाहिए
6) युवती का गांव के प्रति आकर्षण

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'उतनी दूर मत ब्याहना' इस एक कविता के माध्यम से एक आदिवासी लड़की के दर्द को कैसे समझा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'उतनी दूर मत ब्याहना' कविता की मूल संवेदना समझाइए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

ममता कालिया की 'खांटी घरेलु औरत' कविता को पढ़िए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन

आदिवासी कवयित्री वंदना टेटे की कविताओं का अध्ययन कीजिए।

❖❖❖

इकाई 1

नरेश मेहता का परिचय

अनुक्रमणिका

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 नरेश मेहता का जीवन परिचय ।

1.3.2 नरेश मेहता का व्यक्तित्त्व ।

1.3.3 नरेश मेहता का कृतित्त्व ।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. नरेश मेहता के जीवन से परिचित होंगे ।

2. नरेश मेहता के व्यक्तित्त्व को समझेंगे ।

3. नरेश मेहता के साहित्य प्रदेय से परिचित हो जाएँगे ।

1.2 प्रस्तावना :–

नरेश मेहता अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरे तार सप्तक' के कवि है। उन्होंने नई कविता आंदोलन में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। नरेश मेहता 'नकेनवाद' के भी प्रमुख कवि रहें हैं। यह नकेनवाद नरेश मेहता के नाम से जुड़ा हुआ हैं। यह एक काव्यधारा हैं, इस काव्यधारा में प्रमुख रूप से तीन कवियों का समावेश है। नरेश मेहता का काव्य रागात्मकता और संवेदना से परिपूर्ण है । यही कारण है कि उनके काव्य में लेखन के विविध आयाम दृष्टिगत होते हैं । प्रकृति और नारी चित्रण उनके काव्य में काफी मात्रा में हुआ है । संघर्षशील एवं कृतिशील मानव का चित्रण उनके काव्य में हुआ है । युगीन समस्याओं का चित्रण करते हुए मानव हित की बात उन्होंने पाठकों के सामने रखी है । मानवता की मूल चेतना उनके काव्य में दिखाई देती है । नरेश मेहता के काव्य में जिस कल्पना तत्त्व का चित्रण है वह केवल कोरी कल्पना न होकर वास्तविक जीवन को बयान करती हुई दिखाई देती है । कटघरे में न रहकर काव्य लेखन करने वाला यह कवि मानव मुक्ति की कामना अपने काव्य में करता है । ऐतिहासिक पन्नों से पात्रों को लेकर उसे आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य के जीवन के साथ जोड़ना और उसकी समस्याओं को प्रस्तुत करना उनके काव्य की विशेषता है । उनकी कविता का उद्देश्य ही मानव को बलशाली रूप में प्रस्तुत करना है । व्यक्तिहित में लेखन करनेवाले नरेश मेहता मानव को हर बंदिशों से मुक्ति दिलाने की कोशिश करते नजर आते है । उनकी रचनाएँ हर हालात में मानव जीवन का अन्वेषण करती हुई दिखाई देती हैं ।

1.3 विषय विवेचन:

विषय विवेचन के अंतर्गत हम नरेश मेहता का जीवन परिचय, उनके व्यक्तित्त्व के पहलू और कृतित्त्व की जानकारी प्राप्त करेंगे । किसी भी रचनाकार को गहराई से समझने के लिए प्रस्तुत बातें सहायक सिद्ध होती है।

1.3.1 नरेश मेहता का जीवन परिचय:

1. जन्म :

नरेश मेहता का जन्म दि. 15 फरवरी, सन् 1922 ई. को मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर नामक गाँव में गुजराती परिवार में हुआ । उनका बचपन का नाम पूर्णशंकर था । उनके चाल-चलन और हाव-भाव देखकर नरसिंह गढ़ की राजमाता ने नरेश नाम से पुकारा था । यही नाम हमेशा के लिए उनसे जुड़ गया । साहित्य क्षेत्र में इसी नाम ने उन्हे ख्याति प्राप्त करवाई ।

2. माता–पिता :

नरेश मेहता के पिता का नाम बिहारीलाल मेहता तो माता का नाम सुंदरबाई था । नरेश उनके पिता की तिसरी पत्नी के पुत्र थे । अपनी डेढ साल की अवस्था में ही उनकी माताजी की मृत्यु हो गई । पुत्र प्राप्ति के लिए तीनों पत्नियों को खो देने के कारण नरेश के प्रति पिता का अजीब सा भाव था । एक पिता अपने पुत्र के प्रति जो ममता का, स्नेह का बंधन बनाए रखता है ऐसे बंधन का यहाँ अभाव दिखाई देता है ।

3. शिक्षा – दीक्षा :

नरेश मेहता की प्राथमिक शिक्षा अपने चाचा के यहाँ पर हुई । उनके चाचा श्री शंकरलाल जी हेडमास्टर थे, बाद में डिप्टी कलेक्टर बने । आगे की पढाई के लिए नरेश जी के पिताजी ने उन्हें बुआ के घर नरसिंहगढ़ भेज दिया । इसके बाद उज्जैन से उन्होंने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और बनारस जाकर एम. ए. की शिक्षा पूरी की । अध्ययन के दौरान उन्होंने केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्था देहरादून से सेकेंड लेफ्टिनेंट का प्रशिक्षण प्राप्त किया था ।

4. नौकरी :

नरेश मेहता ने अपने करियर का प्रारंभ ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद से किया । वहाँ पर वे कार्यक्रम अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए थे । इस नौकरी में उनका तबादला होता रहा । नागपुर, लखनऊ और प्रयाग आदि शहरों में उन्होंने नौकरी की । इस दौरान उनके साहित्य सृजन का सिलसिला शुरू था । सन् 1953 ई. में उन्होंने आकाशवाणी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और स्वतंत्र लेखन में जुड़ गए । इस समय में उन्होंने 'साहित्यकार' और 'कृति' पत्रिका का संपादन किया ।

5. पारिवारिक जीवन :

नरेश मेहता की पत्नी महिमा किदवई गर्ल्स कॉलेज, कानपुर मे समाजशास्त्र की अध्यापिका थी । विवाह के उपरांत प्रयाग में सी. डी. ग्रेड महाविद्यालय में साठ रुपये महिना वेतन पर नौकरी करने लगी । नरेश के साहित्य सृजन में पत्नी का सहयोग विशेष रहा है । स्वयं नरेश जी कहते थे मैं जो साहित्य सृजन करता हूँ उसकी भाषा मेरी हैं बाकी सब पत्नी का हैं । इन्हें दो संतानें रही है, ईशान और वान्या जिन्हें प्यार से क्रमश: बाबुल और बुलबुल पुकारा जाता था । ईशान की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई । वान्या विवाह के उपरांत विदेश में चली गई ।

6. मृत्यु :

नरेश मेहता की मृत्यु दि. 22 नवंबर, सन् 2000 ई. में भोपाल में हुई । अपने मृत्यु समय कवि 78 वर्ष के थे ।

1.3.2 नरेश मेहता का व्यक्तित्त्व:

व्यक्तित्त्व व्यक्ति की भाववाचक संज्ञा है और यह संज्ञा व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है । किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्त्व उसके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है । समाज और साहित्य में रचनाकार की एक प्रतिमा होती है वही प्रतिमा उसके व्यक्तित्त्व का निर्माण करती है ।

नरेश मेहता के व्यक्तित्त्व को हम निम्न प्रकार से स्पष्टता देख सकते है –

1. स्पष्टता :

नरेश मेहता स्पष्ट वक्ता के रूप में पहचाने जाते है । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर संघ से जुड़े होने के कारण उन्हें इस बात का परिणाम भी भुगतना पड़ा । नौकरी के दौरान उनका बार–बार तबादला होना उनके स्पष्टोक्ति के कारण ही हुआ है । किसी भी बात को बेबाक पद्धति से वे प्रस्तुत करते थे । तत्कालीन दबाव और विसंगतियों को उन्होंने बिना किसी लाग–लपेट के अपने पाठकों के सन्मुख रखा है । गलत व्यवस्था का तीव्र विरोध उन्होंने स्पष्ट रूप से किया है । जो उनके स्पष्ट वक्ता रूप को उजागर करती हैं ।

2. संघर्षमय :

नरेश मेहता का जीवन काफी संघर्षमय रहा है । बचपन में ही माता की मृत्यु हो जाने के कारण वह मातृ स्नेह से वंचित रहे है । पिता का स्नेह भी उन्हें नहीं मिला । अपनी संतान के प्रति देखने का उनका नजरिया अलग था । अपने पिता के पास भी वह बहुत कम समय रहे । अपनी प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने चाचा तथा बुआ के पास रहकर पूरी की । आगे की पढ़ाई भी उन्होंने अकेले रहकर अलग–अलग शहरों में पूरी की । उन्होंने जो भी प्राप्त किया वह संघर्ष करके ही पाया है । उन्हें विरासत से कुछ भी नहीं मिला । यही संघर्ष वह अपनी कविता तथा अन्य विधाओं में पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं ।

3. स्वभाव :

नरेश मेहता का स्वभाव प्रारंभ मे बहुत क्रोधी था । उनका इस तरह स्वभाव निर्माण में परिवार महत्त्वपूर्ण कारण बना है । उन्होने जो चाहा वह उन्हें कभी नहीं मिला । चाचा के अनुशासन में रहने के कारण उनका स्वभाव विद्रोही भी बना । माता पिता की कमी के कारण कवि अंतर्मुख बने ।

4. संगीत में रुचि :

नरेश जी को संगीत में रुचि रही है । अपने महाविद्यालयीन पढाई के दिनों उनकी यह रुचि प्रबल रही है। उनका कंठ बहुत मधूर था यही कारण था वे अपने दोस्तों को गीत गाकर सुनाते थे और उनकी वाह–वाह लेते थे ।

5. धर्म और संस्कृति प्रिय :

नरेश मेहता को अपनी संस्कृति से बेहद लगाव था । स्वतंत्र विचारों के यह कवि धार्मिकता में काफी आस्था रखते थे । उनकी यह धार्मिक आस्था पारंपरिक न होकर थोड़ी अलग हैं । स्नान करके गायत्री मंत्र का जाप करना, ध्यान धारणा करना यह उनकी धार्मिकता का अंग हैं । वे पूरे वर्ष मे केवल तीन ही व्रत रखते थे महाशिवरात्री, जन्माष्टमी और दुर्गाष्टमी । सारे त्यौहार- पर्व बडे जोश और उत्साह से मनाते थे । ये सारे उत्सव भारतीय संस्कृति को दर्शाते हैं ।

6. आतिथ्यशील :

नरेश मेहता का व्यक्तित्त्व अतिथ्यशील रहा है । वे अपने घर पर आनेवाले आगंतुक का बडे आनंद से स्वागत करते है । उनके घर पर आनेवाला कोई भी व्यक्ति बडे आनंद के साथ वापस लौटता है । अतिथि का स्वागत करने में उन्हें परमानंद की अनुभूति प्राप्त होती है ।

7. राष्ट्रीयता:

नरेश मेहता के व्यक्तित्त्व का एक पहलू राष्ट्रीयता है । सन् 1942 ई. के स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने हिस्सा लिया था । उस समय उनकी उम्र बीस वर्ष की थी । स्वाधीनता को लेकर अंग्रेजों के खिलाफ उनके मन में आक्रोश और विद्रोह था । अपनी छात्र अवस्था में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ नारेबाजी की थी। उन्होंने स्वाधीन भारत के सपने देखे थे । इस प्रकार स्वाधीनता उनके व्यक्तित्त्व का अंग बन गई ।

1.3.3 नरेश मेहता का कृतित्त्व:

नरेश मेहता ने अनेक विधाओं में हिंदी साहित्य का सृजन किया है । नई कविता को समृद्ध करने में वे हमेशा जुटे रहे । उनके द्वारा लिखित साहित्य निम्न प्रकार है -

- **कविता संग्रह :**

  'बनपाखी! सुनो', 'बोलने दो चीड को', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'अरण्या', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'पिछले दिनों नंगे पैरों', 'देखना एक दिन' ।

- **खंडकाव्य :**

  'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'प्रवाद पर्व', 'शबरी', 'प्रार्थना पुरुष' ।

- **प्रतिनिधि कविताएँ :**

  'आधुनिक कवि : नरेश मेहता', 'चैत्या' (प्रतिनिधि कविताएँ) ।

- **उपन्यास :**

'डूबते मस्तूल', 'यह पथ बंधु था', 'धूमकेतु : एक श्रुति दो एकान्त', 'नदी यशस्वी है', 'प्रथम फाल्गुन', 'उत्तर कथा: एक', 'उत्तर कथा : दो' ।

- **कहानी :**

'तथापि', 'एक समर्पित महिला', 'जलसाघर' ।

- **नाटक :**

'सुबह के घंटे', 'खंडित यात्राएँ' ।

- **एकांकी :**

'सनोवर के फूल', 'पिछली रात की बरफ' ।

- **निबंध :**

'काव्य का वैष्णव व्यक्तित्त्व', 'मुक्तिबोध : एक अवधूत कविता', 'शब्द पुरुष: अज्ञेय', 'काव्यात्मकता का दिक्काल', 'हम अनिकेतन' ।

- **यात्रा वृत्त :**

'साधु न चलै जमात' ।

- **अनुवाद :**

'आधी रात की दस्तक' ।

- **संकलन में शामिल :**

'तथागत' (काशी वि.वि. के विद्यार्थियों का संकलन), 'दूसरा सप्तक' (सं. अज्ञेय) ।

- **संपादन :**

'वाग्देवी', 'गांधी यात्रा', आदि ।

- **पुरस्कार :**

1) मध्य प्रदेश सारस्वत सम्मान ।

2) मध्य प्रदेश शासन शिखर सम्मान ।

3) उत्तर प्रदेश शासन सम्मान ।

4) हिंदी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पारितोषिक ।

5) केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

6) उत्तर प्रदेश शासन का सर्वोच्य भारत-भारती सम्मान ।

7) मध्य प्रदेश नाटक लोक कला अकादमी द्वारा सम्मान ।

8) ज्ञानपीठ पुरस्कार ।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. नरेश मेहता का जन्म .... ई. में हुआ ।

   अ) दि. 25 मार्च, सन् 1920　　ब) दि 15 फरवरी, सन् 1922

   क) दि 18 मार्च, सन् 1924　　ड) दि. 25 नवंबर, सन् 1924

2. नरेश मेहता के नाम से जुड़ा हुआ काव्यवाद .... हैं ।

   अ) छायावाद　　ब) नकेनवाद　　क) हालावाद　　ड) प्रगतिवाद

3. नरेश मेहता का जन्म मध्य प्रदेश के ....में हुआ ।

   अ) जबलपुर　　ब) शाजापुर　　क) उज्जैन　　ड) इंदौर

4. नरेश मेहता का बचपन का नाम ....था ।

   अ) पूर्णशंकर　　ब) दयाशंकर　　क) करुणाशंकर　　ड) रामशंकर

5. नरेश मेहता के पिताजी का नाम ....था ।

   अ) रामलाल　　ब) बिहारीलाल　　क) कांतिलाल　　ड) शामलाल

6. नरेश मेहता की माताजी का नाम ....था ।

   अ) सुंदरबाई　　ब) विमलाबाई　　क) लक्ष्मीबाई　　ड) मीराबाई

7. नरेश मेहता की पत्नी का नाम.............. था ।

   अ) महिमा　　ब) निलम　　क) पूनम　　ड) सोनम

8. नरेश मेहता के बेटे का नाम.................. था ।

   अ) सिद्धार्थ　　ब) सागर　　क) मोहन　　ड) ईशान

9. नरेश मेहता के बेटी का नाम.................. था ।

अ) वान्या ब) पायल क) सुमित्रा ड) सागरिका

10. नरेश मेहता ने नौकरी की शुरूआत .... से की थी ।

अ) आकाशवाणी ब) रेलवे क) पत्रकारिता ड) टेलिव्हीजन

11. नरेश मेहता ने .... पत्रिका का संपादन किया था ।

अ) चाँद ब) मतवाला क) दर्पण ड) साहित्यकार

12. नरेश मेहता की मृत्यु. ....ई. में हुई ।

अ) दि. 22 नवंबर, सन् 2000 ब) दि. 30 दिसंबर, सन् 1999

क) दि. 25 सितंबर, सन् 2001 ड) दि. 15 जनवरी, सन् 2005

13. नरेश मेहता एक वर्ष में .... व्रत रखते थे ।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

तबादला : एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना ।

प्रदेय : वह, जो कुछ दिया जाता है ।

सृजन : निर्माण ।

अन्वेषण : खोजना, ढूँढना, किसी बात का पता लगाना ।

परिप्रेक्ष्य : दृष्टि और दृश्य बोध के संदर्भ में ।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर:

1) दि. 15 फरवरी, सन् 1922 2) नकेनवाद 3) शाजापुर 4) पूर्णशंकर

5) बिहारीलाल 6) सुंदरबाई 7) महिमा 8) ईशान

9) वान्या 10) आकाशवाणी 11) साहित्यकार

12) दि. 22 नवंबर, सन् 2000 13) तीन

1.7 सारांश:

1. नई कविता लेखन मे नरेश मेहता ने विशेष योगदान दिया हैं।
2. नरेश मेहता नकेनवाद के भी प्रमुख कवि रहे है ।
3. पारिवारिक संघर्ष, शिक्षा हेतु दूसरों पर निर्भर होते हुए भी अच्छी शिक्षा प्राप्त की है ।
4. उनकी कविताएँ लघु मानव को साहस प्रदान करती है ।
5. उनका लेखन मानव को केंद्र में रखकर है, जिसमें मानव मुक्ति का स्वर गुंजता है ।
6. पौराणिक आख्यानों को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर उन्होंने अपनी रागात्मकता और संवेदनात्मक दृष्टि का परिचय दिया है ।
7. नारी आत्मनिर्भरता की बात कवि ने अपने खंडकाव्य के माध्यम से प्रस्तुत की है ।
8. नरेश मेहता के काव्य में प्रकृति के अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं ।
9. नरेश मेहता को प्राप्त साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार उनके साहित्यिक प्रदेय को प्रस्तुत करते हैं ।

1.8 स्वाध्याय:

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. नरेश मेहता का व्यक्तित्त्व स्पष्ट कीजिए ।
2. नरेश मेहता के खंडकाव्य लिखिए ।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. नरेश मेहता का परिचय लिखिए।
2. नरेश मेहता का साहित्य का परिचय लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. नरेश मेहता के समान मराठी के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कवि की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
2. नरेश मेहता के समकालीन मराठी कवियों की सूची बनाइए ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए:

1. नरेश मेहता का काव्य – अमियचंद पटेल
2. भारतीय साहित्य के निर्माता नरेश मेहता – प्रभाकर श्रोत्रिय
3. शबरी – नरेश मेहता
4. महाप्रस्थान – नरेश मेहता

❖❖❖

इकाई 2

'संशय की एक रात' खंडकाव्य का कथानक।

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

- 2.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का कथानक
- 2.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चरित्र चित्रण
  - 2.3.2.1 राम
  - 2.3.2.2 लक्ष्मण
  - 2.3.2.3 बिभिषन
  - 2.3.2.4 हनुमान
  - 2.3.2.5 अन्य पात्र
- 2.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित वर्णन

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्दावली, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

1. पौराणिक आख्यान के माध्यम से समकालीन परिवेश में आधुनिक बोध से परिचित होंगे।
2. 'संशय की एक रात' की कथावस्तु को समझेंगे।
3. 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को समझेंगे।
4. युद्ध की विभाषिका और उसकी अनिवार्यता से अवगत होंगे।
5. व्यक्तिगत हित से सार्वजनिक हित के महत्त्व को समझ सकेंगे।
6. मन को विचलित करनेवाले जीवन के प्रसंगों का सामना करने की क्षमता से परिचित होंगे।
7. पौराणिक पात्रों की वर्तमान परिवेश में होनेवाली प्रासंगिकता से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना

'संशय की एक रात' साहित्यकार नरेश मेहता का रामकथा पर आधारित लिखा गया खंडकाव्य है। कवि ने रामायण के आधार पर पौराणिक आख्यान के माध्यम से वर्तमानकालीन बोध को स्पष्ट किया है। राम भारतीय समाज के मेरुदंड और सनातन प्रज्ञा पुरुष है। वे सोचते है कि सीता की प्राप्ति के लिए युद्ध करना सार्वत्रिक है या व्यक्तिगत ? राम के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव मन की अनिश्चिता का चित्रण किया है। आज का मानव भी युद्ध की अनिवार्यता अथवा शांति की प्रस्थापना की द्विधा मन:स्थिति से संघर्ष करता नजर आता है। कवि ने रामकथा को एक नविन दृष्टिकोण से रचा है, जिसमें राम के समक्ष यह प्रश्न है कि युद्ध करें अथवा ना करें। राम की इस अवस्था का वर्णन इस खंडकाव्य के कथानक का केंद्रीय विषय है। खंडकाव्य के राम, लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान प्रधान पात्र है ।

2.3 विषय विवेचन

पौराणिक रामकथा को हर युग के रचनाकार ने अपने अंदाज में दोहराया है । साहित्यकार अपनी युगीन समस्याओं को राम कथा के माध्यम से प्रस्तुत करने की आकांक्षा रखता है। भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखा यह खंडकाव्य आधुनिक युग के मनुष्य की आधे -अधूरेपन की भावना, छटपटाहट को प्रस्तुत करता है। नैतिक मूल्यों का विघटन युद्ध का कारण है। प्रस्तुत खंडकाव्य के राम के मन में दो संशय है 1. व्यक्तिगत समस्या सार्वजनिक समस्या कैसे हो सकती है? 2. क्या युद्ध से ही शांति स्थापित हो पाएगी? राम के मन मे उत्पन्न यही संशय खंडकाव्य की कथावस्तु में निहित है। इस खंडकाव्य की कथावस्तु चार सर्गों में विभाजित है।

1. सांझ का विस्तार और बालूतट

2. वर्षा भीगे अंधकार का आगमन

3. मध्य रात्रि की मंत्रणा और निर्णय

4. संधिग्ध मन का संकल्प और सबेरा

2.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का कथानक

प्रथम सर्ग

साँझ का विस्तार और बालूतट

'संशय की रात' खंडकाव्य के आरंभ में एकांत संध्या के समय राम रामेश्वरम के सिंधुतट पर उदास अवस्था में इधर – उधर टहल रहे हैं। रावण से युद्ध के लिए सेतुबंध बन चुका है। परंतु राम के मन में युद्ध करें अथवा न करें इस बारे में संशय निर्माण हो गया है। अनिश्चितता की स्थिति में विचारमग्न राम अपने आप से कहते हैं कि, कितनी ही बार सिंधुतट पर टहलते रहे और सागर की रेती से दुर्ग तथा सीता का मुख बनाते रहे हैं। परंतु हर बार सागर ज्वर के पानी से वह मिटता रहा है। सीता की प्राप्ति के लिए युद्ध करें अथवा न करें इस दुविधा में पड़े राम ने कितनी ही बार युद्ध टालने के लिए रावण के द्वार पर अपने शांतिदूत भेजकर उसका मन परिवर्तन करने का प्रयास किया था। पर हर बार शांतिदूत खाली हाथ ही वापस लौटे हैं। संशयग्रस्त राम जानकी के लिए व्याकुल होकर पश्चाताप से कहते हैं कि, जानकी को छोड़कर स्वर्णमृग की प्राप्ति के लिए उसके पीछे क्यू चले गए ? राम सोचते हैं कि, सीता के पिता जनक और अन्य परिजन सीता का अपहरण हो जाने से क्या विचार करते होंगे। स्वयं सीता क्या सोच रही होगी ? राम इन विचारों में खोए हैं इतने में लक्ष्मण वहाँ पहुँच जाता है। रेत पर अंकित राम के पदचिन्हों को देखकर लक्ष्मण उनके मन की चिंता को समझ जाता है। राम उसे बताते हैं कि, युद्ध की विभीषिका को सोचकर उन्हे युद्ध के प्रति वितृष्णा निर्माण हो गई है। इसलिए उन्होंने युद्ध न करने का संकल्प किया है।

राम के इस निर्णय को सुनकर लक्ष्मण क्षणभर के लिए अवाक रह जाता है। वह उन्हें समझाने का प्रयास करता हुआ कहता है कि, आप परिजनों के प्रिय, प्रजाजनों के राजा और हम सबके आशास्थान है। अयोध्या में सब सीता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब युद्ध के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस दशा में आपके मन में यह संशय क्यूँ ? युद्ध करना सिर्फ हमारी विवशता नहीं है। हम किसी अदृश्य हाथों के संचालित मात्र नहीं है, हमारी सार्थकता कर्म में है। हममें भी संकल्पित प्रज्ञा, वर्चस्व की निष्ठा और बलिदान की इच्छा है। युद्ध के मार्ग पर चलने से कदाचित यश मिलेगा अथवा अपयश। परंतु युद्ध से पलायन करना असंभव है। जब तक हम जीवित

हैं, हमारा कर्म और वर्चस्व कोई नहीं छीन सकता। यदि युद्ध ही नहीं करना था, तो सेतुबंध बनाने का और युद्ध का आवाहन करने का अर्थ ही क्या था ? यदि आपको युद्ध के परिणामों की चिंता हो रही है तो आप मुझे अपना पुरुषत्व सिद्ध करने की आज्ञा दीजिए। लंका यदि किसी ध्रुव पर भी होगी तो भी मैं अकेला जा कर युद्ध करके सीता को वापस लाऊँगा। मुझे अग्निकुंड अथवा कर्म की चुनौती स्वीकार है, पर मैं आपकी चिंता नहीं देख सकता।

कुछ क्षण के मौन वातावरण के बाद राम लक्ष्मण कहते हैं कि, लक्ष्मण, मैंने तुम पर कभी अविश्वास नहीं किया। परंतु मैं युद्ध को बचाना चाहता हूँ। मानव में जो भी श्रेष्ठ है मैं उसे जगाना चाहता हूँ। मैं कायर नहीं परंतु मुझे युद्ध प्रिय भी नहीं है। मैं नहीं चाहता कि अन्य मेरे लिए दुख सहे और वन-वन भटकते रहे। राम, पिता दशरथ की मृत्यु और उससे विधवा बनी माताएँ, सीता का अपहरण, उर्मिला का विरह इन सब बातों के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हैं। वह कहते हैं कि, मेरी व्यक्तिगत समस्या ऐतिहासिक कारण को क्यूँ जन्म दे ? मेरा व्यक्तित्त्व कभी भी विद्रोही नहीं रहा है। मैं आज तक सौम्य को ही स्वीकार करता रहा हूँ। मैं सदा ही केले के फल के समान विनयशील रहा हूँ। यदि युद्ध स्वीकार कर ले तो क्या विश्वास है कि युद्ध के बाद शांति मिलेगी ?

द्वितीय सर्ग : –

वर्षा भीगे अंधकार का आगमन

दूसरे अध्याय के प्रारंभ में लक्ष्मण राम को सिंधुतट पर अकेला छोड़कर हनुमान के साथ विभीषण के शिविर की ओर चले जाते हैं। राम अकेले सेतुबंध की ओर निकल आते हैं। सेतुबंध के एक बुर्जी पर खड़े होकर वे उदास भाव से सागर को देख रहे हैं। इस समय जोर से वर्षा हो रही है और हवा बह रही है। राम स्तब्ध खड़े हैं पर मन विचलित है। भाद्रपद की संध्या में हो रही वर्षा में राम भीग जाने को उत्सुक है। वे सोचते हैं कि संभवत: इस बरसात के पानी से मन का संशयाग्नि शांत हो जाए। निराश और हताश राम सागर से निवेदन करते हैं कि, यदि मानवीय प्रश्नों का उत्तर सिर्फ युद्ध है, तो मुझे ऐसी विजय नहीं चाहिए। मैं यह धनुष्य, बाण, तलवार और शिरस्त्राण तुम्हें समर्पित करता हूँ। मुझे ना साम्राज्य चाहिए और मानव रक्त से सनी धरती पर कदम रखकर आती सीता भी नहीं चाहिए। आज तक मैं अपने कुल के विनाश का कारण रहा हूँ और अब जन के विनाश का कारण नहीं बनूँगा।

विचारमग्न राम को नील युद्धवेश में आकर सूचना देता है कि, पुल की मीनार के पीछे एक छाया घूमती दिखाई दे रही है और उसके हाथ में एक पक्षी फड़फड़ा रहा है। दोनों छायाएँ राम को एकांत में ले जाकर अपना परिचय देती है कि, वह पिता दशरथ की और जटायु की आत्माएं है। अपने मन की व्यथा दशरथ की छाया के सामने व्यक्त करते हुए राम कहते हैं कि, राज्य पाने की कामना मैंने कभी नहीं की थी, फिर भी गृहकलह निर्माण

हो गया, वनवास मिलने के बाद सोचा था कि शांत – एकांत में रहूँगा, परंतु कदम – कदम पर अनेक घटनाएं घटित होती गई और अब कोई पथ दिखाई नहीं दे रहा है। सामने केवल युद्ध और उसकी विभीषिका ही नजर आ रही है। राम के मन में उत्पन्न संशय का निराकरण करने हेतु दशरथ की छाया उससे कहती है कि, तुम सत्य और अधिकार युद्ध के बिना प्राप्त करना चाहते हो। परंतु तुम्हारे द्वारा भेजे गए शांतिदूत हर बार खाली हाथ ही वापस आये है। इस दशा में युद्ध के प्रति तुम्हारी अनासक्ति कायरता नहीं है क्या ?

'कीर्ति, यश, नारी, धरा,
जय, लक्ष्मी
यह नहीं है कृपा
या अनुदान।
मेरे पुत्र
भिक्षा से नहीं
वर्चस्व से
अर्जित हुए हैं आज तक।'

दशरथ की छाया राम को विश्वास दिलाती है कि, मेरी मृत्यु का कारण मेरा मोह था, इसलिए मेरी मृत्यु का तुम्हारे द्वारा पश्चाताप करना व्यर्थ है। तुम्हारा युद्ध अपनी अनास्था अथवा संशयी व्यक्तित्व के विरुद्ध नहीं है, वह असत्य के विरुद्ध है। राम अपने मन की आशंका को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, सारे शुभ-अशुभ यदि केवल युद्ध से प्रतिपादित होते हैं, तो यह अंतिम सत्य नहीं हो सकता है। दशरथ और जटायु की छाया राम को युद्ध के लिए प्रेरित करते हुई कहती हैं कि, संशय को छोड़कर कर्म का चुनाव करो।

तृतीय सर्ग

मध्य रात्रि की मंत्रणा और निर्णय

राम अपने शिविर में लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव और जामवंत के साथ युद्ध के विषय में चर्चा कर रहे हैं। लक्ष्मण सब को संबोधित करते हुए कहते हैं, क्या आपको पता है कि राम रघुकुल के दुखों का कारण स्वयं को मानते हैं और उनके अनुसार सीता का अपहरण उनकी व्यक्तिगत समस्या है। इसलिए युद्ध नहीं होगा। लक्ष्मण की इस बात पर हनुमान कहते हैं कि, यदि सीता का हरण राम की व्यक्तिगत समस्या होती, तो यह कोटि-कोटि साधारण जन समूह किसके मंत्र और शक्ति से अपनी काली, दुबली, पतली देह लेकर प्रथम बार फूत्कार कर जागते? अपनी जाति, कुल और प्रदेश को बुलाकर किसके आवाहन पर महासेतु का निर्माण किया है ?

यह महासेतु मनुष्य की विद्रोही भावना का अद्भुत प्रतीक है। किसने रावण के अन्याय से ग्रस्त दक्षिण प्रदेश के असंख्य साधारण लोगों में स्वतंत्रता का बोध कराया है ? हनुमान कहते हैं कि,

''सीतामाता
भले ही राम की पत्नी हो
किसी की वधू
किसी की दुहिता हो
पर
हम कोटि-कोटि जनों की तो केवल
प्रतीक है
अशोकवन की सीता
हम साधारण की अपहृत स्वतंत्रता''

राम अपने मन के संशय को व्यक्त करते हैं कि, युद्ध की अनिवार्यता को मैं भी जानता हूँ पर युद्ध के उपरांत शांति प्राप्त होगी, इसका क्या विश्वास है ? कहीं यह युद्ध आनेवाले युद्ध का कारण न बन जाए। इस पर हनुमान कहते हैं कि, यह युद्ध आनेवाले संभावित युद्ध का कारण बनेगा इस डर से हम न्याय और अधिकार छोड़ दे, यह नहीं हो सकता। सुग्रीव राम को यकीन दिलाते हैं कि, यह युद्ध न्याय का है, क्योंकि दक्षिण प्रदेश के सामंतों पर अधिकृत कर रावण ने पहले ही युद्ध का बीज बोया है। सीतामाता को आपको वापस सौंपकर हम ऋणमुक्त ही होंगे।

राम मौन बैठे विभीषण से उनकी राय पूछते हैं, तो विभीषण बताते हैं कि, युद्ध स्वत्त्व और अधिकार प्राप्त करने का अंतिम मार्ग है। विभीषण को यह भी खेद है कि अपने ही राष्ट्र के प्रति हो रहे आक्रमण का वह साथ दे रहे हैं। इस खंडकाव्य में राम के समान विभीषण भी खंडित व्यक्तित्त्व है। वह कहते हैं कि, यदि युद्ध होगा तो लंका की पराजय सुनिश्चित है। उन्हें दुख है कि युद्ध में उनके राज्य का विध्वंस हो जाएगा। परंतु युद्ध अनिवार्य है। हनुमान, सुग्रीव और लक्ष्मण के द्वारा समझाने पर राम परिषद की इच्छा के अनुसार युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग

संदिग्ध मन का संकल्प और सबेरा

चतुर्थ सर्ग में सबेरे के समय राम के शिविर के गवाक्ष से सूरज की आभा दिखाई दे रही है। युद्धवेश में राम बाहर के सैन्यदल और कोलाहल को देख रहे हैं। युद्ध अभियान की तैयारी हो रही। इस स्थिति में राम स्वयं

से कहते हैं कि, मैंने युद्ध करने का निर्णय लिया है। मेरे अंतर्मन का युद्ध आज भी संभव है। परंतु यह निर्णय सबका है, जिसे मैंने स्वीकार किया है। राम का संशयी व्यक्तित्त्व कह उठता है कि बड़े विवश भाव से हमने युद्ध का निर्णय को स्वीकार किया है –

''ओ मेरे विवेक
मुझे प्रश्न मत करो,
प्रश्न की बेला अब नहीं रही,
अब मैं केवल प्रतीक्षा हूँ,
कवचित कर्म की,
प्रतिश्रुत युद्ध हूँ
निर्णय सबका
सबके लिए।''

राम अपने विवेक से कहते हैं कि, अब सिर्फ कर्म करना है। अब कोई प्रश्न मत करो, अब चाहे युद्ध के बाद शांति हो या युद्ध ही युद्ध का उत्तर । संशय की कोई बेला अब शेष नहीं रही है ।

2.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चरित्र चित्रण

2.3.2.1 राम का चरित्र चित्रण

किसी भी खंडकाव्य में कथावस्तु के साथ–साथ पात्र योजना की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। पात्र ही कथानक को गतिशील बनाते हैं। 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में राम, लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान प्रधान पात्र है। राम के चरित्र को विभिन्न विशेषताओं के साथ चित्रित किया गया है।

1) खंडित व्यक्तित्त्व – 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के राम के मन में सीता की प्राप्ति के लिए युद्ध करें अथवा ना करें इस विषय में संशय निर्माण हो गया है। वह सीता को पाने के लिए रावण से युद्ध करके व्यक्तिगत समस्या के लिए नर संहार नहीं करवाना चाहते। राम को इस बात का भी विश्वास नहीं है कि, युद्ध के उपरांत शांति स्थापित हो जाएगी या यह युद्ध अनागत युद्ध का कारण बनेगा। खंडकाव्य में विविध पात्रों के समक्ष राम अपने मन की आशंका को अभिव्यक्त कर देते हैं। वह कायर नहीं, परंतु उन्हें युद्ध प्रिय भी नहीं है। राम शांति के समर्थक है।

2) आधुनिक मानव का प्रतीक – नरेश मेहता द्वारा भारत – चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखा गया ङ्गसंशय की एक रातफ खंडकाव्य राम के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को उजागर करता है। समाज में जैसे–

जैसे अभिजात्य तत्त्वों का विकास होता है, वैसे-वैसे मानव आचरण के विधेय भी जटिल होते जाते हैं। वाल्मीकि और तुलसी की रामायण में राम का व्यक्तित्त्व जटिल नहीं। परंतु इस खंडकाव्य के राम उन मूल्यों का अन्वेषण करना चाहते हैं जिससे संपूर्ण मानवता को आज के संदर्भ में सार्थकता प्रदान की जा सके। राम आधुनिक मानव के प्रतीक है, जो स्वार्थ और परमार्थ, राग और वैराग्य, कर्म और वर्चस्व, युद्ध और शांति, व्यष्टि और समष्टि, आस्था और अनास्था, संकल्प और विकल्प, भावुकता और विवेक, पलायन अथवा विद्रोह इन मूल्यों के टकराव के कारण स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहा है। राम भले ही इतिहास पुरुष और महामानव है, परंतु इस खंडकाव्य में वे आधुनिक मानव के प्रतीक के रूप में वर्णित है।

3) मानवता के पक्षधर – 'संशय की एक रात' के राम मानवता के समर्थक है। वह सीता की मुक्ति को व्यक्तिगत समझ कर उसके लिए समस्त मानव समाज का नरसंहार नहीं करवाना चाहते। वह युद्ध की विभीषिका के बारे में सोच कर चिंतित हो जाते हैं। राम रघुकुल के विनाश का कारण स्वयं को मानते हैं और अब युद्ध करके जन के विनाश का कारण नहीं बनना चाहते। रावण से युद्ध टालने के लिए उन्होंने कई बार अपने शांतिदूत रावण के द्वार पर भेजे थे, पर वह हर बार खाली हाथ ही वापस आए हैं। राम के मन में यह भी संशय है कि इस युद्ध के बाद भी शांति स्थापित होगी या नहीं। अवसादग्रस्त अवस्था में वे सोचते हैं कि मानव संहार से प्राप्त विजय मुझे नहीं चाहिए और ना ही रक्त से सनी धरती पर कदम रखती सीता मुझे चाहिए।

4) संयमी और चिंतनशील – खंडकाव्य के राम सिंधुतट पर विचारमग्न अवस्था में इधर-उधर टहलते हुए युद्ध और उससे उत्पन्न विभीषिका के बारे में सोच रहे हैं। उनका संशयग्रस्त मन युद्ध करें अथवा नहीं इस विषय में निर्णय नहीं कर पा रहा है। परंतु वे इस विषय में उद्विग्न या उत्तेजित नहीं है। वह सनातन पुरुष होने के कारण सीता मुक्ति की व्यक्तिगत समस्या को सार्वजनिक समस्या नहीं मानते। युद्ध अथवा शांति इस विषय में चिंतन करते दिखाई देते हैं। वे संहार को अमानवीय पक्ष मानते हैं। अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं के बारे में भी गंभीरता से सोचते हैं। उन्हे परिताप है कि वे स्वर्णमृग के पीछे क्यूँ दौड़े ? सीता का अपहरण होने से जनक उनके बारे में क्या सोचते होंगे ? सीता उनके बारे में क्या सोचती होगी ?

5) जनतांत्रिक मूल्यों के समर्थक – रामकथा के माध्यम से नरेश मेहता ने पौराणिक आख्यान के सहारे समकालीन परिवेश में आधुनिक बोध को स्पष्ट किया है। भारतीय संस्कृति के मेरुदंड होनेवाले राम जनतांत्रिक मूल्यों के समर्थक है। वह सीता की मुक्ति के लिए मानव सहार नहीं चाहते, परंतु युद्ध परिषद का निर्णय स्वीकार कर युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं। वे इस युद्ध को नैतिकता की दृष्टि से अंक रहे थे परंतु वानरों में अथाह समुद्र बांधने की शक्ति का उन्मेष देखकर उन्हें निश्चय हो गया कि यह उनका व्यक्तिगत युद्ध नहीं तो सार्वजनिक युद्ध है। नरेश मेहता ने महामानव को मानवीय स्तर पर लाकर कर्म की अनिवार्यता की सार्थकता प्रदान की है।

2.3.2.2 लक्ष्मण का चरित्र चित्रण

लक्ष्मण राम के अनुज है। 'संशय की एक रात' में लक्ष्मण राम के संशयग्रस्त और परिताप – अनुताप करते देखकर चिंतित हो जाते हैं। वे राम की चिंता और संशय को समाप्त करना चाहते हैं। वे राम से उनकी चिंता का कारण पूछते हैं। लक्ष्मण राम को अपनी संकल्पित प्रज्ञा, वर्चस्व इच्छा तथा उत्सर्जित इच्छा और पुरुषत्त्व का विश्वास दिलाते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि, वह कर्म की चुनौती को स्वीकार करने में पीछे नहीं होंगे। राम द्वारा सीता मुक्ति को व्यक्तिगत समस्या मानकर युद्ध न करने के निर्णय से लक्ष्मण दुखी हो जाते हैं। लक्ष्मण के व्यक्तित्त्व की विशेषता यह है कि वह महामानव राम के संशयी व्यक्तित्त्व को हर बार अपने धारणात्मक मूल्यबोध से प्रस्फुटित करते हैं। लक्ष्मण की दृष्टि से काल की अबाधता और नियति की अनिवार्यता का कोई अर्थ नहीं है। वे राम के सागर विनय को भी निरर्थक समझते हैं। लक्ष्मण का व्यक्तित्त्व अपने पूर्ण पौरुषत्त्व के साथ अभिव्यक्त होता है। वह राम की संदिग्ध स्थिति को स्वीकार नहीं करते बल्कि जागरूकता और जीवंत क्रियाकलाप को स्वीकार करते हैं। वह रागात्मक ऐश्वर्या की अपेक्षा जीवन की सार्थकता के पक्षधर है। युद्ध परिषद में सभी लक्ष्मण के मत का समर्थन करते हैं अंत में सामूहिक निर्णय को स्वीकार कर राम युद्ध के अभियान का जो संकल्प करते हैं निश्चय ही उसमें लक्ष्मण की मुख्य भूमिका है।

2.3.2.3 बिभीषन का चरित्र चित्रण

विभीषण लंका के भावी सम्राट है। राम युद्ध के विषय में जब उनकी यंत्रणा जानना चाहते हैं, तब वे युद्ध को दर्शन तथा स्वत्त्व और अधिकार अर्जन का अंतिम मार्ग बताते हैं और सभी युद्धों को किसी युग के लिए अंतिम सत्य की संज्ञा देते है। वह अपने राष्ट्र पर आक्रमण के समय आक्रमकों का साथ देने की बात से दुखी है, क्योंकि इस बात का कोई विश्वास नहीं है कि इस युद्ध में विजयी पक्ष उसी कार्य अथवा क्रियाओं को नहीं दोहराएंगे, जो रावण ने किया था। उन्हें अपने राष्ट्र का विध्वंस दिखाई दे रहा है। राम की तरह ही विभीषण खंडित व्यक्तित्त्व होने के कारण वे निश्चित नहीं कर पा रहे हैं कि, अपने देश की दुर्दशा का कारण कौन है? वह स्वयं अथवा लंकापति रावण।

विभीषण के मन को यह प्रश्न उद्विग्न करता है कि, क्या युद्ध हमारे सारे शुभाशुभ कर्म की नियति है ? अपने ही राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण का साथ देंगे, तो भावी इतिहास उन्हें राज्यलोभी तथा देशद्रोही ही ठहरएगा। यदि वे राम का साथ न देंगे तो वह असत्य के समर्थक माने जाएंगे। फिर भी वे राम को युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं –

> ''अच्छा हो इतने संशय परांत
> कोई भी काम किया जाए,

चाहे

सप्रन्ति वह युद्ध ही हो

वह काम ही होगा

संशय या तर्क नहीं''

2.3.2.4 हनुमान का चरित्र चित्रण

इस खंडकाव्य में राम की युद्ध परिषद की बैठक में सम्मिलित एक वीर के रूप में हनुमान का चित्रण हुआ है। सीता का अपहरण और रघुकुल के दुखों का कारण राम स्वयं को मानते हैं। यह जानकर दुखी लक्ष्मण जब अपनी व्यथा हनुमान के सामने व्यक्त करते हैं। तब हनुमान भी तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि राम जो कुछ कह रहे हैं, वह सब उस समय संभव होता जब यह वास्तव में राम की व्यक्तिगत समस्या होती। यह कोटि-कोटि साधारण जन रावण द्वारा सीता के अपहरण को मानव समाज पर किया गया अत्याचार मानते हैं। वह कौन - सी शक्ति, वह कौन - सा तेज, वह कौन - सी मंत्रणा है, जिसके कारण ये दुबले पतले, मटमैले वानरों में अभूतपूर्व साहस और शक्ति का संचार हो गया है। इन साधारण जनों को विश्वास है कि, मानव समाज का पुनर्जीवन राम के द्वारा ही संभव है। इसीलिए ये साधारण व्यक्ति राम के महान ऐतिहासिक व्यक्तित्व में अपनी लघुता को समर्पित करने के लिए आतुर है। हनुमान यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि, सीतामाता चाहे किसी की पत्नी, बेटी अथवा बहू हो, परंतु वास्तव में वह हम साधारण जनों की छीनी हुई स्वतंत्रता का प्रतीक है और रावण स्वतंत्रता का शत्रु है। हनुमान राम को समर्पित है। वह स्वयं अपने व्यक्तित्त्व से परिचालित नहीं है, फिर भी संशयग्रस्त राम के मन की दुविधा मिटाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

हनुमान द्वारा समझाने के बाद राम को लगता है कि, आवश्यक नहीं कि इस युद्ध के बाद शांति स्थापित हो जाए अथवा यह युद्ध संभावित युद्ध का कारण न बने। तब हनुमान राम को विश्वास दिलाते हैं कि -

''हम केवल घटना है

इतिहास नहीं''

संभव है यह युद्ध भविष्य में होनेवाले युद्ध की नींव बने। परंतु इस डर से न्याय और अधिकार को नहीं छोड़ा जा सकता। हनुमान को विश्वास है कि

''समय ही करेगा प्रतिकार

हर बार

अनुचित का।'

2.3.2.5 अन्य पात्र

'संशय की एक रात' खंडकाव्य में युद्ध परिषद में सीतामुक्ति के लिए राम को मंत्रणा देनेवाले एक सामंत के रूप में सुग्रीव प्रस्तुत होते हैं। युद्ध करें अथवा ना करें इस दुविधा में पड़े राम को सुग्रीव युद्ध की अनिवार्यता समझाते हुए युद्ध अभियान की अनुमति माँगते हैं। उनके अनुसार यह युद्ध न्याय पक्ष में और इतिहास निर्माण करनेवाला है। राम द्वारा युद्ध के विषय में उत्पन्न संशय महत्त्वहीन है।

खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग में मृतात्मा दशरथ और जटायु का आगमन होता है। मीनार के पीछे पुल के समीप यह दोनों छायायें राम को नजर आती है। यह छाया सीतामुक्ति की समस्या के विषय में राम के मन के संशय को तोड़ते हुए राम द्वारा स्वयं को कुलनाश के उत्तरदायी मानने की निरर्थकता को स्पष्ट करते हैं। दशरथ की छाया राम को बताती है कि, तुम्हारे द्वारा भेजे गए शांतिदूत रावण के द्वार से कई बार वापस लौटे हैं। इस स्थिति में युद्ध के प्रति तुम्हारी अनासक्ति कायरता है। जटायु पक्षी राम को समझाता है कि, किसी व्यक्तिमात्र को लेकर दुख व्यक्त करना उसे सम्बन्धों में बांधकर छोटा करना है। अतः राम का यह परिताप उचित नहीं है। दशरथ और जटायु की छाया अपने अपने दृष्टिकोण एवं विचारों के अनुसार राम को समझाते हैं तथा युद्ध को अनिवार्य बतलाते हुए विदा लेते हैं। क्योंकि उनकी दृष्टि में राम का युद्ध करना है –

''अपने आप से नहीं
अनास्था से नहीं
संशयी व्यक्तित्त्व से भी नहीं
केवल
असत्य से।''

इस प्रकार खंडकाव्य के विभिन्न पात्रों के माध्यम से नरेश मेहता ने वर्तमान युग की 'युद्ध और शांति' इस समस्या पर प्रकाश डाला है

2.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित वर्णन

आधुनिक हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कवि, कथाकार एवं विचारक नरेश मेहता ने रामकथा को आधार बनाकर ङ्गसंशय की एक रातफ इस संक्षिप्त खंडकाव्य की रचना की है। खंडकाव्य में रावण द्वारा सीता के अपहरण के पश्चात् सीता मुक्ति के लिए राम वानरसेना को एकत्र करके महासेतु का निर्माण करवाते है। युद्ध अभियान की सारी तैयारी हो चुकी है। परंतु इसी समय राम के मन में संशय निर्माण हो जाता है। वे सीता की मुक्ति को व्यक्तिगत समस्या समझ कर उसके लिए नरसंहार नहीं करवाना चाहते। युद्ध की विभीषिका के बारे में सोच कर उन्हें युद्ध

से वितृष्णा निर्माण हो जाती है और वे युद्ध न करने का निर्णय लेते है। खंडकाव्य के लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, जामवंत तथा दशरथ और जटायु की आत्मायें आदि पात्र विभिन्न तर्कों के माध्यम से राम के संशय का निराकरण कर उन्हें युद्ध की अनिवार्यता समझाते हैं।

भारत–चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखे इस खंडकाव्य में पौराणिक आख्यान के सहारे समकालीन परिवेश में आधुनिक बोध स्पष्ट किया है। इसमें रामकथा को नई दृष्टि से उभारा है। रामायण के राम महामानव तथा भारतीय संस्कृति के मेरुदंड है। पर इस खंडकाव्य में वे युद्ध करें या ना करें इस द्वंद्व से ग्रस्त खंडित व्यक्तित्त्व के रूप में वर्णित है। युद्ध अथवा शांति इस दुविधा से संत्रस्त राम समुद्रतट पर टहलते हुए विचारमग्न है। खंडकाव्य में चित्रित प्रसंग का रामायण में भले ही कोई ठोस प्रमाण नहीं। परंतु कवि ने रामायण कालीन संपूर्ण माहौल अबाधित रखा है। राम के समान ही आज का मनुष्य जटिल परिस्थितियों में प्रतिक्षण समस्याओं के सूत्र में उलझा हुआ है। राम भी इतिहास के इस प्रवाह के प्रति शंकित और आतंकित है –

''फिर संघर्ष
फिर संहार
इस ऐतिहासिक विषमता का
कौन – सा प्रतिकार
इस चक्र का कोई नहीं है अंत''

ङ्गसंशय की एक रातफ में समसामयिक युग के संघर्षशील व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत हुआ है और बौद्धिक चेतना के द्वारा कवि ने उसकी मन:स्थितियों की आज के संदर्भ में व्याख्या की है। आज का जागरूक व्यक्ति इस खंडकाव्य के नायक के समान अपने किसी भी निर्णय को अंतिम सत्य स्वीकार नहीं करता है। संशय की यह अवस्था ही मनुष्य की चिंतन प्रक्रिया का आधार बनती है।

खंडकाव्य के राम का चिंतन आदर्शवादी है। वह स्वयं को रघुकुल के विनाश का कारण मानकर नरसंहार से प्राप्त साम्राज्य और सीता भी नहीं चाहते हैं।

'बाणबिद्ध पाखी – सा विवश
साम्राज्य नहीं चाहिए,
मानव के रक्त पर पग धरती आती
सीता भी नहीं चाहिए।'

आधुनिक मानव भी दोहरी स्थिति में जी रहा है। उसके भीतर भी दूसरा अप्रमाणिक व्यक्ति जन्म ले चुका है। ऐसी अवस्था में वह किसे सत्य माने किसे असत्य ? किसे सार्थक और किसे निरर्थक ? यह दुविधा निर्माण हो गई है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि, 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में कवि ने समकालीन परिवेश में संपादित विभिन्न मानस, टूटती मान्यताएं, भविष्य का विश्वास और नए मूल्यों का निर्माण इन बातों को महत्त्वपूर्ण आयाम प्रदान किया है। रामायण के महामानव को माननीय स्तर पर उतारकर कर्म की सार्थकता प्रदान की है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की कथावस्तु ....सर्गों में विभाजित है।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में .... के खंडित व्यक्तित्त्व का चित्रण है।

अ) हनुमान ब) दशरथ क) राम ड) लक्ष्मण

3) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की कथा ....पर आधार है।

अ) महाभारत ब) दशरथ जातक क) रामकथा ड) सूरसागर

4) खंडकाव्य में राम को सिंधुतट पर छोड़कर लक्ष्मण ....के साथ शिविर-द्वीप की ओर चले जाते है।

अ) विभीषण ब) दशरथ क) रावण ड) बाली

5) पूरब के सेतुबुर्ज पर अदृश्य छाया के दिखाई देने की खबर राम को............देता है।

अ) हनुमान ब) लक्ष्मण क) जटायु ड) नील

6) सेतुबुर्ज पर दिखाई देनेवाली अदृश्य छाया............की है।

अ) स्वर्गीय दशरथ ब) भूत क) राक्षस ड) रावण

7) उर्मिला............की पत्नी का नाम है।

अ) जामवंत ब) विभीषण क) लक्ष्मण ड) रावण

8) जटायु का अग्निसंस्कर............ ने किया था।

अ) राम ब) भरत क) लक्ष्मण ड) शत्रुघ्न

9) राम के अनुसार रघुकुल के दुखों के लिए............जिम्मेदार है।

अ) रावण ब) कौसल्या क) खुद राम ड) रावण

10) हनुमान के अनुसार अशोक वाटिका में कैद सीता साधारण जनों की ....का प्रतीक है।

अ) विवशता ब) निराशा क) अपहृत स्वतंत्रता ड) विनयशीलता

11) दक्षिण प्रदेश के सामंतों को अधिकृत करके युद्ध का बीज................. ने बोया है।

अ) रावण ब) राम क) दशरथ ड) हनुमान

12) .... की इच्छा से राम युद्ध के लिए तैयार हो जाते है।

अ) रावण ब) युद्ध परिषद क) कैकयी ड) मंदोदरी

2.5 पारिभाषिक शब्दावली, शब्दार्थ

1) प्रदत्तो - दान करो

2) प्रज्ञा - चेतना

3) जेता - विजेता

4) प्रतिश्रुत - वचनबद्ध

5) अभियान - आक्रमण का आयोजन

6) वंचना - झुठलाया जाना

7) नारिकेल - नारियल

8) पाखी - पक्षी

9) मंत्रपूत - मंत्र द्वारा सिद्ध किया हुआ

10) पाशित - बंधा हुआ

11) लाघव - छोटे लोग

12) दुहिता - पुत्री

13) गुल्मभाव – टोली या कबीले की भावना

14) सैन्धव – सिंधु देश का घोडा

15) पक्षाघाती – लकवे की बीमारी अर्थात् असमर्थ

16) तपासवेशी – तपस्वी के वेशवाला

17) पिनाकयी – शिवधनुष्य तोड़नेवाला अर्थात् राम

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :–

1) चार	2) राम	3) रामकथा	4) विभीषण
5) नील	6) स्वर्गीय दशरथ	7) लक्ष्मण	8) राम
9) खुद राम	10) अपहृत स्वतंत्रता	11) रावण	12) युद्ध परिषद

2.7 सारांश :–

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के माध्यम से वर्तमान मनुष्य के मन में निर्माण युद्ध अथवा शांति के विषय में उत्पन्न द्विधा स्थिति का चित्रण किया गया है।

2) इस खंडकाव्य की कथावस्तु राम रावण युद्ध की पूर्वसंध्या पर आधारित है।

3) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के राम आधुनिक मानव का प्रतीक है।

4) चार सर्गों में विभाजित कथानक में राम, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, अदृश्य छाया, जामवंत आदि पात्रों के सरल, सहज, सटीक संवादों के माध्यम से कथानक का विकास चित्रित किया है।

5) इस खंडकाव्य के माध्यम से कवि कर्म से पलायन की अपेक्षा उत्तरदायित्त्व के निर्वाह को आवश्यक मानते है।

2.8 स्वाध्याय :–

अ) लघुत्तरी प्रश्न :–

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के हनुमान का चरित्र चित्रण कीजिए।

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित देशकाल वातावरण को विशद कीजिए।

3) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के विभीषण का चरित्र चित्रण कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न :-

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की कथावस्तु लिखिए।

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के राम का चरित्र चित्रण कीजिए।

3) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का संदेश विशद कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :-

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का कहानी विधा में रूपांतरण कीजिए।

2) मैथिली शरण गुप्त के 'सैरंध्री' खंडकाव्य का पठन कीजिए।

3) रामधारीसिंह 'दिनकर' के 'कुरुक्षेत्र' खंडकाव्य के काव्य सौंदर्य का आस्वादन कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन :-

1) चाणक्य - नरेश मेहता

2) यह पथबंधु था - नरेश मेहता

3) महाभारती - डॉ. चित्रा चतुर्वेदी

❖❖❖

इकाई 3

'संशय की एक रात' : रस, भाषा शैली एवं उद्दश्य

3.1 उद्‌देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में रस

3.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की भाषा शैली

2.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का उद्देश्य

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्दावली, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई को पढने के उपरांत आप

1) प्रस्तुत खंडकाव्य में वर्णित रस से अवगत हो जाएंगे।

2) प्रस्तुत खंडकाव्य की भाषाशैली से परिचित हो जाएंगे।

3) प्रस्तुत खंडकाव्य के उद्देश्य से परिचित हो जाएंगे।

3.2 प्रस्तावना :

'संशय की एक रात' नरेश मेहता द्वारा रचित एक नाट्य खंडकाव्य है। इस खंडकाव्य में कवि ने राम के व्यक्तित्त्व को समकालीन मनुष्य की द्विधाग्रस्त और खंडित मनःस्थिति के रूप में चित्रित करते हुए युद्ध की समस्या पर प्रकाश डाला है। नरेश मेहता ने पौराणिक राम को आधुनिक मानव के रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे मनुष्य अपनी समस्याओं को उनके आदर्श को ध्यान में रखकर सुलझाता रहे।

ड्ढसंशय की एक रातफ नामक आख्यानक काव्य में कवि ने युद्ध की समस्या पर विचार किया है । क्या युद्ध के बाद शान्ति स्थापित होगी या कि युद्ध का उत्तर युद्ध ही होगा? क्या युद्ध व्यक्तिगत कारणों से लड़ा जाता है अथवा उसके मूल में कोई समष्टिगत कारण होते हैं? इस कृति में राम का मानसिक तनाव, भावनाओं का उतार-चढ़ाव और अत्ममंथन इस बात का प्रमाण है कि वे द्विधाग्रस्त हैं । वे बार-बार सोचते हैं कि रावण से युद्ध केवल सीता की प्राप्ति के लिए है या मानवीय अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध ? राम स्वयं को कुल-विनाश का कारण मान रहे हैं अतः वे अब जन-विनाश का कारण नहीं बनना चाहते ।

3.3 विषय-विवरण :

3.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में रस:

'संशय की एक रात' नरेश मेहता का यशस्वी खण्ड काव्य है। यह रचना 'प्रायश्चित और परिताप के द्वन्द्व का काव्य रूपक' के रूप में प्रस्तुत की गई है। अतः इस खंडकाव्य में यत्र-तत्र विभिन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति में रस निरूपण का निदर्शन हो गया है ।

प्रस्तुत खंडकाव्य में शांत रस की प्रधानता है। साथ ही राम के चिंतन से करुण रस की अभिव्यक्ति मिलती प्रतीत होती है । शांत रस के बारे में विद्वानों ने कहा है- ''जब मनुष्य मोह-माया को त्याग कर सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है और वैराग्य धारण कर परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होता है तो मनुष्य के मन को जो शान्ति मिलती है, उसे शांत रस कहते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में राम युद्ध से वैराग्य पाकर उससे मुक्ति की कामना करते हैं । साथ ही पूरे विश्व में शांति की स्थापना करना चाहते हैं । राम की मनोस्थिती से उत्पन्न निर्वेद स्थायीभाव शांत रसदशा को प्राप्त होता है । अतः इस कृति में शांत रस की प्रमुखता है ।''

राम की एक विशिष्ट मनोदशा तथा युद्ध एवं शान्ति से संबंधित प्रश्नों के एक विशेष प्रयोजन को ही यह रचना प्रस्तुत करती है। प्रश्न और उनके निराकरण, अपनी सामाजिकता के बाद भी राम उन्हें व्यक्तिगत पाते है।

यह उन्हें निरा व्यक्ति बना देने की चेष्टा नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्त्व को देखने की चेष्टा है। राम के कथन में कवि की संवदेना को महसूस किया जा सकता है-

'ओ भाद्रपदी वृष्टि !/ओ विशाल रत्नाकर !
यदि मानवीय प्रश्नों का उत्तर मात्र
युद्ध है/खड्ग है/तो
लो/समर्पित है तुम्हें
तुम्हारे अज्ञात जलों को/इस क्षण के द्वारा
वृष्टि भीगे महाकाल को/समर्पित है यह
धनुष, बाण, खड्ग और शिरस्त्राण।

राम, रामेश्वर के सिन्धु तट पर चिन्तामग्न और उनके प्रश्नों से घिरे व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। वे सीता हरण को अपनी व्यक्तिगत समस्या मानते हुए युद्ध को टालना चाहते हैं । यद्यपि सेतुबन्ध हो चुका है, युद्ध की तैयारियाँ हो चुकी हैं, पर राम का मन युद्ध हो या न हो के प्रश्न में डूबता - उतराता दिखायी देता है। उन्हें अपना जीवन व्यर्थता के बोझ से दबा प्रतीत होता है। सिन्धु तट पर बितायी हुई अनेकों संध्या उन्हें व्यर्थ लगने लगती है। उन्हें लगता है कि उनके जीवन की सम्पूर्णता संशय रूपी बालू में छोटे शंख सी गिर कर कहीं खो गयी है।-

''कितनी बार/कितनी साँझ
इस सिन्धु बेला तट
बितायीं काट दीफ्फ़ - पर व्यर्थफ्फ़
ङ्ङमेरी यात्रा/छोटे शंख सी
यहीं बालू में कहीं गिर/ खो गई है।''

राम ने युद्ध को अनावश्यक मानकर शांति की कामना की है । युद्ध से पूर्ण विरक्त और निर्वेद राम युद्ध से होनेवाले विनाश के सामने अपने को निरूपाय पाते हैं, तो उनकी अभिव्यक्ति में 'शांत रस' का आभास मिलता है. भवहित की भावना को व्यक्त करते हुए राम कहते हैं

'मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए
बाणविद्ध पाखी सा विवश
साम्राज्य नहीं चाहिए
मानव के रक्त पर पग धरती आती

सीता भी नहीं चाहिए/सीता भी नहीं'

कवि नरेश मेहता ने प्रस्तुत खंडकाव्य में राम के करुणा भाव को भी व्यक्त किया है । राम की इसी मनोदशा से करुण रस विशिष्ट रूप से अभिव्यक्त हुआ है। इष्ट के निवासी से हृदय में उत्पन्न होने वाले क्षोभ को ही करुण रस कहा जाता है। इसका स्थाई भाव शोक है। राम यहाँ सभी के दुखों के लिए स्वयं को दोषी मानते हैं । यथा–

''पिता की मृत्यु/विधवा जननियाँ/ पत्नी का हरण
पिता के मित्र जटायू का मरण
मेरे लिए–/उपेक्षित अंगद हुए,
देहदाही हुए हनुमान/किसके लिए?
उर्मिला सी देवि/विरहणी किस प्रयोजन के लिए?
व्यक्ति का वनवास
परिजन और पुरुजन के लिए
अभिशाप क्यों बन जाय ?
व्यक्तिगत मेरी समस्याएँ
क्यो ऐतिहासिक कारणों को जन्म दें?
राम के कारण/भरत जैसा सौम्य
निर्वासित हो?

काव्य का प्रधान रस शांत है और गौण रस के रूप में करुण, भयानक रस अभिव्यक्त हुए हैं । भयानक शत्रु या भयानक वस्तु का प्रत्यक्ष निदर्शन ही भयानक रस कहलाता है। राम युद्ध के परिणामों से भयभीत हैं । वे अनावश्यक मनुष्यों के रक्तपात से चिंतित हैं । कवि नरेश मेहता ने 'संशय की एक रात' में इसके उत्कृष्ट रूप का चित्रण किया है। यथा–

''मध्य रात्रि के इस निर्णय
जाने कितने सूर्य
आज ही
कल के लिए मर चुके ।
जाने कितने अनागतों दिवसों की
घायल हँसियाँ रोती रहीं रात भर ।

एकत्रित इस जनसमूह के सीने में

इतिहास

नरेश मेहता ने अपने काव्य 'संशय की एक रात' में राम चिंताग्रस्त है और युद्ध के अनावश्यक नरसंहार से चिंतित है और सम्पूर्ण मानव के प्रति करुणा का भाव प्रकट करते हुए दिखाई दते हैं। राम युद्ध को टालना चाहते है। राम सम्पूर्ण मानव के प्रति दैन्य भाव रखते है। सहज रूप से राम की मनोदशा में करुण रस अभिव्यक्त होता प्रतीत होता है।

''मैं केवल युद्ध को बचाना चाहता रहा हूँ बन्धु !

मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है / उसको ही / हाँ,

उसको ही जगाना चाहता रहा हूँ बन्धु।''

इस प्रकार प्रस्तुत खंडकाव्य में कवि ने राम के द्वारा मानव मन की संशयित मनोदशा का चित्रण किया है। राम के मनोभाव शांत रस की अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है साथ ही करुण आदि रसों के भी द्योतक हैं ।

3.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की भाषा शैली

मानव अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। मानव अपने भाव और विचारों को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है। भाषा शैली में साहित्यिक कृति को साधारण से असाधारण बनाने की अपूर्व क्षमता होती है। साहित्य की हर विधा में भाषा शैली का अपूर्व महत्त्व होता है।

भाषा-शैली काव्य का कलापक्ष है जो काव्य रचना को विशेष पहचान दिलाता है। खंडकाव्य जीवन के असाधारण किंतु संक्षिप्त खंड को गतिमान एवं प्रभावशाली रूप में पाठकों के सामने रखने का प्रयास होता हैं। डॉ. यतींद्रनाथ तिवारी जी के अनुसार, 'खंडकाव्य की भाषा में गुरूत्व एवं गांभीर्य आवश्यक है। उसमें ध्वन्यात्मकता एवं लाक्षणियता से चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।'

अत: कलात्मकता, संगीतात्मकता, सरसता, सजीवता एवं आकर्षकता आदि गुणों से युक्त भाषा खंडकाव्य को रोचक बनाती है।

भाषा-शैली की दृष्टि से नरेश मेहता द्वारा रचित खंडकाव्य ङ्गसंशय की एक रातफ अनेक सारे भाषिक गुण से परिपूर्ण है। संभवत: खंडकाव्य वर्णनात्मक भाषा में लिखे पाए जाते हैं जिससे ऐसे खंडकाव्यों में गद्यात्मकता का आभास प्राप्त होता है। परंतु प्रस्तुत खंडकाव्य इतिवृत्त एवं घटनाओं की अप्रधानता के कारण वर्णनात्मक भाषा से बोझील नहीं बना है। प्रमुखतः इस भाषा में वर्णनात्मकता के बजाय भावनात्मक आवेग प्राप्त होता है। ज्यो राम की अंतरिक भावनाओं को बडी मार्मिकता से प्रकट करता है।

प्रस्तुत खंडकाव्य में शब्दों एवं वाक्यों का व्यर्थ प्रयोग अथवा अनावश्यक विस्तार बिल्कुल भी प्राप्त नहीं होता, जिससे शब्द संक्षिप्तता इस भाषा की विशेषता बनी हैं। कवि ने पूरे खंडकाव्य की भाषा तत्सम शब्दों से परिपूर्ण रखी हैं। वस्तुतः पौराणिक पार्श्वभूमि पर आधारित इस खंडकाव्य में तत्सम शब्दों की प्रधानता होने की संभावना अधिक थी पर कवि ने अत्यंत सहज, सरल शब्दचयन के साथ सक्षम भाषा गढी हैं। नरेश मेहता द्वारा प्रयुक्त काव्यभाषा नवीनता, मौलिकता और सरसता व प्रवाहशीलता आदि गुणों से युक्त है।

भाषा के अंतर्गत नरेश मेहता के काव्य में प्राप्त शब्द-विधान को तीन वर्गों में रखकर समझा जा सकता है- तत्सम शब्दावली, तद्भव शब्दावली और विदेशी शब्दावली । इनके अतिरिक्त कवि में शब्द - निर्माण की प्रवृत्ति भी पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है । कभी प्रत्यय और उपसर्ग से शब्दों का निर्माण किया गया है तो कभी एक शब्द के सादृश्य पर दूसरा शब्द बना लिया गया है। इतना ही नहीं कहीं-कहीं तो संज्ञा से विशेषण या संज्ञा जैसे शब्दों का निर्माण भी कर लिया गया है ।

तत्सम शब्दावली : नरेश का यह काव्य इस बात का साक्षी है कि वे सांस्कृतिक गरिमा और आभिजात्य के कवि हैं । उनकी दृष्टि में भाषा कोई हलकी चीज नहीं है । वे भाषा के तत्समीकरण के विश्वासी कवि हैं। यही कारण है कि उनके इस काव्य में तत्सम शब्दों का प्रक्षय भण्डार सुरक्षित है । उदाहरणार्थ तत्सम शब्दों की यह सूची देखिये

सिंधुवेला पदचिह्न, नारिकेल, मिथिला, आम्रकुज, सूर्यास्त, सौमित्र, शुभा शंसा, असम्पृक्त, स्तवन, संकल्पित, उत्सर्गित, प्रतिश्रुत, वितृष्णा, वारणविद्ध, वात्याचक्र, अंतरीप, प्राप्त, अमर्त्य, ऋतंभरा, वैश्वानर, अवि- नश्वर. परिजन, पुरजन, प्रतिकृति, अभीप्सित, ग्रप्रमाणित, अपात्री, विकल्प, सालना, निस्सार, अनुताप, परिचालित, कर्म, वर्चस, धेनु, पार्श्व, परिताप, पश्चाताप, इतर, अनास्था, ग्रमानव, निष्ठुर और क्षरणदा आदि।

स्पष्ट है कि नरेश के काव्य में तत्सम शब्दावली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है । ये प्रयोग कवि की सांस्कारिक भाषा और परिष्कृति रूचि के परिचायक कवि ने इनके प्रयोग में पूरी ईमानदारी से काम लिया है।

तद्भव शब्दावली : नरेश मेहता ने अपने काव्य में जहाँ एक ओर तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है, वहीं दूसरी ओर तद्भव शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में किया है । इन शब्दों के विधान से कवि ने निम्नांकित कार्य किये हैं-

1. एक तो अभिव्यक्ति को सरल बनाने का कार्य संपादित किया है । 2. भाषा में एक प्रवाह और निरन्तरता की सृष्टि की है । 3. भाषा में सौन्दर्य की सृष्टि की है । 4. भाषा में प्रेषणीयता की अतिरिक्त शक्ति भर दी है। तद्भव शब्दाली के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं- साँझ, पाखी, सटी, घरांना, रेत, छाँह, गाछ, नैन, पोर-पोर, ओर-छोर, चीरना, दीठि, भींचना, देह, माटी, दुहते, आसमान और सुलगना आदि.

विदेशी शब्दावली के अन्तर्गत उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों को लिया जा सकता है। उर्दू, फारसी के शब्दों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में कम मिलता है। उर्दू–फारसी के शब्दों के रूप में कतिपय प्रयोग इस प्रकार है। जैसे– बुर्ज, अँधेरा आदि ।

सूक्ति विधान : नरेश की भाषा की विशेषता के रूप में प्रयुक्त सूक्तियों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है । इनके प्रयोग से कवि ने एक ओर तो अपनी निश्चयात्मक बुद्धि का परिचय दिया है और दूसरे भाव सौन्दर्य, परिस्थितिगत औचित्य व भाषायी आकर्षण को द्विगुणित भी कर दिया है । कतिपय प्रयुक्त सूक्तियाँ इस प्रकार हैं–

1. सब शिखर की नींव में सोया अँधेरा
2. परिस्थितियाँ धेनु हैं, दुहो इनको निष्ठुर उँगलियों से दुहो।
3. युद्ध एक ऐतिहासिक फेन है
4. युद्ध केवल फेन नहीं निर्णय है ।
5. ''युद्ध मंत्ररणा नहीं दर्शन है''
6. युद्ध किसी पीढ़ी के लिये दायित्त्व है

नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'संशय की एक रात' की भाषागत सामान्य विशेषताएँ :

1. प्रेषणीयता : भाषा वैयक्तिक सम्पत्ति नहीं है। उसका स्वरूप आद्य सामाजिक है। ऐसी स्थिति में उसकी सार्थकता उसकी प्रेषणीयता में ही है। नरेश मेहता एक प्रचेता कलाकार हैं अतः वे भावानुकूल और प्रसंगानुकूल शब्दों का ही प्रयोग करते हैं। यह शब्दार्थ संयोग ही मेहता की भाषा में प्रेषणीयता को प्रतिष्ठा कर सका है। ङ्गसंशय की एक रातफ में ऐसे भाषायी प्रयोग मिलते हैं जिनमें अर्थवत्ता व प्राणवत्ता के कारण प्रेषणीयता का गुण आ गया है। यथा

''बन्धु अग्र हैं / हम सबके
नैनों ने उत्सव हैं / अवधि है अयोध्या की
सीता की प्रतीक्षा है
महाराज रघु की ही प्रतिकृति है ।''

2. प्रवाहशीलता : कवि की भाषायी सफलता का दूसरा मानदण्ड प्रवाहशीलता या भाषा के नैरन्तर्य से सम्बन्धित है। मेहता की भाषा में प्रवाह है, गति है। वह कहीं भी ठहरी हुई नहीं लगती है। वह चेतन है। उसके भीतर कवि की भावनाओं का स्पन्दन है। भाषा की प्रवाहमयता ''संशय की एक रात'' में भी पर्याप्त है

''मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए,
बाण सिद्ध पाखी-सा विवश/ साम्राज्य नहीं चाहिए,
मानव के रक्त पर पग धरती आती
सीता भी नहीं चाहिए
सीता भी नहीं ।''

राम की मनःस्थिति में अनुकूल शब्द प्रवाह और ''सीता भी नहीं चाहिए।'' वाक्यांश की आवृत्ति से भाषा में प्रवाह गुण आ गया है।

3. चित्रात्मक सौन्दर्य : छायावाद के सन्दर्भ में पन्त ने जिस चित्रभाषा की हिमायत की थी, उसे मेहता के काव्य में भी देखा जा सकता है। उनके शब्द सस्वर हैं, सबिम्ब हैं और उनकी चित्र छबियाँ शब्दों के अन्तस् की प्रतिरूप हैं। कहीं तो भाषा में यह चित्रत्त्व अलंकृति आया है, कहीं सपाटबयानी से और कहीं भावोत्तेजक शब्दों के ग्रहण से । यथा

मेरे राष्ट्र की टूटी हुई
अपमानित पताकायें
लग्न अंगों की शोभा यात्रा सी जा रही है
जले ओ खंडित भवन
जिहवाहीन भिखमंगे सरीखे
हाथ फैलाये खड़े हैं।

स्पष्ट है की कवि की भाषा चित्र भाषा है, किंतु ये कोरे चित्र नहीं है, इनमें कवि की कल्पना के रंग है।

अतः कवि की भाषा जितनी तत्सम् प्रशुद्ध और परिष्कृत है, उतनी ही मात्रा में उसमें अभिनवता, प्रेषणीयता, संगीतात्मकता और माधुर्य भी है। उसकी भाषा में शब्द-शब्द की आत्मा में कवि की सर्जनशीलता छिपी हुई है।

3.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का उद्देश्य :

साहित्य के अंतर्गत हर एक रचना का उद्देश्य अवश्य होता है। मानवतावाद के लक्ष्य से ओतप्रोत साहित्यिक रचना पाठक के मनोरंजन के साथ साथ लोकमंगल की भावना से जुडी रहती है। खंडकाव्य जीवन की विशालता में से किसी एक विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण अंश पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित करता है। जिससे साहित्यिक जीवन

के किसी महत्त्वपूर्ण अनुभव या घटना को केंद्र में रखकर किसी एक निष्कर्ष तक पहुँचता है। जिससे खंडकाव्य के उद्देश्य में एकमुखता रहती है।

नरेश मेहता की महत्त्वपूर्ण रचना 'संशय की एक रात' एक प्रसिद्ध खण्डकाव्य है । कवि ने इसमें राम के जीवन के घटना-हीन प्रसंग को विवेच्य बनाया है। सेतुबंध के पूरा हो जाने पर सीता की मुक्ति के लिए लंका पर चढ़ाई के समय युद्ध हो, न हो के संशय से ग्रस्त राम के माध्यम से युगीन प्रश्नों पर विचार-विमर्श करना कवि का मूल उद्देश्य रहा है। राम का आंतरिक द्वंद्व, तनाव, असमंजस इत्यादि आधुनिक मानव के विघटित व्यक्ति तथा मूल्यों की टकराहट का स्पष्ट रूपांकन है।

संभवतः नरेश मेहता के नाट्य कृति का उद्देश्य राम के अनिर्णित व्यक्तित्त्व को, संशय को परिषद के निर्णय में समर्पित करने का रहा है, यही व्यष्टि समष्टि का समन्वय है । युद्ध एवं शान्ति भारत की ही नहीं विश्व की समस्या बन चुकी है। कहीं वैयक्तिक स्वार्थ के लिए युद्ध किया जाता है, कहीं जन-हितार्थ भी होता है । युद्ध के मूल में कारण दोनों में से कोई भी क्यों न हों जन-विनाश तो अवश्यम्भावी होता है - इसलिए शान्ति बनाए रखने का हर युग एवं काल में प्रयास होता रहा है। राम को भी इसी कारण संशय है। राम सीता हरण को व्यक्तिगत समस्या मानकर अब जन- विनाश नहीं करना चाहते। इस प्रकार आज के मानव की भांति वे यह नहीं निर्णय कर पाते कि युद्ध या शान्ति में किसे अपनायें ।

प्रस्तुत खंडकाव्य का पहला उद्देश्य है राम को आधुनिक मानव के रूप में प्रस्तुत करना है- मेहता जी ने इस खंडकाव्य के माध्यम से राम का असीम विराटत्त्व, लक्ष्मण का लघुत्त्व बोध और कर्मनिष्ठता तथा हनुमान का सहज मानवत्त्व को चित्रित किया है । इसमें राम आज के मानव के भांति संशयशील है । साथ ही आधुनिक मनुष्य के समान घुटन, उद्विग्नता और तनाव है, उसमें असमंजस की स्थिति है । इस प्रकार नरेश मेहता के काव्य का उद्देश्य पौराणिक राम को आधुनिक मानव के रूप में प्रस्तुत करना और आधुनिक समस्याओं के समाधान की दिशा खोजना है -

व्यक्तिगत मेरी समस्याएँ
क्यो ऐतिहासिक कारणों को जन्म दें?

दूसरा उद्देश्य मानव मूल्यों की रक्षा करना है- कवि ने राम के माध्यम से वर्तमान के मानव मूल्यों की रक्षा करना चाहा है । आज जिस युग में हम जी रहे हैं उसमें मूल्यों के स्तर पर जो शब्द बारम्बार तेजी से उभर कर सामने आते हैं वे हैं, स्वार्थ और परमार्थ, राग और विराग, कर्म और वर्चस्व, युद्ध और शान्ति, व्यष्टि और समष्टि, आस्था और अनास्था, संकल्प और विकल्प, भावुकता और विवेक, भोग और पलायन तथा विद्रोह और क्रान्ति । मूल्यों की इस टकराहट में उनकी तथ्यात्मकता नष्ट हो जाती है और धारणा एक नया अवतार लेती है । इन्ही मानव मूल्यों की रक्षा करना रचनाकार का मुख्य उद्देश्य रहा है ।

तीसरा उद्देश्य लक्ष्मण के लघुत्त्व बोध, हनुमान के सहज मानत्त्व को प्रत्यक्ष करना है– इस कृति का उद्देश्य लक्ष्मण के लघुत्त्व बोध, हनुमान के सहज मानत्त्व को प्रत्यक्ष करना रहा है जिन्होंने जन– साधारण के प्रतीक के रूप में राम के अनिर्णित मन को निर्णय में परिवर्तित कर दिया । व्यक्ति को कवि ने समाज के सम्मुख झुकाकर यह सिद्ध किया है कि किसी भी युग में किसी का व्यक्तिगत मत नहीं चल सकता । उसे समाज में, रहने के लिये समाज का निर्णय मानना ही पड़ेगा।

इस प्रकार पूरे प्रबंध में राम के संशयग्रस्त मन की व्यथा, व्याकुलता और पश्चाताप की बड़ी ही संजीदगी के साथ मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है । अंततः राम युद्ध को अपना नहीं सबका निर्णय स्वीकार करते, हुए युद्ध अनुमति देते हैं । ये संशय, ये प्रश्न पौराणिक राम में नहीं उठाए गए, क्योंकि उस युग में परिस्थितियाँ, परंपरा और विचारधाराएँ अलग थीं । आधुनिक युग में हुए दो विश्व युद्धों की विभीषिका और निर्दोषों के रक्तपात ने मनुष्य की संवेदना को झकझोर दिया । अनेक बुद्धिजीवियों और कवियों–लेखकों ने युद्ध का विरोध करते हुए मनुष्य को शान्ति और कल्याण का संदेश देना ही इस कृति का प्रमुख उद्देश्य है । नरेश मेहता का यह खंडकाव्य इसका सशक्त प्रमाण है ।

3.6 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) 'संशय की एक रात' में राम .... के परिणामों से चिंतित हैं ।

(अ) युद्ध (ब) पराजय (क) विनाश (ड) विजय

2) 'संशय की एक रात' में .... रस की प्रधानता से अभिव्यक्ति हुई है ।

(अ) रौद्र (ब) हास्य (क) शांत (ड) शृंगार

3) ''मानव के रक्त पर पग धरती आती .... भी नहीं चाहिए, सीता भी नहीं ।''

(अ) रावण (ब) सीता (क) सफलता (ड) लक्ष्मण

4) 'संशय की एक रात' में .... शब्दों की मात्रा अधिक है ।

(अ) विदेशी (ब) तद्भव (क) ग्रामीण (ड) तत्सम

5) नरेश मेहता ने राम को .... मानव के रूप में चित्रित किया है ।

(अ) प्राचीन (ब) आधुनिक (क) सामाजिक (ड) मध्यकालीन

6) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का उद्देश्य ....का विरोध करते हुए शांति स्थापित करना है।

(अ) भ्रष्टाचार (ब) युद्ध (क) कलेश (ड) आन्दोलन

7) राम आज के मानव के भांति .... से व्यथित हैं ।

(अ) व्याधि (ब) गरीबी (क) संशय (ड) दुःख

8) राम सीता हरण को अपनी .... समस्या मानते हुए युद्ध को टालना चाहते हैं ।

(अ) सार्वजनिक (ब) सामाजिक (क) रावण (ड) व्यक्तिगत

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

दुहिता - पुत्री, बेटी

अनास्था- अश्रद्धा, अनादर

पृथुजन - महान पृथ्वी के लोग

गिद्धवत - गीध के समान

प्रतिश्रुत - प्रतिज्ञा, स्वीकृति

निष्ठुर - कठोर, कड़ा

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. युद्ध 2. शांत 3. सीता 4. तत्सम 5. आधुनिक

6. युद्ध 7. संशय 8. व्यक्तिगत

3.7 सारांश

नरेश मेहता द्वारा रचित खंडकाव्य ङ्गसंशय की एक रातफ में राम के संशयग्रस्त मन की व्यथा, व्याकुलता और पश्चाताप की बड़ी ही संजीदगी के साथ मार्मिक चित्रण किया गया है । राम युद्ध को टालना चाहते हैं और शांति की स्थापना करना चाहते है । राम की इसी मनोदशा से शांत रस की अभिव्यक्ति प्रतीत होती है । मानवता को बचाने की चिंता एवं मानव के प्रति करुणा का भाव भी इस कृति में प्रमुख रूप से चित्रित हुआ है । इस कृति की भाषा में तत्सम शब्दों से का प्रयोग अधिक हुआ है और काव्य की भाषा प्रेषणीयता, प्रवाहशीलता, चित्रात्मक सौंदर्य आदि गुणों से युक्त है । नरेश मेहता ने प्रस्तुत खंडकाव्य के द्वारा राम के संशयग्रस्त मन की

दशा का वर्णन किया है और अपनी व्यक्तिगत समस्या के लिए होनेवाले युद्ध को टालकर मानवों में शांति स्थापित करना चाहते हैं । ये ही इस खंडकाव्य का मूल उद्देश्य है ।

3.8 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का उद्देश्य।

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की भाषा शैली।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में व्यक्त रस को स्पष्ट करें।

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की भाषा को स्पष्ठ कीजिए ।

3.9 क्षेत्रीय कार्य

1. 'रामलीला' के आयोजन का अध्ययन कीजिये ।
2. रावण दहन का वर्णन कीजिये ।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. कवि नरेश मेहता का रामकथा पर आधारित 'प्रवाद पर्व' काव्य अध्ययन कीजिये ।
2. युक्रेन रशिया के युद्ध के परिणामों की चर्चा करो ।

❖❖❖

इकाई 4

'संशय की एक रात' :

खंडकाव्य की प्रासंगिकता, शीर्षक की सार्थकता, चित्रित समस्याएँ।

4.1 उद्‌देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की प्रासंगिकता।

4.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की शीर्षक सार्थकता।

4.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित समस्याएं।

4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्दावली, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्‌देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद –

1) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के नायक राम का चरित्र समझेंगे।

2) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित प्रासंगिकता से परिचित होंगे।

3) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता से परिचित होंगे।

4) 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित समस्याओं को समझेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

प्राचीन साहित्य से आधुनिक साहित्य की यात्रा ने मानव कल्याण को अधिक महत्त्व दिया है। प्राचीन साहित्य से किसी पौराणिक पात्र को लेकर उसे केंद्र में रखकर साहित्य सृजन का निर्माण होता रहा है। आधुनिक साहित्य में ऐसे कई पौराणक पात्रों को लेकर लेखन कार्य हुआ है। ऐसे लेखन को लेकर विवेच्य रचना हमारे सामने प्रस्तुत हुई है। पौराणिक कथा रामायण के प्रमुख पात्र राम पर आधारित 'संशय की एक रात' इस खंडकाव्य को श्री नरेश मेहता ने लिखा है। वैसे मेहता जी बहुमुखी साहित्यकार है। उनके खंडकाव्य पौराणिक कथाओं पर आधारित है। प्रस्तुत खंडकाव्य 'संशय की एक रात' में जो प्रश्न उठते हैं वे आज वैसे के वैसे ही है। राम के साथ सीता, दशरथ, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण जामवंत यह सभी पात्र भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी विद्यमान है। राम के मन में उठने वाला संशय आज के मनुष्य के लिए इन्सानियत को जागृत करनेवाला है।

इस इकाई के माध्यम से विवेच्य खंडकाव्य में चित्रित प्रासंगिकता, शीर्षक की सार्थकता और खंडकाव्य की समस्याओं को लेखक ने वर्तमान की पृष्ठभूमि को जोड़ने का प्रयास किया है। प्रस्तुत खंडकाव्य से मनुष्य का अपने जीवन के प्रति आस्था, अहिंसा, मानवता का धर्म का मूल्य बढ़ाने वाला कार्य स्पष्ट होता है।

4.3 विषय विवेचन :

4.3.1 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित प्रासंगिकता :

प्रस्तुत खंडकाव्य का प्रकाशन सन 1962 में हुआ। कवि श्री नरेश मेहता ने अपने खंडकाव्य ङ्गसंशय की एक रातफ में संशय एवं संघर्ष को केंद्र में रखा है। यह संशय एवं संघर्ष तत्कालीन परिस्थिति पर आधारित खंडकाव्य में प्रस्तुत हुआ है। यह काव्य रामायण कथानक से जुड़ा है जो स्वातंत्र्योत्तर काल के साथ-साथ वर्तमान के संदर्भ में भी देखने को मिलता है। यह वृत्ति मानव जीवन में ही देखने को मिलती है। जीवन की इस धारा में व्यक्ति की समस्या व्यक्ति के साथ-साथ समाज और देश की समस्या के रूप में प्रकट होती रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में तत्कालीन सरकार के सामने संशय और संघर्ष की समस्या उभरी थी। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला हमारा यह देश युद्ध की राह पर चल पड़ा। सन् 1962 ई.का चीन भारत युद्ध अनदेखा नहीं हो सकता। उस समय भारत को युद्ध को ना चाहने पर भी युद्ध की हिंसा में उतरना पड़ा। देश को इसकी कीमत भी चुकानी पड़ी। श्री नरेश मेहता ने इसी प्रासंगिकता पर आधारित 'संशय की एक रात' इस खंडकाव्य को चित्रित किया है। इतिहास

में पात्र स्थान बदले है लेकिन घटनाएं वही है, फिर वह राम–रावण युद्ध का हो, सन् 1972 ई. का युद्ध हो या आज का कारगिल युद्ध हो। सभ्यता, अहिंसा से जुड़े इस देश को युद्ध करना पड़ा है और मूल्य भी चुकाना पड़ा है। ऐसी घटनाएं इस संसार में विभीषिका बनकर ही रही है। आज भी यह खंडकाव्य हमारे लिए प्रासंगिकता की याद देता है।

'संशय की एक रात' इस खंडकाव्य में राम के मन उठने वाला संशय आज भी प्रासंगिक है। राम–रावण के युद्ध से पहले सागर पर सेतु बांधा जाता है। सेतु पूरा होने के बाद शाम के समय में राम के मन में प्रश्न उठता है, संशय निर्माण होता है। खंडकाव्य का प्रथम सर्ग इसी पर आधारित है। सुबह होते ही युद्ध शुरू होगा इस चिंता में राम सागर तट पर संध्या समय बैठते है। सीता का अपहरण मेरी समस्या है इसके कारण होने वाला युद्ध राम को चिंता में डाल देता है। युद्ध का अंत हानि ही होती है और यह हानी दोनों और से हो जाती है। अपने एक निर्णय से कितना बड़ा संहार होगा यह सोचकर राम चिंता में पड़ते हैं। उनका मन युद्ध का विरोध करता है। द्वितीय सर्ग में राम सोचते हैं कि अनेक लोगों की आहुति देकर, रक्त का अभिषेक चढ़ाकर सीता को वापस लाना है। इस बात से उन्हें लगता है एक सीता के लिए जनविनाश यह उचित नहीं है। तभी राम के सामने दो छायाएं उभरती है। वह राजा दशरथ और जटायु की आत्माएं होती है। वह आत्माएं राम को सत्य की प्रति के लिए युद्ध आवश्यक है यह सत्य बताती है। तृतीय सर्ग में मध्य रात का प्रसंग है। चिंता में राम अपने साथी लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान, सुग्रीव, जामवंत के साथ युद्ध मंत्रणा करते हैं। राम की इस संशय रूपी चिंता से सभी परेशान है। राम बताते हैं कि सीता का अपहरण मेरी व्यक्तिगत समस्या है इसमें सभी जनों को मुसीबत में डालना उचित नहीं है। परंतु हनुमान समझाते हैं कि सीता का अपहरण व्यक्तिगत समस्या नहीं, वह समाज की इस देश की समस्या है। सीता की आजादी, स्वतंत्रता यह हमारे देश की स्वतंत्रता है। चतुर्थ स्वर्ग में राम संदिग्ध मन के साथ युद्ध का निर्णय लेते हैं। मेहताजी का संपूर्ण खंडकाव्य संध्या से प्रारंभ होकर प्रातः काल तक चलता है।

प्रस्तुत रचना में नरेश मेहता की दृष्टि संशय पर अधिक रही है। संशय व्यक्ति द्वंद्वात्मक स्थिति में सांस लेता है। ऐसे व्यक्ति में आत्मसंशय अधिक रहता है। संशय के मूल में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारण भी होते हैं। खंडकाव्य के नायक राम का आत्मसंशय यह प्रचंड युद्ध का परिणाम है। रावण के साथ होने वाले युद्ध को जनविनाश का आधार राम नहीं बनना चाहते। वे स्वयं को दोषी मानते हैं–

आज तक में निमित्त ही रहा
कल के विनाश का, लेकिन
अब नहीं बनुंगा कारण
जन के विनाश

राम को यह आत्मसंघर्ष सीता को व्यक्तिगत समस्या पर लाकर खड़ा करता है परंतु लक्ष्मण, हनुमान सभी राम को देश की समस्या, स्वतंत्रता का महत्त्व बताते हैं। सीता एक समस्या नहीं वह स्वतंत्रता, पवित्रता का प्रतिक है यह समझाने पर ही राम युद्ध का निर्णय लेते हैं। आज भी इस इक्कीसवीं सदी में चीन, पाकिस्तान ने भारत की पवित्रता, स्वतंत्रता को हरण करने का बार-बार प्रयास किया है। तब भारत ने भी उसे अपनी शक्ति दिखाने का प्रयास किया है। राम की सीता या भारत की स्वतंत्रता यह घटना प्रासंगिक ही है। देश की पवित्रता को ध्यान में रखकर हिंसा या अहिंसा के माध्यम से हमने कायम रखने का प्रयास किया है। भारत की जननी पर चीन का जुल्म कैसे स्वीकार करें ना चाहकर भी सन् 1962 ई. में युद्ध हुआ तथा उसके फलस्वरूप हानि भी उठानी पड़ी। राम स्वयं स्वीकारते हैं-

मैं निर्णय हूं सबका,
अपना नही,
क्यों कि मैं अब निर्णय हूं,
व्यक्ति नहीं।

राम के मन का संशय का यह रूप समाप्त हुआ। व्यक्ति की अनिच्छा पर भी उसे समूह चेतन को स्वीकारना है। इसीलिए युद्ध का किसी भी आधार पर तिरस्कार नहीं किया जा सकता। शांति एवं युद्ध की शाश्वत समस्या में भी युद्ध की अनिवार्यता को स्वीकारना पड़ा है। प्रस्तुत रचनाकार भी समकालीन संदर्भो अथवा युग बोध से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित अवश्य होता है। प्रस्तुत रचना में कवि ने भारतीय शीर्षक नेताओं को इस स्थिति से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए संघर्ष अनिवार्य हो जाता है। इस काव्य का कथानक प्रतिकात्मक एवं प्रासंगिक रूप से उभरा है। राम, गौतम बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी तक इन महात्माओं ने युद्ध का विरोध किया है। संसार का कोई भी व्यक्ति अपने अंतर्मन से युद्ध की चाहत नहीं रखता। राम जब युद्ध का विरोध करते हैं तब आत्माएं कहती है-

''मैं भी युद्ध की अनिवार्यता को मानता हूं
किंतु अपने राष्ट्र के प्रति
क्या यही कर्तव्य है मेरा
उस पर हो रहे
इस आक्रमण में साथ दूं?''

भारत अहिंसा प्रधान देश है। अपनी जननी समान देश पर आक्रमण करने वाले मुगल गौरी को प्राणदान देने वाला यह देश है। परंतु इस जननी की पवित्रता और स्वतंत्रता के लिए वक्त आने पर संघर्ष करने की चेतना,

स्फुर्ती इस देश की है। जन विनाश के कारण राम युद्ध को नहीं चाहते परंतु जननी की स्वतंत्रता को लेकर वह अपने कर्तव्य को मानकर युद्ध के लिए तैयार होते है।

मेहता ने प्रस्तुत खंडकाव्य पौराणिक होते हुए भी वर्तमान स्थितियों के साथ उसे चित्रित किया है। अपने निजी जीवन को वक्त आने पर देश के जीवन के लिए अर्पित करना है यह सिख उन्होंने दी है। आज के युग में मानवता का धर्म बढ़ाना है तो प्रस्तुत खंडकाव्य इसका उदाहरण है। सीता के अपहरण को व्यक्ति समस्या न मानकर जनसमस्या मानने वाले लक्ष्मण, हनुमान, विभिषण, सुग्रीव, जामवंत जैसे पात्र देश के लिए गौरव गाथा है। सन् 1962 ई. के बाद भी अनेक बार इस देश की स्वतंत्रता छिनने का घिनौना प्रयास हुआ है। तब हमने बलशाली होने का प्रमाण भी पड़ोसियों को दिया है। प्रस्तुत खंडकाव्य से मेहता ने भारतीय समाज को देश के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया है। मानव मूलों की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। स्वातंत्र्योत्तर काल में सन् 1962 ई. का युद्ध हो या सन् 1947 ई. कि भारत की आजादी इस काल में भारतीय जनता को हानि ही उठानी पड़ी है। राम के मन में उठने वाला संशय यह भारतीय समाज का संशय है। लेकिन देश की अखंडता, प्रभुता के लिए वक्त आने पर युद्ध में भी उतरना पड़ा है। आधुनिक काल के कवि निराला जी की राम की शक्तिपूजा में भी यही संदेश का लेखन हुआ है। कवि ने युग के सार्थक संदर्भों को प्रस्तुत काव्य में लेखन करने का सफल प्रयास किया है।

4.3.2 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की शीर्षक की सार्थकता :

शीर्षक के बिना रचना अधूरी है इसलिए किसी भी रचना का महत्वपूर्ण तत्व शीर्षक है। रचना के शीर्षक को पढ़ने के बाद ही पाठक का कौतूहल बढ़ जाता है। कोई भी रचना या साहित्यिक विधा हो शिर्षक के बिना वह पूरी नहीं हो सकती। किसी भी रचना का शीर्षक स्पष्ट, संक्षिप्त, विषयानुकूल और प्रभावात्मकता पर आधारित होना चाहिए। इन्हीं बातों के कारण पाठक आकर्षित होता है। रचना का शीर्षक जितना संक्षिप्त होता है उतना वह प्रभावशाली बन जाता है।

प्रस्तुत खंडकाव्य 'संशय की एक रात' यह शीर्षक निश्चित प्रभावशाली रहा है। सीता का अपहरण होने के बाद राम लंका में वापस सीता को लाने पहुंचते है। रावण को समझाने पर भी वह वापस सीता को नहीं देता।अतः राम रावण का युद्ध निश्चित हो जाता है। अपनी पत्नी सीता को पाने के लिए भयंकर युद्ध होगा। दोनों ओर से महाविनाश होगा इस संशय से राम के मन में संशय का घर निर्माण होता है। युद्ध के एक दिन पहले राम समुद्र के तट पर बैठकर इस संशय में डूब जाते है। सीता का अपहरण मेरी व्यक्तिगत समस्या है और मुझे मेरी पत्नी सीता को पाने के लिए युद्ध करना होगा। दोनों और से महाविनाश होगा, अनेक परिवार अपने पुत्र को खो देंगे अनेक महिलाएं विधवा होगी। मेरी अकेले की समस्या हजारों, लाखों परिवार को बेघर कर देगी। रावण

अत्याचारी है परंतु अन्य लोगों को क्या दोष ? मेरी और रावण की समस्या है फिर वानर सेना, लंका वाशी इनका जीवन संकट में क्यों ? इस बात से राम संशय की चिंता में डूब जाते है। उनका मन युद्ध को सहमति नहीं देता।

राम को यह व्यक्तिगत समस्या लगती है। परंतु लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, विभिषण, जामवंत यह सारे राम को बताते हैं कि यह समाज की, देश की समस्या है। दशरथ और जटायु की आत्माएं राम को कर्तव्य का महत्व बताती है। राम का संशय एक व्यक्ति के मन में उठने वाला प्रश्न नहीं है। बल्कि जीवन की असंख्य घटनाओं में गुजरते समय हर एक व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठता है। मानवी स्वभाव भावनाओं पर आधारित है अतः संशय और चिंता से अलग मानव जीवन नहीं हो सकता। प्रस्तुत खंडकाव्य में एक ही व्यक्ति में उठने वाला संशय नहीं है बल्कि सामान्य मनुष्य के साथ देश के कर्ता पुरुष के मन में उठने वाला यह संशय साकार हुआ है जो इस खंडकाव्य का शीर्षक कितना सार्थक है यह बताता है। राम को इस संशयी मन को मिटाने के लिए हनुमान, सुग्रीव यह सारे प्रयत्नशील होते है। सीता की स्वतंत्रता यह राम के लिए एक समस्या है परंतु देश की स्वतंत्रता तो देश का अपना अधिकार होता है। कोई भी व्यक्ति अथवा देश युद्ध की चाहत नहीं रखता। मानव के इस युद्ध,संघर्ष में उसी की हानि अधिक हुई है।

जीवन के हालत भी ऐसे मोड़ पर ले जाते हैं कि न चाह कर भी हमें कुछ करने मजबूर होना पड़ता है। राम की युद्ध के लिए इच्छा नहीं है फिर भी जीवन की इस सत्य कटुता को स्वीकारना पड़ता है। खंडकाव्य में राम प्रातः समय आते-आते युद्ध करने का निश्चय कर लेते है। हमारा पौराणिक इतिहास हो या स्वातंत्र्यपुर्व, स्वातंत्र्योत्तर इतिहास, इस देश को यह निर्णय लेना पड़ा है। सन् 1962 ई. के युद्ध में भारत की युद्ध करने की इच्छा नहीं थी फिर भी शत्रु राष्ट्र की ओर से भारत को युद्ध करने के लिए मजबूर करने वाले प्रयास हुए हैं। सन् 1962 ई. के युद्ध में देश की सत्ता ने भी चीन के हालात को लेकर रातभर संशय की आग में जलकर युद्ध करने का निश्चय बनाया था। किसी भी युद्ध से समाज, देश की हानि हुई है फिर भी हमें उस हालत में युद्ध करना पड़ा है। प्रस्तुत खंडकाव्य ङ्गसंशय की एक रातफ का कथानक दोनों स्थितियों से संबंधित है। मेहता ने दोनों घटनाओं की प्रासंगिकता को एक ही स्थिति में लाने का प्रयास इस खंडकाव्य में किया है। खंडकाव्य के अन्य पात्र राम को युद्ध कितना आवश्यक है यह बताते हैं-

''अपने से नहीं
अनास्था से नहीं
संशयी व्यक्तित्व से भी नहीं,
केवल असत्य से।''

राम को न्याय, सत्य की रक्षा के लिए अन्याय, असत्य से युद्ध करने पर मजबूर होना पड़ा। देश की पवित्रता, स्वतंत्रता कायम रखने हेतु युद्ध करना पड़ा।

प्रस्तुत खंडकाव्य का शीर्षक लेखक ने सही रूप से चुना है। देश की समस्या को नष्ट करने हेतु और अपने पवित्र की रक्षा हेतु संघर्ष, युद्ध करना पड़ा है। देश की आजादी के लिए उठा आंदोलन या सन् 1962 ई. का युद्ध भारत ने संशय की चिंता से गुजरकर ही संघर्ष, युद्ध करने के लिए भारत प्रेरित हुआ है। रामायण कालीन समाज की राम की स्थिति और स्वातंत्र्योत्तर कालीन समाज की स्थिति इन दोनों समसामयिकता ही है। वर्तमान काल की स्थिति भी अनदेखी नही की जा सकती। पड़ोसी देश चीन, पाकिस्तान के हालात भारत को युद्ध में खीचनेवाले है। राम की चिंता आज भी हमें स्वतंत्रता को बचाने के लिए उजागर करनेवाली हैं। खंडकाव्य के कवि ने मसंशय की एक रातफ यह शीर्षक सही चुना है। यह शीर्षक उचित होने के साथ-साथ खंडकाव्य के उद्देश्य की ओर भी संकेत करता है। यह शीर्षक कौतूहल निर्माण करने वाला एवं सार्थक भी रहा है। शीर्षक में स्पष्टता, आकषर्कता, प्रभावात्मकता और विषयानुकूलता यह विशेषताएं दिखाई देती है। सही मात्रा में यह शीर्षक उचित, उपयुक्त जान पड़ता है।

4.3.3 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित समस्याएॅं :

प्रस्तुत खंडकाव्य 'संशय की एक रात' इस नरेश मेहता की रचना में अनेक समस्याएं सामने आती है। इस काव्य में स्वतंत्रता एवं पवित्रता को कायम रखने के लिए राम का युद्ध का निर्णय महत्वपूर्ण घटना है। रावण के साथ युद्ध करके सर्वनाश को देखना यह राम के लिए समस्या ही है। रावण विवाहित नारी सीता का अपहरण करता है। स्वयं विवाहित होकर भी विवाहित नारी का अपहरण करना यह घटना समाज के लिए विडंबना के रूप में समस्या ही है। नारी हो या देश की स्वतंत्रता उसको बचाने के लिए युद्ध करना पड़ा है । महाभारत में विवाहित द्रौपदी का वस्त्रहरण पांडवों-कौरवों को युद्ध के शिखर पर ले जाता है। पौराणिक कथा से वर्तमान काल तक यह समस्या समाज में स्थित है। इस देश में नारी को जननी, माता का रूप दिया जाता है। फिर भी इस नारी पर अन्याय होता है यह एक बड़ी समस्या ही है। मानव जीवन संघर्ष से भरा है। कभी व्यक्ति-व्यक्ति, समाज-समाज, देश-देश में यह संघर्ष होता रहा है। प्राचीन काल में असभ्य, अज्ञान से ऐसी घटना स्वाभाविक है परन्तु प्रगतिवादी युग में भी इस समस्या का बढ़ता रुप आधुनिकता के लिए शाप ही है।

सीता की कोई गलती नहीं है। फिर भी रावण की बुरी नजर उस पर हावी होती है वह उसका अपहरण करता है। रावण सीता को लंका की रानी बनाने का सपना दिखाता है लेकिन पतिव्रता सिता अपने पतिव्रता पर कायम रहती है। सीता की पवित्रता ही भारतीय नारियों के लिए एक आदर्श शिखर बिंदु है। राम को यह अपहरण अपनी व्यक्तिगत समस्या लगती है परंतु अन्य साथी स्वतंत्रता, प्रभुता, पवित्रता की समस्या मानकर चलते हैं।

सभी को अपने राजा की समस्या देश की समस्या लगती है। युद्ध के विनाश से राम युद्ध के लिए विरोध करता है। सारी प्रजा की हानि होगी इस बात से वह डरते हैं। यहां भारतीय संस्कृति के दर्शन हमें मिलते है। इसतरह परिस्थितियों के आधार पर इस खंडकाव्य निम्न समस्याएँ हैं-

1) सामाजिक समस्या –

भारतीय समाज में नारी पर अत्याचार यह एक समस्या है। लंकापति रावण राम की पत्नी सीता का अपहरण करता है। यह व्यक्तिगत समस्या है ऐसा राम को लगता है। हनुमान, विभीषण, सुग्रीव या सभी राम की इस समस्या को स्वतंत्रता को लेकर इसे समाज की समस्या मानते है। संघर्ष या द्वंद्व समाज की समस्या है। इस द्वंद्व में समाज को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। एक व्यक्ति का बुरा कार्य संपूर्ण परिवार, समाज, देश का नुकसान दायी कार्य रहा है। समाज में ऐसे भी कुछ लोग होते है जो अपने खुद के स्वार्थ के लिए समाज को हानि पहुंचाते है जो रावण के लंकावासियों को भोगना पड़ा है। स्वार्थ, अहंकार के कारण हमेशा सामाजिक क्षति ही हुई है। यह रामायण के युद्ध से उभरा है। आज भी नारी पर अन्याय अत्याचार जैसी घटनाएं समाज में स्थित है जो सामाजिक स्तर पर यह कलंक के बराबर है।

2) राजनीतिक समस्या –

किसी भी देश की राजनीति उस देश की प्रजा के लिए लाभदायी होनी चाहिए। रावण राजा होकर भी एक पतिव्रता स्त्री का अपहरण करके अपने देश को प्रजा को संकट में डाल देता है। राम एक आदर्श राजा है। अपनी पत्नी की रक्षा करना यह भी नारी जाति को न्याय देने बराबर होता है। अपनी प्रजा को सुरक्षा का भरोसा युद्ध के माध्यम से देश की जनता को संदेश राम देता है फलस्वरुप राजा राम की उपाधि जन से राम को मिलती है। वर्तमान के राजनीतिक नेताओं को भी यह आदर्श अपनाना चाहिए। आज अनेक नारियों का अपहरण, अत्याचार, अन्याय होता है फलस्वरुप कठोर कदम उठाने की जिम्मेदारी कर्ताओं की होनी चाहिए। हमारे पड़ोसी देश से गैर राजनीति होती रहती है इसका सही जवाब देकर अपने देश अखंडता को कायम रखनी आवश्यक है।

3) धार्मिक समस्या –

धर्म का अर्थ है धारण करना। पवित्रता को धारण करना। हर एक व्यक्ति का अपना-अपना धर्म या अधर्म होता है। धर्म का अर्थ समाज हित, कल्याणकारी होता है। प्रस्तुत खंडकाव्य में राम का भी धर्म है जो नारियों की रक्षा हेतु देश की प्रभुता के लिए युद्ध का निर्णय लेकर युद्ध करता है। लंकापति रावण भी है जो परनारी का अपहरण करता है और अपने अधर्म के मार्ग पर चलता है। परिणाम राम का विजय और रावण का पराजय है। वर्तमान कालीन हमारा देश विविध जाति, धर्म प्रधान देश है। कुछ लोग धर्म को सामने रखकर अधर्मी बनकर

देश की पवित्रता स्वतंत्रता को खोखला कर रहे हैं। इस खंडकाव्य से आदर्श धर्म उभरा है और आदर्श धर्म से सुंदर राष्ट्र, समाज की कामना की है।

4) सांस्कृतिक समस्या –

विश्व में भारत की संस्कृति का बड़ा महत्व रहा है। हमारी संस्कृति में उत्सव, त्यौहार, रिश्ते, नाते इनका बड़ा स्थान है। प्रस्तुत खंडकाव्य हमारे देश की नींव साबित हुई है। अपनी पत्नी को अन्याय से मुक्त करने के लिए जनता को हानि होगी इस बात से राम के मन में संशय उठना है और वह युद्ध का विरोध करता है। परंतु राम के अन्य साथी अपने राजा की समस्या को देश की समस्या मानकर युद्ध करने के लिए राम को प्रेरणा देते हैं। यह सारी घटनाएं भारतीय सभ्यता, संस्कृति का ही प्रमाण है जो मेहता जी ने अपने काव्य में अंकित किया है। सन् १९६२ ई. का युद्ध भी हमने नहीं किया बल्कि शत्रु राष्ट्र ने पहले आक्रमण करके हमें युद्ध के लिए मजबूर किया। प्रस्तुत खंडकाव्य में लक्ष्मण आदर्श भाई है, सुग्रीव-विभीषण आदर्श मित्र है तो हनुमान आदर्श सेवक है यह सारी हमारी सभ्यता ही है। इस काव्य के माध्यम से भारतीय समाज को संस्कृति, सभ्यता का दर्शन दिखाकर प्रेरित किया है।

संक्षेप में इस खंडकाव्य में अहिंसा को अपनाने वाला हमारे देश का लेखन हुआ है। समाज और समस्या यह कायम है। फिर भी इन दोनों के बीच मानवता का धर्म यह महत्त्वपूर्ण है। काव्य में यही कामना हुई है। व्यक्ति को व्यक्तिगत समस्या को त्यागकर समाज, देश की समस्या के बारे में सोचना है। यही सफल कार्य लेखक ने किया है। युद्ध, अहिंसा से हमें दूर रहना है लेकिन देश ही संकट में आए तो उसके स्वातंत्र्य की रक्षा करने के लिए संघर्ष, युद्ध करना पड़ा तो यह हमारा कर्तव्य ही रहा है। पौराणिक पात्र राम को केंद्र में रखकर नरेश मेहता जी ने जो देशभक्ति दिखाने का प्रयास किया है उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए बहुविकल्पीय प्रश्न।

1) 'संशय की एक रात' यह .... विधा है।

अ) महाकाव्य ब) खंडकाव्य क) नाटक ड) काव्य

2) 'संशय की एक रात' इस रचना के कवि .... है।

अ) श्री नरेश मेहता ब) महादेवी वर्मा क) धूमिल ड) भूषण

3) 'संशय की एक रात' इस खंडकाव्य में .... सर्ग है।

अ) एक ब) दो क) पांच ड) चार

4) राम सागर तट परें .... के कारण संशय में डूबे है।

अ) युद्ध ब) राज्य क) रावण ड) लंका

5) मध्य रात में रामें .... की छाया से बात करते है।

अ) रावण ब) सीता क) दशरथ ड) जनक

6) राम के मन में उठे संशय को मिटाने का प्रयासें .... करते है।

अ) जनक ब) लक्ष्मण क) भरत ड) शत्रुघ्न

7) .... के कारण किसी भी देश का विनाश ही हुआ है।

अ) धन ब) नारी क) युद्ध ड) अहंकार

8) संशय की एक रात इस खंडकाव्य का प्रकाशन सन् .... ई. में हुआ।

अ) 1961 ब) 1962 क) 1963 ड) 1964

9) अब मैं निर्णय हूँ .... अपना नहीं।

अ) अपना ब) सबका क) जनता ड) तुम्हारा

10) चतुर्थ सर्ग रामें .... करने का निर्णय लेते है।

अ) संघर्ष ब) युद्ध क) द्वन्द ड) अंतद्वन्द

11) .... का हरण राम की व्यक्तिगत समस्या है।

अ) मंथरा ब) मंदोदरी क) शबरी ड) सीता

12) अयोध्या के दशरथ पुत्रें .... है।

अ) हनुमान ब) अर्जुन क) कृष्ण ड) राम

4.5 पारिभाषिक शब्द/ शब्दार्थ :

संशय – शंका खडगः – शस्त्र

आख्यान – कथा अनुज – छोटा

जन – लोग कुल – परिवार

संहार – विनाश अंधता – अंधकार

सुग्रीव – वानर के राजा विभीषिका – विडम्बना

जटायु – गरुड़ के राजा। स्वत्व – अस्तित्व

विडम्बना – शोकांतिका द्वंद्व – युद्ध

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) खंडकाव्य 2) श्री नरेश मेहता

3) चार 4) युद्ध

5) दशरथ 6) लक्ष्मण

7) युद्ध 8) 1962

9) सबका 10) युद्ध

11) सीता 12) राम

4.7 सारांश :

1) प्रस्तुत खंडकाव्य के माध्यम से नरेश मेहता ने वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। राम की नियति ही वर्तमान में समाज, देश की नियति है। इसी आधार पर समकालिनता, प्रासंगिकता के पहलू इस काव्य में स्पष्ट हुए हैं।

2) इस खंडकाव्य का शीर्षक स्पष्ट, सार्थक, उचित और खंडकाव्य का परिचय देने में सही रहा है।

3) खंडकाव्य के माध्यम से नरेश मेहता ने व्यक्ति, समाज, देश से संबंधित समस्याओं का अंकन किया है। भारतीय सभ्यता ने हमेशा युद्ध का विरोध किया है परंतु देश को लेकर पवित्रता, स्वतंत्रता की रक्षा हेतु समाज में एकता स्थापित हुई है। युद्ध के न चाहने पर भी स्वतंत्रता या अपनी अस्तित्व हेतु हमें युद्ध करना पड़ा है। यही बात सफलतापूर्वक काव्य के माध्यम से स्पष्ट हुई है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) टिप्पणियाँ

1) 'संशय की रात' खंडकाव्य की प्रासंगिकता।

2) ‘संशय की रात’ खंडकाव्य शीर्षक सार्थकता।

2) ‘संशय की रात’ खंडकाव्य का आज का संदर्भ।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1) राम का चरित्र चित्रण कीजिए।

2) ‘संशय की एक रात’ खंडकाव्य की शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

3) ‘संशय की एक रात’ खंडकाव्य में चित्रित समस्याएँ स्पष्ट करें।

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) इस खंडकाव्य का मंचन कीजिए।

2) राम काव्य की केंद्रीय सूची बनाइए।

3) राम काव्य में राम का चित्रण पढ़िए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ की रचना ‘राम की शक्तिपूजा’ पढ़िए ।